चंद्रकांता के उपन्यासों में चित्रित कश्मीर

HIN-675 शोध प्रबंध

श्रेयांक: 16

स्नातकोत्तर कला (हिंदी)

की उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

शोधार्थी

रूपल लाडू पंडित

अनुक्रमांक: 22P0140021

PR Number: 201802560

मार्गदर्शक

श्वेता प्रसाद गोवेकर

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल 2024

परीक्षक: श्वेता गोवेकर

Seal of the School

DECLARATION BY STUDENT

I hereby declare that the data presented in this Dissertation report entitled, "**चंद्रकांता के उपन्यासों में चित्रित कश्मीर**" is based on the results of investigations carried out by me in the Discipline of Hindi at Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University under the Supervision of **Mr./Ms./Dr./Prof. Sweta Prasad Govekar** and the same has not been submitted elsewhere for the award of a degree or diploma by me. Further, I understand that Goa University or its authorities will be not be responsible for the correctness of observations/experimental or other findings given the dissertation. I hereby authorize the University authorities to upload this dissertation on the dissertation repository or anywhere else as the UGC regulations demand and make it available to any one as needed.

Roopal Ladu Pandit

22P0140021

Date: April 2024

Place: Goa University

COMPLETION CERTIFICATE

This is to certify that the dissertation report " **चंद्रकांता के उपन्यासों में चित्रित कश्मीर** " is a bonafide work carried out by Ms/Mr Roopal Ladu Pandit under my supervision in partial fulfilment of the requirements for the award of the degree of Master of Arts in the Discipline of Hindi at the Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University.

Sweta Prasad Govekar

Date: April 2024

School Stamp

Prof. Anuradha Wagle

Dean, SGSLL, Goa

Date: April 2024

Place: Goa University

गोंय विद्यापीठ
ताळगांव पठार,
गोंय – ४०३ २०६
फोन : +९१-८६६९६०९०४८

(Accredited by NAAC)

ATMANIRBHAR BHARAT
SWAYAMPURNA GOA

Goa University
Taleigao Plateau, Goa-403 206
Tel : +91-8669609048
Email : registrar@unigoa.ac.in
Website : www.unigoa.ac.in

Ref. No.: GU/LIB/ATTENDANCE CERT./2024/257 Date: 08/05/2024

TO WHOM SO EVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Miss Roopal Ladu Pandit, a student of Goa University, M.A. (Hindi), visited the Goa University Library for her reference work on the following dates and completed 39 Hours &37 Minutes of research internship as a part of her M.A. dissertation.

The detailed dates and times she visited are attached herewith.

This certificate has been issued at the written request of Assistant Professor Ms. Sweta Govekar.

University Librarian
(Dr. Sandesh B. Dessai)
Dr. Sandesh B. Dessai
UNIVERSITY LIBRARIAN
Goa University
Taleigao - Goa.

GOA UNIVERSITY LIBRARY GOA

कृतज्ञता

गोवा विश्वविद्यालय में एम.ए करते समय द्वितीय वर्ष में अनुसंधान कार्य कर लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत करना है कहने पर 'चंद्रकांता के उपन्यासों में चित्रित कश्मीर' यह विषय चुनकर अनुसंधान कार्य के दौरान जिन्होंने भी मुझे सहयोग किया उनका मैं धन्यवाद करना चाहती हूं।

सबसे पहले मेरी मार्गदर्शिका श्वेता प्रसाद गोवेकर ने हर कदम पर मेरा मार्गदर्शन किया। अनुसंधान कैसे किया जाता है और उसके लिए विषय किस तरह चुनते है। अनुसंधान की मर्यादाओं से संदर्भ कैसे लिखने है यहां तक उनका मार्गदर्शन बहुत अनमोल था।

उसी प्रकार अनुसंधान करने समय आई अनेक समस्याओं की चर्चा कर उन्होंने उन समस्याओं को समझकर मेरा योग्य तरीके से मार्गदर्शन करते हुए उसे सुलझाने का प्रयास किया। वैसे ही अपने पास थी, पुस्तके हमें पढ़ने के लिए देकर, कई ग्रथालयों के नाम बताकर सतत सुचना से मेरा अनुसंधान कार्य पूर्ण होने के लिए उनका मन: पूर्वक आभार।

उसी तरह गोवा विश्वविद्यालय के अन्य सहायक प्राध्यापक और कार्यालयीन कर्मचारी के सहयोग के लिए आभार। वैसे ही गोवा विश्वविद्यालय के और पणजी के कृष्णदास शामा ग्रंथालय के कर्मचारियों ने समय-समय पर मुझे किताबें उपलब्ध कराने के लिए उनका भी आभार। उसी प्रकार अनुसंधान कार्य करते वक्त मेरे परिवार की प्रेरणा, आशीर्वाद और सहयोग मिलने के लिए मेरे माता- पिता, मित्रगण और अन्य सभी की मैं आभारी हूं।

अनुक्रमणिका

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या
	Acknowledgements	II, III, IV
	अनुक्रमणिका	V-VI
	भूमिका	VII-VIII
1	कश्मीर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 1.1 राजनीतिक परिस्थितियाँ 1.2 सामाजिक परिस्थितियाँ 1.3 धार्मिक परिस्थितियाँ 1.4 आर्थिक परिस्थितियाँ 1.5 सांस्कृतिक परिस्थितियाँ	1–33
2	समकालीन हिंदी महिला उपन्यासकारों में चंद्रकांता का स्थान 2.1 समकालीन हिंदी महिला उपन्यासकारों का संक्षिप्त परिचय 2.2 उपन्यासकार चंद्रकांता 2.3 चंद्रकांता और कश्मीर	34–51
3	चंद्रकांता के चयनित उपन्यासों की समीक्षा 3.1 ऐलान गली जिन्दा है 3.2 कथा सतीसर	52–101
4	चंद्रकांता के उपन्यासों में कश्मीर: विश्लेषण 4.1 कश्मीरियों का निष्कासन 4.2 आतंकवाद 4.3 हिंदू-मुसलमानों में दरार 4.4 भ्रष्ट राजनेता 4.5 कश्मीर राज्य की स्थापना 4.6 शिक्षा क्षेत्र पर नकारात्मक प्रभाव	102 – 118

	4.7 एक दूसरे के धर्म के प्रति दूजाभाव 4.8 परिवार का विघटन 4.9 रूढ़ि-परंपराओं और अंधविश्वासों का खंडन 4.10 स्वास्थ्य समस्या 4.11 बच्चों के प्रति माता-पिता की मानसिकता 4.12 अनमेल विवाह 4.13 दहेज प्रथा 4.14 छुआछूत की समस्या 4.15 धर्म के नाम पर हिंसा 4.16 आर्थिक मजबूरी 4.17 बेरोजगारी की समस्या	
5	उपसंहार	119 –121
6	संदर्भ	122–124

भूमिका

कश्मीर के संबंध में कहा जाता है कि पृथ्वी पर कई स्वर्ग है तो वह कश्मीर है। कश्मीर जाने के बड़े- बड़े सपने हम सजोते है। स्वर्ग समान कश्मीर जिस तरह बाहरी रूप से हमें दिखाई देता है क्या उसी तरह आंतरिक रूप से कश्मीर वैसा ही है ? यह प्रश्न बहुत महत्त्वपूर्ण और सोचने लायक है। आज के समय में कश्मीर एक सबसे बड़ा विवादास्पद विषय है। बहुत सारे लोग कश्मीर का इतिहास नहीं जानते हैं या फिर जानते हुए भी अनदेखा कर देते हैं। इसी सच्चाई से अवगत कराने और स्वर्ग समान कश्मीर के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु **'चंद्रकांता के उपन्यासों में चित्रित कश्मीर'** यह विषय चुना।

इस लघु शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय में **'कश्मीर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि'** पर अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। कश्मीर को धरती का स्वर्ग किसने और क्यों कहा, इसका विस्तार से चित्रण किया गया है। तथा कश्मीर के महाराजा हरिसिंह कश्मीर को भारत या पाकिस्तान किसी भी राज्य के साथ विलय नहीं करना चाहते थे, बल्कि कश्मीर को स्वतंत्र रखना चाहते थे। यहीं से कश्मीर की समस्या आरंभ हुई और इसी दौरान और इसके उपरांत कश्मीर की राजनीतिक परिस्थितियों के कारण हुई उथल-पुथल और उसी प्रकार कश्मीर की सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक परिस्थितियों को प्रस्तुत कर पाठकों को इन परिस्थितियों से अवगत कराया है।

द्वितीय अध्याय में **'समकालीन हिंदी महिला उपन्यासकारों में चंद्रकांता'** की विशेषता को प्रस्तुत किया गया है। समकालीन महिला उपन्यासकारों की सूची में ममता कालिया, मैत्रेयी पुष्पा, उषा प्रियंवदा, प्रभा खेतान, कृष्णा सोबती, चित्रा मुद्गल, मन्नू भंडारी, आदि के उपन्यासों के केंद्र में ज्यादातर स्त्री दिखाई देती है। परंतु चंद्रकांता ने अपने उपन्यासों में स्त्री को तो महत्व दिया ही है, साथ ही स्वर्ग कश्मीर के सपने देखने वाले पाठकों को कश्मीर की आंतरिक सच्चाई से अवगत कराना था। तथा चंद्रकांता और उनकी जन्मभूमि कश्मीर के अटूट संबंध को प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय **'चंद्रकांता के चयानित उपन्यासों की समीक्षा'** से संबंधित है। चंद्रकांता का 1984 में लिखित 'ऐलान गली जिन्दा है' और 2001 में लिखित 'कथा सतीसर' उपन्यासों की समीक्षा की गई है जो कश्मीर पर आधारित है। 'ऐलान गली जिन्दा है' उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने स्वर्ग कश्मीर में व्याप्त दरिद्रता, अज्ञान,अभाव पारस्परिक संघर्ष, आतंकवाद को चित्रित किया है। तथा 'कथा सतीसर' उपन्यास में कश्मीर से निष्कासित हिंदू पंडितों के दर्द को तथा राजनीति के कारण लोगों के जीवन में हो रहे उथल- पुथल को प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय **'चंद्रकांता के उपन्यासों में कश्मीर'** विश्लेषण के अंतर्गत स्वर्ग कश्मीर में व्याप्त अनेक समस्याओं का सूक्ष्मता से चित्रण किया है।

'उपसंहार' के अंतर्गत लेखकीय सफलता का अंकन और उनके कश्मीर पर आधारित दो चयनित उपन्यासों की विशेषताओं को दृष्टि में रखकर निष्कर्ष की प्रस्तुति की गई है।

इस प्रकार इस संपूर्ण लघु शोध प्रबंध को तैयार करने में मैंने अपनी क्षमताओं का बेहतर प्रयोग कर लेखन कार्य संपन्न किया।

प्रथम अध्याय

कश्मीर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

कश्मीर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

कश्मीर की घाटी का सौन्दर्य देख मोहित होकर, मुगल शासक अकबर के बड़े बेटे जहाँगीर जिसका असली नाम शेख सलीम चिश्ती था जो 1605-1627 तक भारत का सम्राट रहे जहांगीर को मुगल शासनकाल के दौरान सबसे शक्तिशाली सम्राट कहा जाता है। उसके ही मुँह से निकला था -'धरती पर स्वर्ग यदि कहीं है,तो यहीं है,यहीं है, यहीं है।'1

कश्मीर अपने प्राकृतिक सौन्दर्य जैसे बर्फीली पहाड़ियां, शांत वातावरण और खूबसूरत नजारों के कारण स्वर्ग कहलाता है। जिस स्वर्ग में कई महानतम दार्शनिक आचार्यों - अभिनवगुप्त, भामह, कुतंक आदि का जन्म हुआ वहाँ सभी एक बार जाने के सपने सजोते है। लेकिन उसी स्वर्ग की भयानक कहानी कोई नहीं सुनना चाहता। इसी स्वर्ग को पाकिस्तान अपना अभिन्न हिस्सा कहता है तो भारत अपना अभिन्न हिस्सा। इसी अभिन्न हिस्से के नारे में गंभीर विषय दब जाता है। आज भी भारत-पाकिस्तान में कश्मीर को लेकर विवाद है।

कश्मीर समस्या का एक कारण भूगोल है तो दूसरा इतिहास - मुस्लिम बहुसंख्या और भारत और पाकिस्तान दोनों से मिलती सीमाएँ। कश्मीर को भारत के साथ या पाकिस्तान के साथ विलय करना है यह फ़ैसला पूरी तरह कश्मीर के महाराजा हरि सिंह को ही लेना था। महाराजा ने अपनी हुकूमत बनाए रखने के लिए भारत और पाकिस्तान दोनों से सौदेबाजी की कोशिश की और इसी दुचित्तेपन व्यवहार के कारण कश्मीर में 'समस्या के वर्तमान रूप की शुरुआत हुई।'

कश्मीर के उद्भव का कश्मीरी इतिहासकार तथा विश्वविख्यात संस्कृत ग्रंथ जिसे कश्मीर की ऐतिहासिकता के संदर्भ में विशेष स्थान 'राजतरंगिणी' के रचनाकार कल्हण

एक मज़ेदार किस्सा सुनाते हैं। कल्प के आरंभ में घाटी सौ फीट गहरी सतीसर झील थी। इस झील में जल्लोदभव नाम के एक राक्षस ने झील के रक्षक नागों को आतंकित

किया हुआ था। हिमालय की तीर्थयात्रा पर आए नागकुल के गुरु कश्यप मुनि को जल्लोदभव के अत्याचारों के बारे में पता चला तो उन्होंने ब्रह्म से इसकी शिकायत की। परंतु जल्लोदभव को वरदान प्राप्त था कि जब तक वह जल में रहेगा उसे कोई मार नही सकेगा। ब्रह्मांड के संरक्षक और रक्षक 'विष्णु' ने अपने भाई बलभद्र को बुलाकर उसके हल से झील के चारों तरफ़ स्थित जम्मू और कश्मीर राज्य के 22 ज़िलों में से एक, जिसे 8 तहसीलों और 16 खण्डों में बांटा गया 'बारामूला' की पहाड़ियों में एक गोल छेद बना दिया,जिसके कारण झील का सारा पानी बह गया। इसके बाद विष्णु ने अपने चक्र से जल्लोदभव की गर्दन काट दी और इस तरह कश्यप मुनि इस सुखी घाटी में बस गए। कश्मीर का नाम पहले कश्यपमार,कश्मार और अंततः कश्मीर इन्हीं कश्यप ऋषि के नाम पर पड़ा। आगे यह कथा है कि देवताओं ने घाटी के सौन्दर्य को देखकर स्वर्ग लौटने से मना किया और वे कश्मीर की पहाड़ों में बस गए तथा देवियों ने नदियों का रूप धारण कर लिया।

जम्मू और कश्मीर में तीन सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र शामिल हैं- जम्मू, कश्मीर और लद्दाख। जम्मू क्षेत्र तलहटी और मैदानी इलाकों का मिश्रण है। यह मुख्य रूप से हिंदुओं द्वारा बसा हुआ है। इस क्षेत्र में मुस्लिम, सिख और अन्य संप्रदायों के लोग भी रहते हैं। कश्मीर क्षेत्र में मुख्य रूप से कश्मीर घाटी शामिल है। इसके अधिकांश निवासी कश्मीरी मुस्लिम हैं, शेष आबादी में हिंदू, सिख, बौद्ध और अन्य शामिल हैं। लद्दाख क्षेत्र में पर्वतीय भूभाग का प्रभुत्व है। जनसंख्या बहुत छोटी है और बौद्धों और मुसलमानों के बीच लगभग समान रूप से विभाजित है।

❖ राजनीतिक परिस्थितियां

1947 से पहले, जम्मू और कश्मीर एक रियासत थी। इसके शासक महाराजा हरि सिंह भारत या पाकिस्तान किसी भी राज्य के साथ विलय नहीं करना चाहते थे बल्कि अपने राज्य को स्वतंत्र रखना चाहते थे।

क्लीमेंट एटली के ब्रिटेन का प्रधानमंत्री बनने और भारत में कैबिनेट मिशन की गतिविधि के कारण यह स्पष्ट था कि भारत की आजादी और बटवारा दोनों होंगे। अब रजवाड़ों के सामने दो विकल्प थे एक - भारत या पाकिस्तान में विलय और दुसरा - स्वतंत्र अस्तित्व। एक हिंदू राजा होने की वजह से हरि सिंह के लिए पाकिस्तान कभी बहुत स्वाभाविक विकल्प हो नहीं सकता था और भारत के साथ जुड़ना मतलब कांग्रेस के करीबी सहयोगी और अपने विरोधी शेख अब्दुल्ला और नेशनल कॉन्फ्रेंस को तवज्जो देना।

कश्मीर छोड़ो आंदोलन के दमन और शेख अब्दुल्ला के साथ नेशनल कॉन्फ्रेंस के कई प्रमुख नेताओं की गिरफ्तारी होने पर राजा हरि सिंह को लगा कि वह मनचाहा निर्णय ले सकते हैं। हरि सिंह के स्वतंत्र जम्मू और कश्मीर के राजा बनने के दिवास्वप्न का एक और आधार था - राजगुरु संतदेव की भविष्यवाणी। पूरे देश में राजनीति नए आकार ले रही थी लेकिन इस भविष्यवाणी के सहारे हरि सिंह निश्चित थे।इस बात का पता चलता है जब 18 जून 1947 को आजाद भारत के पहले और आखिरी गवर्नर जनरल और ब्रिटिश सेना में बड़े पद पर तैनात लुइस माउंटबेटन श्रीनगर गए तो वह उन्हें अकेले में बातचीत करने हरि सिंह नहीं मिले।

हाउस ऑफ कॉमंस में जुलाई -47 में बोलते हुए ब्रिटिश प्रधानमंत्री क्लीमेंट एटली ने, हाउस ऑफ लॉर्ड्स में बोलते हुए भारत के लिए सेक्रेट्ररी ऑफ स्टेट्स लॉर्ड लिस्टोवेल और भारत में 25 जुलाई 1947 को रजवाड़ों की प्रतिनिधियों की बैठक चैम्बर ऑफ प्रिंसेज में बोलते हुए लॉर्ड माउंटबेटन ने कहा था कि कश्मीर को भारत या पाकिस्तान दोनों देशों में से एक को चुनना होगा। कश्मीर की सीमाएं दोनों देशों से मिलती थी। मुस्लिम बाहुल्य प्रदेश होने के कारण पाकिस्तान के साथ विलय करना उन परिस्थितियों में सामान्य सी बात थी। इसलिए हिन्दुस्तान - पाकिस्तान का बंटवारा इसी आधार पर हुआ था।

14 व 15 अगस्त 1947 को भारत व पाकिस्तान आजाद हो गए थे। उस समय जम्मू और कश्मीर का महाराजा एक बहादुर शासक था। लेकिन उस समय घटित घटनाक्रम के अनुसार महाराजा को दोनों देशों (भारत व पाक) में से कोई एक देश चुनना था। महाराजा को कश्मीर के भविष्य के साथ-साथ वहाँ के लोगों की भावनाओं का भी ध्यान रखना था। लेकिन एक स्वतंत्र राष्ट्र बनने के रास्ते के लिए महाराजा ने बहुत देर कर दी थी। पाकिस्तान का दृष्टिकोण व सोच यह थी कि एक मुस्लिम बहुल राज्य होने के कारण कश्मीर पाकिस्तान के साथ शामिल होना चाहिए। जबकि भारत का मानना था कि अन्य रजवाडो अथवा अन्य देशी रियासतों की तरह महाराजा जो भी फैसला लेगें वहीं मान्य होगा। लेकिन यदि पाकिस्तान की धर्मान्ता वाली बात को माना जाए तो जम्मू व कश्मीर में हिन्दू व बौद्ध धर्म भी दो बराबर हिस्सो में फैला हुआ था। तो यह सबसे बड़ी समस्या है की आखिर कश्मीर है किसका ? भारत या पाकिस्तान का ?

322 ईसा पूर्व में चंद्रगुप्त मौर्य ने मौर्य साम्राज्य की स्थापना की तथा 137 वर्ष भारत में राज्य किया। इसी मौर्य वंश के प्रसिद्ध सम्राट अशोक (273 से 232 ईसा पूर्व) के कश्मीर पर अधिकार से कश्मीर का प्रामाणिक इतिहास आरंभ होता है। लेकिन अशोक की मृत्यु के बाद मौर्य वंश बिखर गया। उसके उपरांत उनका एक पुत्र जालुक कश्मीर का स्वतंत्र राजा बन गया। बौद्ध धर्म में आस्था रखने वाले अशोक के विपरीत जालुक की आस्था शैव धर्म में थी।

कश्मीर में राज्याश्रित बौद्ध धर्म की वापसी मध्य एशिया में निवास करनेवाली यू-ची जाति की शाखा और मौर्य काल में भारत आनेवाली विदेशी जातियों में सबसे प्रमुख जिन्होंने भारत के एक बड़े भाग पर लंबे समय तक शासन किया कुषाण वंश के शासक कनिष्क के शासनकाल में हुई। हुणों से पराजित होकर चीन की सीमाओं पर स्थित यह घुमंतू जाति ईसा पूर्व पंद्रहवीं शताब्दी में काबुल की घाटी में बस गई थी। कुषाण इसी कबीले से एक थे जिन्होंने बाद में अफगानिस्तान से उत्तर भारत के

बड़े भूभाग पर कब्ज़ा कर लिया था। राबाटक शिलालेख के अनुसार कनिष्क इस वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक था।

उत्पल वंश कश्मीर का राजवंश था, जिसने 855ई. से 939 ई. तक राज किया। इस वंश की स्थापना 883 ईस्वी में अवन्तिवर्मन ने की तथा इसके जाने के बाद उत्पल वंश में कठिनाइयां आनी शुरू हो गई। दरबार के बीच के संघर्ष में अवन्तिवर्मन के पुत्र शंकरवर्मन को राजा तथा उनके सौतेले भाई सुरवर्मन के पुत्र सुकवर्मन को युवराज घोषित किया। लगातार दोनों के बीच अनबन होती रहती। शंकरवर्मन अपने पिता के विपरीत व्यवहार करता। इसके इन व्यवहार से राज्य की सुख - शांति नष्ट हो गई थी। शंकरवर्मन की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी रानी सुगंधा की देखरेख में उसका अल्पवयस्क पुत्र गोपालवर्मन गद्दी पर बैठा। परंतु उनका शासनकाल केवल दो साल का रहा। गोपालवर्मन के उपरांत गलियों से उठाकर संकटा नामक एक बालक को राजा बनाया गया जो संभवतः सुगंधा और उसके प्रेमी प्रभाकर देव की संतान थी। उसके बाद सुगंधा खुद गद्दी पर बैठी। सौ साल भर के अंदर ही तान्त्रिन कबीले ने उसे गद्दी से हटा कर सुरवर्मन के प्रपौत्र पार्थ को गद्दी पर बिठाया। पंद्रह साल तक कश्मीर उनके अत्याचारों से त्रस्त थी।

921 ईस्वी में पार्थ के अलोकप्रिय हो जाने के कारण उसके पिता निर्जितवर्मन को राजा बनाया गया ताकि लूट - खसोट बदस्तूर जारी रहे। निर्जितवर्मन की मृत्यु के बाद बपत्ता देवी का अल्पवयस्क पुत्र चक्रवर्मन राजा बना फिर मृगावती का पुत्र सुरवर्मन एक साल गद्दी पर बैठा। राजनर्तकी शम्बादेवी की सहायता से पार्थ दुबारा राजा बन गया। तान्त्रिकों को रिश्वत देकर चक्रवर्मन फिर राजा बन बैठा। लेकिन 936 ईस्वी में चक्रवर्मन गैर कश्मीरी डामर राजा संग्राम की मदद से अपने सगे भाई शम्भूवर्मन जिसने इसे धोखा देकर राज्य पर कब्जा किया था और तान्त्रिनों को अपदस्थ कर तीसरी बार राजा बन गया। इस तरह कश्मीरी जनता तान्त्रिनों की जगह डामरों का अत्याचार झेलने पर मजबूर हो गई।

चक्रवर्मन की मृत्यु के बाद सत्ता पार्थ के दुराचारी और मूर्ख पुत्र उन्मत्तवन्ति की हो गई जिसे कश्मीर के इतिहास में पागल राजा के रूप में जाना जाता है। जब वह तपेदिक से मरनेवाला था तो उसके सेनापति कमलवर्धन ने रास्ते से किसी लड़के को राजा बना दिया जो संभवतः राजा की किसी प्रेमी की संतान था। कुछ दिनों बाद कमलवर्धन ने बाकी सभी प्रतिद्वन्द्वियों को युद्ध में हरा दिया और बेखटके राजमहल के गद्दी पर बैठ गया।खुद के शासन को वैधता दिलाने के लिया ब्राह्मणों को बुलाकर योग्य व्यक्ति को राजा बनाने की विनती की। ब्राह्मणों की सभा ने एक ब्राह्मण यशस्कर जो बाहर से शिक्षा प्राप्त कर कश्मीर आया था उसे राजा बनाया गया। इस तरह कश्मीर में पहली बार ब्राह्मण वंश सत्ता में आया।

यशस्कर ने अपने नौ साल के शासनकाल में ब्राह्मणों को राज्य में हस्तक्षेप करने से रोका, व्यवस्था और न्याय व्यवस्था सुधारने का प्रयास किया। परंतु कश्मीर के राजभवन में फैले कूटनीतियों से मुक्त नहीं रह सका। मृत्युशैया पर होने के कारण उन्होंने रानी के पुत्र संग्रामदेव को अवैध संतान मानते हुए भतीजे वर्णत को युवराज घोषित किया। वर्णत का अपने प्रति व्यवहार देख उसे बंधी बनाकर संग्रामदेव को राज्य सौप कर मठ चले गए। एक साल बाद संग्रामदेव को हटाकर यशस्कर का मंत्री पर्वगुप्त ने लगभग डेढ़ साल राज्य किया जो केवल चारित्रिक पतन और लूट के लिए ही जाना जाता है।

यशस्कर के पुत्र क्षेमेन्द्र गुप्त का राज्यकाल पतन का काल था। उसके मंत्री उसे अपने घर आमंत्रित कर अपनी पत्नियां प्रस्तुत करते। क्षेमेन्द्र की पत्नी दिद्या के शासनकाल से कश्मीर में स्थिरता आई। उन्होंने कई मंदिरों और मठों का निर्माण किया। दिद्या ने अपने सभी उत्तराधिकारियों की हत्या कर अपने भाई उदयराज के पुत्र संग्रामराजा को उत्तराधिकारी घोषित कर दिया और 1003 ईस्वी में दिद्या की मृत्यु के साथ लोहार वंश का शासन आरंभ हुआ।

संग्राम राजा के राज्यकाल में महमूद ग़ज़नवी जो मध्य अफ़ग़ानिस्तान में केन्द्रित गज़नवी वंश का एक महत्वपूर्ण शासक था और पूर्वी ईरान भूमि में साम्राज्य विस्तार के लिए जाना जाता है। उसने 1015 और 1021 में कश्मीर पर आक्रमण करने की कोशिश की जो असफल रही। 1028 में संग्राम की मृत्यु के बाद राजा बने हरिराजा को उसकी मां श्रीलेखा ने दीद्या की प्रेरणा से बारहवें दिन मार डाला । उसके बाद दरबारियों ने संग्राम के छोटे बेटे अनन्त को ताज सौप देने पर वह महमूद गजनवी के डर से पंजाब छोड़कर कश्मीर में बसे शाही राजाओं का उसने सहारा लिया।

उसके बाद हर्ष हरियाणा के थानेशवर के पुष्यभूति वंश का शासक और कन्नौज को अपनी राजधानी बनानेवाले हर्ष सत्ता में आए जिसे मंदिरों को तोड़ने और लूटने के लिए जाना जाता है। उस समय तुर्क कश्मीर में आ चुके थे और हर्ष ने उनकी संस्कृति से बहुत कुछ अपनाया और उनकी सैन्य रणनीतियों को भी अपने दरबार में शामिल किया तथा गुलाम तुर्की स्त्रियों को अपने हरम में लिया। अलोकप्रिय होने के बाद जनविद्रोह में हर्ष मारा गया और 1102 में सत्ता में आए उक्कल को अपने गुस्से की वजह से पागल राजा सम्बोधित किया गया।

दुलचा (ज़ुल्जू) नामक मंगोल (मध्य एशिया और पूर्वी एशिया में रहनेवाली जाति) लुटेरे ने बारामूला की ओर से सत्रह हजार घुड़सवारों और पैदल सेना के साथ आक्रमण किया तो डामर वंश के राजा सहदेव ने उन्हें पहले तो रिश्वत देने की कोशिश की और जनता का सहयोग न मिलने पर किश्तवार चला गया। मंगोलों ने खेत जला दिए, घर लूटे, जवान पुरुष और बच्चे या तो मार दिए गए या गुलाम बना दिए गए और महिलाओं को अपना शिकार बना दिया गया।

कश्मीर में लार एक ही जगह सुरक्षित बची थी लेकिन उसे भी दुलचा लूटकर वापस जा रहा था तो सैनिकों, कैदियों और लूट के सामान के साथ बर्फ में दफन हो गया। इस पूरी विपत्ति में रिंचन (बौद्ध) और शाहमीर मददगार बनकर आए। अंत में रिंचन

ने रामचंद्र के पुत्र रावनचंद्र को रैना की उपाधि देकर परगना और लद्दाख की जागीर दी और अपना मित्र बना लिया।

कश्मीर का प्रधानमंत्री बनने से पहले 361 साल कश्मीर पर पहले मुग़ल फिर अफ़गान, सिख और अंततः डोगरा का राज था। मुग़ल शासकों की कश्मीर के किसानों और कश्मीर के संसाधनों के शोषण में अधिक रुचि थी। मुगल साम्राज्य के संस्थापक और प्रथम शासक जहीरूद्दीन मुहम्मद उर्फ बाबर ने दिल्ली पर कब्जे के तुरंत बाद 1527 में कश्मीर पर कब्जा करने की असफल कोशिश की। मुगल वंश के तीसरे शासक अकबर के लिए कश्मीर पर अपना नियंत्रण होना दो वजहों से जरूरी था। पहला यह है- अकबर मुगल साम्राज्य का विस्तार दक्षिण में करना चाहता था और दूसरा कश्मीर का सुहाना मौसम। व्यापार और कृषि लगान की दृष्टि से कश्मीर एक उपयोगी क्षेत्र था। एक श्राप की तरह उपयोग करनेवाला प्रचलित कश्मीरी मुहावरा है - अछ वचे गशि रूसे -इसका अर्थ है आंखें खुली रहें तुम्हारी लेकिन रौशनी न हो। अन्य शासन कश्मीरी जनता के लिए ऐसे ही रहा।

कश्मीर में जहांगीर के शासन के अंतिम दौर में सूबेदार इत्तिकाद खान था। जिसने फलों के बगीचे, खेत जब्त कर लिए थे तथा अकबर द्वारा बंद कराई केसर चुनने की व्यवस्था फिर से शुरू कर दी। इसकी सूचना मुग़ल वंश का छठे सम्राट और अकबर के बाद सबसे अधिक समय तक शासन करने वाला मुग़ल शासक शाहजहां को मिलते ही इन सब पर रोक लगाई और कश्मीर का पहले सूबेदार रहे और लोगों के लोकप्रिय ज़फ़र खान को कश्मीर का सूबेदार बनाया। शाहजहां के काल में 1635 में शिया - सुन्नी दंगा हुआ - श्रीनगर के मायसुमा बाग में शियाओं में से कुछ ने खलीफाओं के बारे में बुरा - भला कहा जिससे सुन्नी भड़क गए और इसके लिए कड़ी सजा की मांग की लेकिन ज़फ़र खान ने ऐसा न करने पर नक्शबंदी सिलसिले के प्रमुख ख्वाजा खावाद महमूद के नेतृत्व में सुन्नी मुसलमानों ने शियाओं के घर जला दिए। स्थिति नियंत्रण में करने के लिए ख्वाजा को कश्मीर से बाहर निकाल दिया।

अंत में दिल्ली के सत्ता संघर्ष में विजय प्राप्त करने के बाद अपने शत्रु पक्ष का समझकर औरंगज़ेब ने शाहजहां को कश्मीर से बहिष्कृत कर दिया।

काश्मीर में डोंगरा साम्राज्य की स्थापना हुई, उसी समय भारत में अंग्रेजों ने अपना राज्य स्थापित किया। कश्मीर प्रदेश में भी अंग्रेजों का आना जाना लगा रहता था। अधिकतर पर्यटक के रूप में अंग्रेज कश्मीर में आया करते। उस समय का दर्शन यात्रा- वृत्तात में देखने मिलता जिसे अंग्रेजों पर्यटकों ने लिखा है। लाहौर साम्राज्य खतम करने में और सिखों को वहां से कम करने में गुलाबसिंह ने अंग्रेजों की काफ़ी सहायता की। 1856 में अंग्रेजो ने दिल्ली पर कब्जा किया, तभी गुलाबसिंह ने अपनी फौज उनके सहायता के लिए भेजे। प्रथम महायुद्ध में ही अंग्रेजों की सहायता के लिए डोगरा राजवंश के संस्थापक और जम्मू-कश्मीर रियासत के पहले महाराजा गुलाबसिंह ने 31 हजार मदद के तौर पर भेजे। इसी सहायता के कारण अंग्रेजो ने गुलाबसिंह को अपने मन की करने की छूट दियी थी उसी वजह से डोगरा साम्राज्य में जनता पर बहुत अत्याचार हुए।

भौगोलिक दृष्टि से कश्मीर के दो प्रमुख सम्पर्क मार्ग थे। लाहौर और सियालकोट का पाकिस्तान में विलय होना तय था। जनसंख्या की दृष्टि से गुरुदासपुर पर भी पाकिस्तान का हक बन सकता था। इस बात को भारत के प्रधानमंत्री नेहरू भली - भाती समझते थे- अंततः रावी नदी के सहारे गुरुदासपुर को दो हिस्सों में इस तरह बॉटा गया कि कश्मीर से संपर्क का मार्ग भारत में रहे। नेहरू कश्मीर को भारत में शामिल कराने के लिए बहुत उत्साही थे। क्योंकि कश्मीर में उनके पुरखों की जमीन थी और उससे उनका गहरा लगाव तो था ही तथा एक मुस्लिम बहुल प्रदेश का भारत में शान्ति और एकसाथ बराबरी से रहना सेक्युलरिज्म की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण था।

15 अगस्त 1947 के बाद भी कबायली (फिरकों में रहने वाले लोग) हमले के पहले तक हरि सिंह पर भारत में शामिल होने के लिए कोई दबाव नहीं डाला गया जबकि

नेहरू ने बार - बार चेताया था। भारतीय पत्रकार, लेखक और राजनेता एम.जे.अकबर ने स्वतंत्र भारतीय संघ के पहले गवर्नर जनरल और भारत के आखिरी वायसरॉय माउंटबेटन के हवाले से 'सड़े सेबों' का एक किस्सा सुनाया था। जिसमें वह माउंटबेटन से कहते है कि मुझे सभी 565 (उस समय भारत में रजवाड़ों की संख्या) सेब चाहिए लेकिन माउंटबेटन ने उन्हें कहा कि अगर मैं कुछ वापस लेना चाहूं तो - इसपर वे कहते है कि हम 560 से भी काम चला लेंगे। कश्मीर इन्हीं 5 सेबो में से था और शायद इसी कारण 1947 के बाद नेहरू ने बार - बार ध्यान दिलाए जाने पर कि पाकिस्तान कश्मीर पर कब्जा कर सकता है पटेल ने कोई निर्णय नहीं लिया। यहाँ तक कि महाराजा ने कबायली हमले के बाद विलय पत्र का प्रस्ताव भेजा तो भी पटेल का कहना यह था कि - 'हमे कश्मीर के मामले में नहीं उलझना चाहिए। पहले ही हमारे पास काफी राज्य है।' इन सबके बावजूद भी आज कश्मीर की समस्या को लेकर नेहरू को बार - बार कठघरे में खड़ा किया जाता है और कहा जाता है कि यदि पटेल की चलती तो कश्मीर में कोई समस्या नहीं होती। पटेल हैदाराबाद और जूनागढ़ को भारत में शामिल करना चाहते थे और इसके बदले में कश्मीर को पाकिस्तान को देना चाहते थे।

कश्मीरी राजनेता शेख अब्दुल्ला की रिहाई में हो रही देरी और कश्मीर की अनिश्चितता को देखकर जवाहरलाल नेहरू खुद कश्मीर जाना चाहते थे लेकिन हालात की नाजुकता को देखकर माउंटबेटन ने और कोई तनाव न हो इसलिए नेहरू को कश्मीर न जाने की सलाह दी। नेहरू के पश्चात गांधी 1 अगस्त 1947 को पहली और आखिरी बार कश्मीर दौरे पर गए। वहां गांधी और महाराजा की ठीक से बातचीत क्या हुई इसकी खबर किसी को भी नहीं है लेकिन उन्होंने राजा से जनता की इच्छा का सम्मान करने और शेख अब्दुल्ला को रिहा करने की मांग की। उन्होंने प्रेस से भी कहा कि कश्मीर का मुद्दा भारत, पाकिस्तान, महाराजा और कश्मीर को मिलकर सुलझाना चाहिए। गांधी की इस यात्रा को उन्होंने खुद अराजनीतिक बताया लेकिन उस माहौल में इसके कोई राजनीतिक प्रभाव न हो ऐसा संभव नहीं था। इस प्रभाव के कारण

जनता के बीच बहुत बदनाम रामचंद्र काक को प्रधानमंत्री पद से हटा दिया गया और इसके बाद सबसे पहले जनक सिंह को और फिर मेहरचंद महाजन को प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया। इस समय भारत के साथ संपर्क बेहतर बनाने के लिए सड़क, टेलीग्राम तथा रेल मार्गो को बेहतरीन बनाने के लिए काम किया गया।

इन सबके पश्चात निर्णय के नाम पर लगातार अनिर्णय की स्थिति के शिकार बने हरि सिंह ने 3 जून प्लान के तहत विलय के लिए निश्चित की गई तारीख से दो दिन पहले तत्कालीन प्रधानमंत्री जनक सिंह के माध्यम से 13 अगस्त 1947 को भारत - पाकिस्तान को तार से स्टैंडस्टिल समझौते का प्रस्ताव भेजा। पाकिस्तान ने 15 अगस्त 1947 को यह प्रस्ताव स्वीकार किया जिससे लाहौर सर्किल के तहत आनेवाले राज्य के सभी केंद्रीय विभाग पाकिस्तान में शामिल होते है। भारत सरकार ने घोषित नीति के चलते यह समझौता करने से पहले संधि की बात की जिस पर राजा ने कोई प्रतिक्रिया न दिखाने के कारण यह समझौता नहीं हुआ। भारत ने सिर्फ हैदराबाद से स्टैंडस्टील समझौता किया था। लंदन के आर्काइव में उपलब्ध दस्तावेजों के आधार पर नूरानी ने यह स्पष्ट किया कि दोनों देशों को भेजे स्टैंडस्टिल समझौते के मसौदे अलग - अलग थे। पाकिस्तान को संचार व्यवस्था, आपूर्ति, डाक एवं टेलीग्राफ के क्षेत्र में तथा भारत को विदेशी मामलों, सेनाओं के नियंत्रण और सुरक्षा मामलों के क्षेत्र में यथास्थिति बरकरार रखने का प्रस्ताव किया। भारत सरकार इस पर बात करने के लिए कोई जिम्मेदार मंत्री को भेजने से पहले ही कबायली हमला हो गया।

जम्मू और कश्मीर राज्य का जिला पूंछ जागीर गुलाब सिंह के भाई ध्यान सिंह के पास थी और उनकी मृत्यु के पश्चात उनके वंशजों के पास। जून 1947 में पूंछ की जनता ने उत्पीड़न के खिलाफ़ सरदार मोहम्मद इब्राहिम खान के नेतृत्व में विद्रोह किया और कोई टैक्स न देने का नारा दिया। 14 अगस्त कश्मीर दिवस के दिन वहां

पाकिस्तान दिवस मनाया गया और पाकिस्तान के झंडे फहराए गए और मार्शल लॉ लगा दिया गया।

मेहरचंद महाजन के आने से हरि सिंह का झुकाव भारत की ओर दिखाई देता है। महाजन के कहने पर शेख अब्दुल्ला ने 26 सितम्बर को वफादारी का अहद करते हुए खत लिखा और उसके तुरंत बाद उन्हें रिहा कर दिया गया। 2 अक्टूबर 1947 को हुजूरी बाग में एक जनसभा में नारा दिया 'विलय से पहले आजादी' और इसी भाषण से नेहरू के साथ दोस्ती, कांग्रेस के सहयोग और गांधी के प्रति सम्मान का जिक्र किया। ऑल इंडिया स्टेट पीपुल्स कॉन्फ्रेस के सचिव द्वारकानाथ काचरू ने शेख अब्दुल्ला के कश्मीर के भारत से विलय की सूचना नेहरू को रिपोर्ट के माध्यम से बताया।

महाजन बताते हैं कि उसी समय पाकिस्तान सरकार के विदेश मंत्रालय के संयुक्त सचिव मेजर ए.एस.बी शाह श्रीनगर आए और पाकिस्तान के साथ विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए महाराजा पर दबाव डाला। पाकिस्तान की नाकाबंदी के कारण 1 अक्टूबर को हरि सिंह ने भारत से कश्मीर में हथियार तथा आवश्यक सामान भेजने की अपील की। भारत ने आवश्यक सामान तो भेजा लेकिन सैन्य सामग्री नहीं भेजी जा सकी।

कबायली हमले में पाकिस्तानी अधिकारियों के शामिल होने के सबूत उपलब्ध है। 1 नवम्बर को गिलगिट स्काउट ने घंसारा सिंह को गिरफ्तार किया और 3 नवम्बर को गिलगिट स्काउट के कमांडर मेजर ब्राउन और उनके सहायक कैप्टन मैथेसन ने गिलगिट क्षेत्र पाकिस्तान को देने का फैसला किया। अगले ही दिन पाकिस्तान का झंडा फहराया गया और दो हफ्ते बाद पाकिस्तान सरकार का पॉलिटिकल एजेंट वहां गया। इस तरह गिलगिट पाकिस्तान का हिस्सा बना।

बारामूला हमले में ब्रिगेडियर राजिंदर सिंह गोली लगने के बावजूद लगातार ग्यारह घंटे तक दुश्मन से लड़े और इसलिए उन्हें उनकी वीरता के लिए भारत सरकार ने

मरणोपरांत महावीर चक्र से सम्मानित किया। जूनागढ़ जो पाकिस्तान अधिकार में था, वी.पी मेनन ने 21 अगस्त को पाकिस्तान के उच्चायुक्त को पत्र भेजा कि जूनागढ़ भौगोलिक रूप से पाकिस्तान से नहीं जुड़ा है और वहां हिंदू की बहुसंख्या है, इसलिए वहां जनमत संग्रह कराया जाए। 30 सितंबर को लियाकत अली के साथ हुई नेहरू की बैठक मे नेहरू ने घोषणा की कि जिन राज्यों में विलय को लेकर विवाद है आम चुनाव जैसे माध्यमों से विलय के फैसले करेगा। जूनागढ़ के नवाब ने मांगरोल पर कब्ज़ा किया तो भारत ने उन्हें हटाने के लिए कहा क्योंकि मांगरोल ने भारत के साथ विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं। आखिरकार जनमतसंग्रह के आधार पर जूनागढ़ भारत का हिस्सा बन गया। लेकिन आज भी पाकिस्तान अपने नक्शे में जूनागढ़ को अपना हिस्सा बताता है।

शेख अब्दुल्ला का तर्क था कि कश्मीर का प्रधानमंत्री होने के कारण नियंत्रण उनका होना चाहिए। भारतीय सेना को सेना नियंत्रण सौपा गया। ऐसा भासित होता है कि हरि सिंह अपने पक्ष के लिए उप प्रधानमंत्री पटेल पर भरोसा कर रहे थे। उन्होंने पटेल को लिखे एक पत्र में कहा था - **'हिन्दू त्योहारों और जन्मदिन पर 21 तोपों की सलामी देने की परंपरा रही है। इसलिए उनके जन्मदिन 27 सितम्बर को सलामी की व्यवस्था के लिए शीघ्रता शीघ्र आदेश जारी किए जाए।'2** लेकिन उस परिस्थिति में पटेल उनकी सहायता न कर सके।

26 अक्टूबर 1947 को हस्ताक्षरित किए विलय पत्र में स्पष्ट उल्लेख था कि 'विलय का अंतिम निर्णय कश्मीरी जनता के प्रत्यक्ष जनमत से होगा।' जम्मू और कश्मीर राज्य ने विलय पत्र के अनुसार रक्षा, संचार और विदेशी मामलों में ही भारतीय अधिराज्य विलय किया था और अन्य मामलों के लिए हरि सिंह ने स्पष्ट किया था -

' इस विलय पत्र में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे भारत के किसी भावी संविधान के स्वीकार के लिए मेरी वचनबद्धता माना जाए या जो भारत सरकार के साथ ऐसे

किसी भावी संविधान के साथ अपने सम्बन्ध हेतु समझौते करने के मेरे अधिकार को बाधित करे।'3

भारत सरकार ने इसकी स्वीकृति 1948 में जम्मू और कश्मीर पर जारी श्वेत पत्र में दी गई -

'विलय को स्वीकार करते हुए भारत सरकार ने यह स्पष्ट कर दिया था कि वह इसे तब तक पूरी तरह से अस्थाई मानेगी जब तक राज्य के लोगों की इच्छा सुनिश्चित न कर ली जाए।'4

जम्मू और कश्मीर राज्य के लिए भारत की संविधान सभा में चार सीटें रखी थी। तीन महीनों तक राज्य सभा के नेता और भारत सरकार में मंत्री गोपालस्वामी आयंगर, पटेल, शेख अब्दुल्ला और उनके साथियों के बीच कश्मीर के भारत से संबंधों को लेकर धारा 370 (मसौदे में धारा 306 ए) को लेकर तीखे बहस - मुबाहिसे चले। आयंगर ने शेख को बिना बताए 16 अक्टूबर को सहमति बने एक मसौदे की उपधारा 1 के दूसरे बिंदु में बदलाव किया और यह संविधान सभा में पास कर दिया। धारा 370 के 6 प्रमुख बिंदु है :-

1. इस धारा के अनुसार जम्मू और कश्मीर को अपना अलग संविधान बनाने की मंजूरी दी गई।

2. भारतीय संसद के राज्य के सम्बन्ध में वैधानिक अधिकार तीन विषयों तक ही सीमित होंगे- रक्षा, विदेशी मामले और संचार ।

3. उल्लिखित तीन विषयों के अलावा दूसरे मामलों में संवैधानिक परिवर्तनों के लिए उसे राज्य सरकार की सहमति लेना अनिवार्य है।

4. यह सहमति पूरी तरह से 'अस्थाई' होगी और उसे राज्य की संविधान सभा से पुष्ट करना पड़ेगा।

5. सहमति देने का राज्य सरकार का अधिकार केवल तभी तक होगा जब तक राज्य की संविधान सभा की बैठक नहीं बुलाई जाती। न तो संविधान सभा की बैठक बुलाये जाने से पहले सहमति दी जा सकती है न ही उसके भंग हो जाने के बाद। इसका अर्थ यह भी है कि राष्ट्रपति भारतीय संविधान को जम्मू और कश्मीर के संदर्भ में लागू करने के लिए बार-बार आदेश देने के अपने अधिकार को अनंत काल तक प्रयोग नहीं कर सकते। एक बार संविधान सभा का निर्माण हो जाने और उसके द्वारा राज्य के लिए संविधान बना देने के बाद संविधान सभा भंग कर दी जायेगी और उसके बाद राष्ट्रपति का यह अधिकार भी समाप्त हो जाएगा।

6. राष्ट्रपति को इस धारा को हटाने या संशोधित करने का अधिकार है लेकिन इसके लिए भी 'राष्ट्रपति द्वारा ऐसी अधिसूचना जारी करने से पहले राज्य की संविधान सभा की संस्तुति लेना जरूरी है।'

संविधान सभा में धारा 306 ए को आयंगर ने पेश करते ही इस पर पहले सवाल खड़ा करने वाले व्यक्ति थे - मौलाना हसरत मोहानी। इस बात का जवाब देते हुए आयंगर ने कहा कि -

'यह भेदभाव कश्मीर की विशिष्ट परिस्थितियों के कारण है। वह विशेष राज्य अब तक इस तरह के एकीकरण के लिए तैयार नहीं है। यहाँ बैठे हर व्यक्ति को यह उम्मीद है कि समय के साथ-साथ जम्मू और कश्मीर भी उस तरह के एकीकरण के लिए तैयार हो जाएगा जैसा अन्य राज्यों के साथ हुआ है। वर्तमान में उस एकीकरण को हासिल करना संभव नहीं है। इस बात के अनेक कारण हैं कि यह इस वक़्त संभव क्यों नहीं है... भारत सरकार कश्मीर के लोगों के प्रति कुछ मामलों में वचनबद्ध है। उन्होंने इस अवस्थिति के प्रति वचनबद्धता प्रकट की है कि राज्य के लोगों को यह तय करने का मौक़ा दिया जाएगा कि वे गणराज्य के साथ रहना चाहते हैं या इससे बाहर जाना चाहते हैं। हम लोग इस बात के लिए भी वचनबद्ध हैं कि जनता की इच्छा जनमतसंग्रह द्वारा तय की जायेगी बशर्ते शान्तिपूर्ण और सामान्य

स्थितियाँ क़ायम हों और जनमतसंग्रह की निष्पक्षता की गारंटी दी जा सके। हम इस बात से भी सहमत हुए हैं कि राज्य की संविधान सभा के माध्यम से लोगों की इच्छा के अनुसार राज्य का संविधान स्थापित किया जाएगा और राज्य पर केन्द्र का प्राधिकार तय किया जाएगा... जब तक राज्य की संविधान सभा निर्मित नहीं होती केवल एक अंतरिम व्यवस्था ही संभव है और ऐसी व्यवस्था नहीं संभव है जैसी अन्य राज्यों के मामलों में है। अब, यदि आपको मेरे द्वारा प्रस्तुत किये गए विचार बिंदु याद हों तो यह एक अवश्यंभावी निष्कर्ष है कि हम केवल एक अंतरिम व्यवस्था लागू कर सकते हैं। धारा 306 ए (370) ऐसी ही व्यवस्था स्थापित करने की एक कोशिश है।'5

धारा 370 के अस्थाई होने का कारण था कि कश्मीर की जनता जिनके अंतिम निर्णय से ही इसका भविष्य तय होगा। कश्मीर की जनता ने जनमतसंग्रह से भारत के साथ आने का निर्णय लिया होता तो संभव था कि धारा 370 का स्वरूप बदल जाता या फिर इसकी आवश्यकता नहीं रहती। आखिर धारा 370 को संविधान में स्वीकार किया अब यह धारा कोई अस्थाई नहीं रही बल्कि भारत के संविधान का स्थाई हिस्सा बन गई। कश्मीर को दिए गए विशेष श्रेणी के राज्य के दर्जे को धारा 370 से जोड़कर देखा जाता है लेकिन हकीकत यह है कि विशेष श्रेणी के राज्य के दर्जे और धारा 370 का कोई संबंध नहीं है।

1947 के युद्ध में पाकिस्तान ने कश्मीर का जो भाग जीत लिया उसे पाकिस्तान 'आजाद काश्मीर' कहता है।1962 के युद्ध के बाद चीन व पाकिस्तान दोनों को जोड़नेवाला सबसे नजदीकी रास्ता और उनकी सुरक्षा के लिए, काराकोरम हाइवे महामार्ग बनाया गया, जो उसी भाग में स्थित हैं। कश्मीर का सबसे सुंदर शहर श्रीनगर है तथा पाकव्याप्त कश्मीर की राजधानी मुजफ्फराबाद है। यह शहर प्राचीन और रूढ़ीप्रिय है। पाकव्याप्त कश्मीर केवल गरिबी से ही घेरा हुआ नहीं है बल्कि पाकिस्तानी

सैनिकों से भी घेरा हुआ है। पाकिस्तानने यह भाग अपने हिस्से में करते ही इस भाग में कोई भी विकास नहीं दिखाई देता। इसलिए स्थानिक काश्मिरी नाराज है।

1965 में पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में कश्मीर की आजादी के उद्देश से अमानुल्ला ख़ान, मकबूल बट्ट और कई लोगों ने मिलकर 'प्लेबिसाईट फ्रंट' नाम की पार्टी बनाई ,जो भारत और पाकिस्तान दोनों से कश्मीर के विलय के विरुद्ध था तथा पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर की मांग थी। उसी समय कश्मीर में शेख अब्दुल्ला को गिरफ़्तार किया गया। 1965 के युद्ध में पाकिस्तान की हार के कारण भारत से कश्मीर के एकीकरण की प्रक्रिया चल रही थी और धारा 370 को लगातार अप्रभावी बनाया जा रहा था।

1988 - 89 के बीच लगातार तनाव की स्थिति घाटी में बनी रही। 14 अगस्त पाकिस्तान का स्वतंत्र दिन मनाया गया और अगले दिन 15 अगस्त को बंद का एलान किया तथा काले झंडे दिखाए गए। 1989 में जे.के.एल.एफ ने 'कश्मीर छोड़ो' का नारा दिया। सरकार ने माहौल और न बिगड़ने के लिए जुलाई में पाकिस्तान से लौटते हुए पकड़े 72 लोगों को रिहा किया लेकिन इसका परिणाम यह हुआ कि सी.आर.पी.एफ कैम्प पर हमला किया और तीन जवानों को मारा गया। श्रीनगर में पहली राजनितिक हत्या 21 अगस्त 1989 को नेशनल कॉन्फ्रेंस के एक अध्यक्ष मोहम्मद यूसुफ हलवाई की हुई।

1984 में हुए चुनावों में बहुमत से जीते राजीव गांधी सरकार को उपदस्थ कर विश्वनाथ प्रताप सिंह प्रधानमंत्री बने। लेकिन 2 दिसम्बर 1989 में भारत की राजनीति में परिवर्तन आया। वी. पी. सिंह एक कश्मीरी मुसलमान को गृहमंत्री बनाकर कश्मीरियो को एक सकारात्मक संदेश देना चाहते थे। परंतु इसके बाद अपहरण और बदले में आतंकवादियों की रिहाईयों की कई घटनाएं घटी।

जम्मू-कश्मीर को अनुच्छेद 370 और 35 ए द्वारा दिए गए विशेष दर्जे को हटाने के लिए संसद ने 5 अगस्त, 2019 को मंजूरी दी। तब केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह

ने इसे 'ऐतिहासिक भूल को ठीक करने वाला ऐतिहासिक कदम' ऐसा संबोधित किया था।

"पहले देश के लिए अधिकतर जो स्कीम बनती थी, जो कानून बनते थे, उनमें लिखा होता था- Except J and K. अब ये इतिहास की बात हो चुकी है। शांति और विकास के जिस मार्ग पर जम्मू और कश्मीर बढ़ रहा है, उसने राज्य में नए उद्योगों के आने का मार्ग भी बनाया है। आज जम्मू-कश्मीर आत्मनिर्भर भारत अभियान में अपना योगदान दे रहा है" - प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

अनुच्छेद 370 और 35 ए से आज़ादी के बाद भारतीय राजनीतिज्ञ, बैरिस्टर और शिक्षाविद डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का 'एकदेश, एक विधान, एक प्रधान' का संकल्प आजादी के 70 साल बाद पूरा हो पाया है तो धरती का स्वर्ग कहा जाने वाला जम्मू-कश्मीर और लद्दाख अब देश के बाकी हिस्से के साथ विकास की राह पर आगे बढ़ रहे हैं। केन्द्र के 170 कानून जो पहले लागू नहीं थे, अब वे कश्मीर क्षेत्र में लागू कर दिए गए। वर्तमान में सभी केन्द्रीय कानून जम्मू और कश्मीर केन्द्र शासित प्रदेश में लागू होंगे।

- अनुच्छेद 370 हटने के उपरांत अलगाववादियों का जनाधार खत्म होता जा रहा है। वर्ष 2018 में 58, वर्ष 2019 में 70 और वर्ष 2020 में 6 हुर्रियत नेता हिरासत में लिए गए। 18 हुर्रियत नेताओं से सरकारी खर्चे पर मिलने वाली सुरक्षा वापस ली गई। अलगाववादियों के 82 बैंक खातों में लेनदेन पर रोक लगा दी गई है।
- आतंक की घटनाओं में उल्लेखनीय कमी आई और घाटी में शांति और सुरक्षा का नया वातावरण बना दिखाई देता हैं।

"जब ऐतिहासिक रूप से केन्द्रीय धन का अधिकतम हिस्सा जम्मू-कश्मीर को दिया गया। उसके बाद भी यह बुनियादी ढांचे, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं, रोजगार के अवसर आदि जैसे विकास के कार्यों में क्यों नहीं परिलक्षित हुआ है? राजनीतिक

फायदे के लिए युवा वर्ग का उपयोग किया जा रहा है और राज्य के युवाओं की उपेक्षा करते हुए मुट्ठी भर अभिजात वर्ग ने इन निधियों से व्यक्तिगत लाभ प्राप्त किया। लिंग, वर्ग, जाति और मूल स्थान के आधार पर अनुच्छेद 370 से जम्मू-कश्मीर, लद्दाख और विशेषकर घाटी को क्या-क्या नुकसान हुए हैं, इस बात की किसी ने परवाह नहीं की। इसके कारण घर-घर में गरीबी दिखाई दे रही है। केन्द्र सरकार द्वारा उपलब्ध कराया गया करोड़ रुपया भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गया। इसी के कारण जम्मू-कश्मीर में शिक्षा व्यवस्था मजबूत नहीं हो पाई, यह अनुच्छेद महिला विरोधी, गरीब विरोधी, आदिवासी विरोधी है। इसकी वजह से जम्मू-कश्मीर में लोकतंत्र प्रफुल्लित नहीं हुआ, भ्रष्टाचार बढ़ा और चरम सीमा पर पहुंच गया।"

- **अमित शाह, केंद्रीय गृह मंत्री**
  (संसद में बहस के दौरान)

❖ सामाजिक परिस्थितियां

भारत और पाकिस्तान के बीच सबसे जटिल समस्या कश्मीर की है। 14 व 15 अगस्त 1947 को भारत व पाकिस्तान स्वतंत्र हो गए तो देशी रियासतों को आज़ादी दी गई कि वह अपनी इच्छानुसार भारत या पाकिस्तान में विलय हो सकती हैं या स्वतन्त्र रह सकती हैं। महाराजा हरि सिंह को कश्मीर के भविष्य के साथ-साथ वहाँ के लोगो की भावनाओं का भी ध्यान रखना था। अधिकांश रियासतें भारत या पाकिस्तान में मिल गईं परंतु कश्मीर के राजा हरीसिंह ने अपनी रियासत जम्मू-कश्मीर को स्वतन्त्र रखने का फैसला लिया। राजा हरि सिंह के अनुसार कश्मीर यदि पाकिस्तान में मिलता है तो जम्मू की हिन्दू जनता और लद्दाख की बौद्ध जनता के साथ अन्याय होगा और यदि वह भारत में मिलता है तो मुस्लिम जनता के साथ। अतः उन्होंने विलय के विषय पर तत्काल कोई फैसला नहीं लिया। पाकिस्तान का विचार यह था कि एक मुस्लिम बहुल राज्य होने के कारण कश्मीर पाकिस्तान के

साथ शामिल होना चाहिए। जबकि भारत का मानना था कि अन्य रजवाडो अथवा अन्य देशी रियासतों की तरह महाराजा हरि सिंह जो भी फैसला लेगें वहीं मान्य होगा। लेकिन यदि पाकिस्तान की धर्मान्ता वाली बात को माना जाए तो जम्मू व कश्मीर में हिन्दू व बौद्ध धर्म भी दो बराबर हिस्सो में थे। इस तरह इन परिस्थितियों में हालात और भी बिगड़ गए जब पाकिस्तान ने एक निर्धारित मार्ग से हटकर कश्मीर को प्राप्त करने का प्रयास शुरू किया। पाकिस्तान ने 1947 के समय अपनी कुटनीतिक कार्यशैली को शुरू करते हुए चोरी-छिपे अपने सैनिको को पठान घुसपैठियों के रुप में सशस्त्र सैनिको के रूप में भेजने यही नही उसे लगा कि उस समय के दौरान कश्मीर के सभी रास्तों का सम्पर्क पाकिस्तान के रावलपिंडी इस्लामाबाद से होने के कारण वह अपनी कुटनीतिक सैनिक लेगा। IR कार्यवाही कर आसानी से विजय प्राप्त कर लेगा।

लेकिन 26 अक्टूबर 1947 को महाराजा हरि सिंह ने भारत के साथ शामिल होने वाले विलय-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए अतः देखा जाए तो यही घटना भारत के सैनिकों के लिए कश्मीर व घाटी की सुरक्षा के लिए आने की वजह बनी। 2 जिस समय भारतीय फौजे कश्मीर में पहुंची उस समय तक पाकिस्तान घुसपैठिए कश्मीर घाटी के काफी आंतरिक इलाकों तक पहुंच चुके थे। हर जगह पर निर्दोष लोगो को मारा जा रहा था तथा उस समय के दौरान कश्मीर में हर तरफ अफरा-तफरी का माहौल था। 13 सितम्बर 1947 तक लगभग 60,000 कश्मीर की हिन्दु व सिक्ख जनता दंगो व घुसपैठ के भय के कारण पूंछ व अन्य जगहो से भागकर जम्मू के शरणार्थी जगहों पर रहने पर मजबूर हो गई थी। भारतीय फौज कश्मीर में कदम रखते ही वहाँ के बिगड़े हुए माहौल को शांत करना आरम्भ कर दिया था तथा आगामी कुछ ही दिनों में पाकिस्तानी घुसपैठियों का अपनी मूल जगह में लौट पाना निश्चित सा लगने लगा और यह सच भी हुआ था।

परन्तु एक बार फिर से कश्मीर में ब्रिटिश नीति "फूट डालो राज करो" ने अपना रंग दिखाया। तात्कालीन वायसराय लार्ड माऊंटबैटन ने नेहरु को सलाह दी कि वह इस मुददे को सयुक्त राष्ट्र संघ के समक्ष ले जाए और यह भी कहा कि दोनों देशों को युद्ध विराम के बारे में भी सोचना चाहिए तथा इस समस्या को सुलझाने पर विचार करना चाहिए। परन्तु उस समय भारतीय प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरु ने ब्रिटिश वायसराय लार्ड माऊटबैटन की बात मानना (कश्मीर समस्या के मुददे को सयुक्त राष्ट्र संघ के समक्ष ले जाना) एक ऐतिहासिक भूल साबित हुई। 1948 के युद्ध विराम समझौते के समय जो देश जहाँ काबिल था, वहां वह अपनी ही जमीन का दावा करने लगा। परन्तु यदि देखा जाए तो 26 अक्टूबर 1947 के विलय संबंधी घोषणा पत्र के अनुसार समस्त जम्मू कश्मीर राज्य भारत संघ के साथ मिल गया था इसी आधार पर यह भारत सरकार के अधीन ही रहना था। अतः ब्रिटिश सरकार की चालाकियों व भारतीय प्रधानमन्त्री की ऐतिहासिक भूल व पाकिस्तानी गतिविधियों के परिणामस्वरूप ही पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर भी अस्तित्व में आ गया। आज तक दोनो देश इसके मालिकाना हक में उलझे हुए है।

संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद ने इस समस्या के समाधान के लिए पाँच राष्ट्रों चेकोस्लावाकिया, अर्जेण्टाइना, अमेरिका, कोलम्बिया और बेल्जियम के सदस्यों का एक दल बनाया। इस दल को मौके पर जाकर स्थिति का निरीक्षण कर समझौते का मार्ग ढूँढ़ना था। दल ने मौके पर जाकर स्थिति का अध्ययन किया तथा अपनी रिपोर्ट में निम्न बातों का उल्लेख किया:-

1. पाकिस्तान अपनी सेनाएँ कश्मीर से हटाए तथा कबाइलियों और अन्य ऐसे लोग जो कश्मीर के निवासी नहीं हैं, वहाँ से हटने का प्रयास करें।
2. जब पाकिस्तान उपर्युक्त शर्त को पूर्ण कर लेगा तब आयोग के निर्देशों पर भारत भी अपनी सेनाओं का अधिकांश भाग वहाँ से हटा ले।

3. अन्तिम समझौता होने तक युद्धविराम की स्थिति रहेगी और भारत कश्मीर में स्थानीय अधिकारियों के साहायता के लिए उतनी ही सेनाएँ रखेगा जितनी कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए जरूरी होगी।

जनमत संग्रह के प्रयास - रिपोर्ट के आधार पर दोनों पक्षों- भारत और पाकिस्तान में लम्बी वार्ता के बाद 1 जनवरी, 1949 को युद्धविराम के लिए सहमत हो गए। कश्मीर के विलय का निर्णय जनमत संग्रह के आधार पर होना निश्चित था। संयुक्त राष्ट्र संघ ने जनमत संग्रह की शर्तों को पूर्ण करने के लिए एक अमेरिका अधिकारी को प्रशासक के रूप में नियुक्त किया।

प्रशासक ने भारत एवं पाकिस्तान से जनमत संग्रह के आधार पर चर्चा की परन्तु उसका कोई परिणाम न निकलने पर उसने अपने पद से इस्तीफा दे दिया। पाकिस्तान कश्मीर को छोड़ना नहीं चाहता था बल्कि उसकी नजर भारत के नियन्त्रण में स्थित कश्मीर पर भी थी। अतः उसने अपनी सैनिक शक्ति बढ़ाई तथा शक्तिशाली राष्ट्र अमेरिका से सन्धि कर अपना पक्ष मजबूत बनाने का प्रयत्न किया। पाकिस्तान ने सन् 1954 में अमेरिका से सन्धि की और सन् 1955 में वह 'सेण्टो' नामक संगठन का सदस्य बनकर अमेरिका की सहानुभूति प्राप्त कियी। सहानुभूति के बदले पाकिस्तान को कुछ सामरिक अड्डे भी प्राप्त हुए। इन परिस्थितियों में पं. नेहरू ने कश्मीर नीति में बदलाव किया। उन्होंने कहा कि जब तक पाकिस्तान अपनी सेना नहीं हटा लेता तब तक जनमत संग्रह नही होगा। कश्मीर के प्रश्न पर सोवियत संघ ने भारत का साथ दिया। इस समर्थन से भारत की स्थिति मजबूत हो गयी तथा भारत द्वारा जम्मू - कश्मीर को विशेष दर्जा 6 फरवरी, 1954 को कश्मीर की विधानसभा ने एक प्रस्ताव पारित कर जम्मू- कश्मीर राज्य का विलय भारत में करने की इजाजद दी गई। भारत सरकार ने 14 मई, 1954 को संविधान में संशोधन कर अनुच्छेद 370 के अन्तर्गत जम्मू-कश्मीर को एक विशेष दर्जा प्रदान किया। 26

जनवरी, 1957 को जम्मू- कश्मीर का संविधान लागू हो गया और इसके साथ ही जम्मू- कश्मीर भारतीय संघ का एक अभिन्न अंग बन गया।

इसके बाद पाकिस्तान लगातार कश्मीर का प्रश्न उठाकर कश्मीर में राजनीतिक अस्थिरता पैदा करने की कोशिश करता। पाकिस्तान ने दो बार इस मामले को सुरक्षा परिषद् में उठाकर जनमत संग्रह की माँग की। पाकिस्तान को इस प्रश्न पर अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस का समर्थन प्राप्त रहा परन्तु भारत ने इसका विरोध किया और भारत की मित्रता सोवियत संघ के साथ थी तो सोवियत संघ ने विशेषाधिकार का प्रयोग कर इस मामले को शांत किया। पाकिस्तान में जितनी सरकारें अब तक आयी हैं वे कश्मीर के मुद्दे को जीवन्त रखने का प्रयास करती हैं जबकि भारत के लिए यह मुद्दा उसकी अखण्डता एवं सम्मान का प्रश्न है।

कश्मीर क्षेत्र के चारों तरफ चार देशों की सीमाएँ लगती है भारत, पाकिस्तान, चीन व अफगानिस्तान। तजाकिस्तान, कार्गीस्तान की सीमाएँ भी कश्मीर के साथ लगती थी लेकिन अंग्रेजों ने इस देश पर शासन करते समय सीमाओं के विघटन होने से यह क्षेत्र छोटा हो गया था। जम्मू की अशांत और धार्मिक राजनीती के मिश्रण ने कश्मीर समस्या का स्थायी नतीजा निकालने के लिए सबसे मजबूत प्रयासों में से एक जम्मू प्रजा परषिद (जेपीपी) द्वारा आंदोलन को शुरू किया गया। 1952 में भारत कश्मीर समस्या को हल करने के बहुत निकट था। आरएसएस नेता बलराज मधोक द्वारा 1947 में स्थापित स्थानीय हिंदू पार्टी जेपीपी, राज्य सरकार के विरूद्ध सड़को पर उतर आई। यह आंदोलन लगभग एक साल 1952-53 तक चला था।

- इस आंदोलन से शेख अब्दुल्ला राजनतिकि रूप से कमजोर तथा नेहरू के साथ उनके संबंध खराब हो चुके थे। आंदोलन शांत होने के एक महीने बाद, अब्दुल्ला को सत्ता से हटाकर गिरफ्तार कर दीया गया।

पं. नेहरू ने निराशा व्यक्त करते हुए कहा की भारत सरकार के कश्मीर में सद्भावना पैदा करने की वर्षों के प्रयास को समाप्त कर दिया।

कश्मीर में अधिक समय से चले आ रहे आतंकवाद और विभिन्न समूहों के बीच संघर्ष ने असमानता की स्थितियाँ पैदा कर दी थी। इसके अलावा अध्ययन, भोजन, शिक्षा और रोजगार जैसी समस्याएं उत्पन हुई। कश्मीरी क्षेत्र में बेरोज़गारी एक चुनौतीपूर्ण मुद्दा बनी हुई थी, जो वहा के निवासियों के लिए बहुमुखी समस्याएँ खड़ी कर रही थी। बहुत समय से चली आ रही इस चिंता के कारण कश्मीर में आर्थिक असमानताएं, सामाजिक अशांति और विकास में बाधा उत्पन्न होने लगी। कश्मीर में बेरोजगारी दर में योगदान देने वाले प्राथमिक कारणों में से एक कारण था विविध और मजबूत औद्योगिक क्षेत्र की अनुपस्थिति। सीमित औद्योगिक विकास के कारण रोजगार के अवसरों की कमी हो गई थी। कई युवा योग्यता और कौशल होने के बावजूद रोजगार खोजने के लिए संघर्ष करते थे, जिससे युवाओं में निराशा और मोहभंग पैदा होता । इसके अतिरिक्त, यह क्षेत्र पर्यटन और कृषि जैसे क्षेत्रों पर अधिक निर्भर करता है, जो राजनीतिक अशांति और जलवायु परिवर्तन जैसे बाहरी कारकों के कारण उतार-चढ़ाव के प्रति संवेदनशील हैं। क्षेत्र में अस्थिर परिस्थितियों ने इन क्षेत्रों पर नकारात्मक प्रभाव डाला है, जिससे रोजगार के अवसरों में कमी आई और आर्थिक अस्थिरता पैदा हुई।

जम्मू-कश्मीर क्षेत्र को शिक्षा व्यवस्था में बहुत सारी चुनौतियों और बाधाओं का सामना करना पड़ रहा था। जैसे :-

- शैक्षणिक क्षेत्र में गलत बुनियादी ढांचा
- विद्यालयों में विशेषकर प्राथमिक स्तर पर विषय विशिष्ट शिक्षकों का अभाव।
- शिक्षण संस्थानों में शिक्षक रटने पर अधिक बल देते हैं और आलोचनात्मक सोच पर कम बल देते थे।
- शैक्षणिक संस्थानों को अपर्याप्त फंडिंग मिलती थी।
- अन्य समस्याएं जैसे छात्र ड्रॉप-आउट अनुपात, छात्र-शिक्षक अनुपात, लड़कियों और लड़कों के बीच असमानताएं आदि।

कश्मीर के राजाओं के लिए एक से अधिक रानियां रखना या व्याभिचार सामान्य सी बात थी। इस बात का पता चलता है जब निर्जितवर्मन की रानियां बपत्ता देवी और मृगावती अपने - अपने पुत्रों को गद्दी पर बैठाने के लिए एक मंत्री सुगंधादित्य के साथ दैहिक संबंधों में संलग्न थी। अपने भविष्य की सुरक्षा के लिए पुरुष-सत्तात्मक समाज में महिलाओं के लिए अपने देह के अलावा कुछ नहीं था। उसी तरह हर्ष ने भी गुलाम तुर्की स्त्रियों को अपनी हवस का शिकार बनाया।

कई विद्वानों के अनुसार कश्मीर के स्त्रियों की स्थिति शेष भारत की स्त्रियों से बेहतर थी। कश्मीर की रानियों के लिए अलग कोष, सलाहकार, कोषपाल होते थे और राज्य के हर एक मामले में इनकी अनुमति ली जाती थी। भले ही बाकी देश से कश्मीर के स्त्रियों की स्थिति अलग और बेहतर हो लेकिन सती परंपरा (पति की मृत्यु के उपरांत पत्नी उसी चिता पर अपना जीवन समाप्त करती है) कश्मीर में प्रचलन में थी।

7 अक्टूबर 1592 को अकबर दूसरी बार कश्मीर गया तब दीपावली थी। 1597 में अकबर तीसरी बार कश्मीर गए तब वहा भयानक अकाल पड़ा था। जहांगीर को कश्मीर का आशिक़ कहा जाता है क्योंकि वह कश्मीर की खूबसूरती का दीवाना था। कश्मीर में बागों के निर्माण की लिए जहांगीर को जाना जाता है। उनके समय कश्मीर में प्लेग इस प्रकार फैला की लोग लाशों का अंतिम संस्कार करने के बजाय उन्हें पानी में फेंक देते थे।प्लेग पूरी तरह खत्म नहीं हुआ था कि उसी इलाके में आग लगी जिसमे तीन हज़ार घर जले और कश्मीर की प्रतिष्ठित जामा मस्जिद भी पूरी तरह भस्म हो गई।

अफगानिस्तान का मुख्य कोच थोर्प कश्मीर में लड़कियों की खरीद - फरोख्त के बारे में एक भयानक तथ्य बताते हैं कि डोगरा शासन के दौरान वेश्यावृति के लाइसेंस फीस के तौर पर सौ रुपए लिए जाते। कश्मीरी समाज इस समय अपनी गरीबी और भूखमरी के कारण मजबूरन अपनी बेटी को भेजने जैसा निर्णय लेना स्वाभाविक था।

यह काम सिर्फ निचले तबकों के लोग ही करते , ऐसा करने के बजाय कश्मीरी मुसलमान मरना पसंद करते ऐसा थॉर्प का कहना था। लेकिन वेश्यावृति की प्रथा लंबे समय तक टिकी। कश्मीरी महिलाओं की खरीद - फरोख्त सिख काल में बढ़ गई थी तो डोगरा शासन के आरंभिक वर्षों में इसे बढ़ावा दिया और राजकीय आय का साधन बनाया।

नेहरू के पश्चात गांधी 1 अगस्त 1947 को कश्मीर गए थे तब उन्होंने प्रेस से भी कहा कि कश्मीर का मुद्या भारत, पाकिस्तान, महाराजा और कश्मीर को मिलकर सुलझाना चाहिए। इस यात्रा का राजनीतिक प्रभाव की वजह से रामचंद्र काक को प्रधानमंत्री पद से हटाकर पहले जनक सिंह और फिर मेहरचंद महाजन को प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया। इस समय भारत के साथ संपर्क बेहतर बनाने के लिए सड़क, टेलीग्राम तथा रेल मार्गों को बेहतरीन बनाने के लिए काम किया गया।

1933 में कश्मीरी किसानों को भू - स्वामित्व के अधिकार दिए गए लेकिन पूंछ को इस अधिकार से बाहर रखा गया। ऊधमपुर, चेनानी, रामनगर, रेसाई और भदरवाह में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने सिख शरणार्थियों को मदद से मुसलमानो की हत्या कर दि और उनकी महिलाओं के साथ अपहरण तथा बलात्कार किया। इन दंगो से ऐसा प्रतीत होता है कि हरि सिंह और उनका प्रशासन घाटी में किसी भी प्रतिकूल परिस्थिति या पाकिस्तान के आक्रमण आदि की स्थिति में अपने लिए जम्मू को सुरक्षित करना चाहते थे। बड़ी संख्या में मुसलमानों को हत्या और निष्कासन का उद्देश था कि जम्मू को मुस्लिम बहुल इलाके से हिंदू बहुल इलाके में तब्दील करना।

शेख अब्दुल्ला की रिहाई के तुरंत बाद महाजन बताते हैं कि उसी समय पाकिस्तान सरकार के विदेश मंत्रालय के संयुक्त सचिव मेजर ए.एस.बी शाह श्रीनगर आए और पाकिस्तान के साथ विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए महाराजा पर दबाव डाला। कबाइलियों को पाकिस्तानी सेना के शास्त्र दिए गए और इनका नेतृत्व भी पाकिस्तान के सैनिक अफसरों ने किया। पाकिस्तान की नाकाबंदी के कारण कश्मीर का लाखों

का सामान कश्मीर में ही फस गया। तभी 1 अक्टूबर को हरि सिंह ने भारत से हथियार तथा आवश्यक सामान भेजने की अपील की। भारत ने आवश्यक सामान तो भेजा लेकिन सैन्य सामग्री नहीं भेजी जा सकी। कबायली हमले में पाकिस्तानी अधिकारियों के शामिल होने के सबूत उपलब्ध है।

बारामूला हमले में राजिंदर सिंह गोली लगने के बावजूद लगातार ग्यारह घंटे तक दुश्मन से लड़ने के कारण उन्हें उनकी वीरता के लिए भारत सरकार ने मरणोपरांत महावीर चक्र से सम्मानित किया। कश्मीर में दूसरे प्रदेशों के नागरिकों को जमीन न खरीद सकने पर प्रचार होता है। बाहरी लोगों को रोकने के लिए मुल्की - गैर मुल्की के समय बनाया गया नियम प्रभाव में है।अक्सर दक्षिणपंथी ताकतें इस नियम को खत्म करने की बात करती है। लोकसभा में नेहरू ने इसे लेकर बयान दिया था -

'यह कोई नई चीज़ नहीं है बल्कि एक पुराना नियम है जो चला आ रहा है और मुझे लगता है यह बहुत अच्छी चीज़ है और इसे जारी रहना चाहिए क्योंकि कश्मीर एक बेहद लुभावनी जगह है और (अगर यह नियम रद्द किया गया तो) यहां के निवासियों के लिए यह दुर्भाग्यपूर्ण होगा कि अमीर लोग यहां की सारी जमीन ख़रीद लेंगे। यह वास्तविक कारण है और यह कारण अंग्रेजों के ज़माने से, सौ से अधिक वर्षों से लागू है।'6

एक और प्रचार कश्मीरी संविधान में स्त्रियों के साथ होने वाले भेदभाव को लेकर है जिसके तहत जम्मू और कश्मीर की स्त्रियों को बाहर के अन्य पुरुष से विवाह करने पर राज्य में अचल सम्पत्ति खरीदने और नौकरी के अधिकार उनसे छीन जाते है। 17 अक्टूबर 2002 में जम्मू और कश्मीर हाईकोर्ट ने यह स्पष्ट किया कि जम्मू और कश्मीर की महिलाओं के मौलिक अधिकार किसी अन्य राज्य के नागरिक से विवाह करने पर सुरक्षित रहेंगे।

2 दिसम्बर 1989 में भारत की राजनीति में परिवर्तन आया। वी. पी. सिंह एक कश्मीरी मुसलमान को गृहमंत्री बनाकर कश्मीरियो को एक सकारात्मक संदेश देना

चाहते थे। परंतु इसके चार दिन बाद ही मुफ्ती सईद की मंझली अविवाहित बेटी डॉ. रुबिया सईद का अपहरण किया गया। उसे रिहा करने के बदले में 3 और फिर 5 आतंकवादियों को रिहा करने की मांग की। इस भयानक घटना के बाद अंतकवादियों का मनोबल बढ़ा और अपहरण और बदले में रिहाईयों की कई घटनाएं घटी।

आतंकवादियों के कश्मीर घाटी में भीतर प्रवेश करने और कश्मीरी पंडित अधिकारियों और नेताओं की हत्याओं ने कश्मीर में पंडितों में भय का माहौल पैदा किया। नब्बे के दशक में बड़ी संख्या में कश्मीरी पंडित घाटी छोड़कर जाने के लिए मजबूर हो गए इसका मुख्य कारण था भय, अविश्वास और पैदा हुआ हिंसा का माहौल। इस समय में कश्मीरी पंडितों के पलायन की संख्या को लेकर विवाद है। कश्मीरी पंडित समूह और हिंदू दक्षिणपंथी पलायित कश्मीर की संख्या चार से लाख बताते हैं। लेकिन वास्तविकता से यह संख्या अधिक है क्योंकि 1941 में कश्मीर पंडितों की आखिरी गिनती हुई थी और इसी आधार पर 1990 का अनुमान लगाया जाता है।

कश्मीर में इस हादसे के बावजूद कश्मीरी पंडितों के एक हिस्से ने वहां से पलायन न करने का फैसला लिया। कश्मीरी पंडितों के संघठन ' कश्मीरी पंडित संघर्ष समिति' के अध्यक्ष संजय टिक्कू के अनुसार 2011 में कश्मीर में रहनेवाले कश्मीरी पंडितों की संख्या लगभग 3,400 है। कश्मीर से कश्मीरी पंडितों के पलायन में एक पक्ष जगमोहन को पूरी तरह जिम्मेदार बताता है वहीं जगमोहन अपनी किताब में इस बात से पूरी तरह इंकार करते हैं। अतः कहा जा सकता है कि कश्मीरी पंडितों के बिना कश्मीरी समाज अधूरा ही रहेगा।

कश्मीर में शान्ति रखनी है तो -

- वहां के विभिन्न पक्षों से लगातार बातचीत करनी होगी।
- धारा 370 को सहमति की स्थिति बनाते हुए देश के अन्य हिस्सों में इस धारा के सही पक्ष बताए जाए तथा कट्टरपंथी ताकतों को इसे नफ़रत फैलने के औजार की तरह इस्तमाल करने पर बंदी लगाए।

- कश्मीर में रोज़गार के नए और पर्याप्त साधन/ सुविधाएं उपलब्ध कराई जाए।
- कश्मीर का संवाद भारत के अन्य भागों से करने और दोनों पक्षों की अनेक गलतफहमियां दूर कराने के लिए लगातार युवाओं/छात्रों को अलग - अलग हिस्सों के युवाओं से मिलने का अवसर दे।
- साथ ही देश के स्कूलों, कॉलेजों में कश्मीर के इतिहास, उनकी समावेशी परंपरा और 1947 के पहले और बाद की ऐतिहासिक परिस्थितियों को जानना और कश्मीरी स्कूलों में भी कश्मीरी संस्कृति किस तरह कट्टरपंथ के खिलाफ़ रही, वहां की ऋषि परंपरा को फिर से जिंदा करना ऐसी अनेक शिक्षा दी जाए।
- कश्मीरी पंडित जो वापस कश्मीर में लौटना चाहते हैं उनके लिए सकारात्मक प्रयास करना।

अतः मार्ग वही है जो वाजपेयी के समय भाजपा और कश्मीर के प्रभारी महासचिव नरेंद्र मोदी ने कश्मीर समस्या के समाधान के लिए तीन डी वाला सूत्र देते हुए प्रस्तावित किया था - डेवलपमेंट, डेमोक्रेसी और डायलॉग। और यदि यह असफल हो तो चौथे डी यानी डिफेन्स का उपयोग। लेकिन दुर्भाग्य से अक्सर चौथा डी (डिफेन्स) का इस्तमाल पहले कराया जाता है।

❖ धार्मिक परिस्थितियां

कश्मीरी इतिहासकार तथा विश्वविख्यात संस्कृत ग्रंथ जिसे कश्मीर की ऐतिहासिकता के संदर्भ में विशेष स्थान राजतरंगिणी के रचनाकार 'कल्हण' के अनुसार सुरेंद्र राजा ने कश्मीर में सौरस में एक बुद्ध विहार बनवाया था जिसकी दीवार पर गौतम बुद्ध के चित्र उकेरे गए थे। इसी आधार पर कई विद्वान इन्हें कश्मीर का पहला बौद्ध राजा मानते और वहां बौद्ध धर्म के आरंभ का श्रेय देते है।

मौर्यत्तकाल में भारत आनेवाली विदेशी जातियों में सबसे प्रमुख जिन्होंने भारत के एक बड़े भाग पर लंबे समय तक शासन किया कुषाण वंश के शासक कनिष्क के शासनकाल में बौद्ध धर्म ने कश्मीर में अपनी जड़े जमाई लेकिन देश के बाकी

हिस्सों की तरह कश्मीर में भी एक धर्म के रूप में बौद्ध धर्म का पतन हो गया। फिर भी कश्मीरी मानस और समाज में बौद्ध धर्म की शिक्षाओं का प्रभाव हमेशा बना रहा। बौद्ध धर्म का प्रभाव कश्मीर में विकसित शैव धर्म और इस्लाम ले सूफी मत पर दिखाई देता है। वैशाख पूर्णिमा बौद्ध के जन्मदिन को पवित्र दिन की तरह मनाए जाने की परंपरा ग्यारहवीं सदी तक चली।

चक्रवर्मन एक डोम जाति के गायक रंगा की बेटियों के प्रेम में पड़ गया। राजा कोई दलित अधिकारों का समर्थक नहीं था, बल्कि एक दलित महिला के साथ उसका वर्ण व्यवस्था पर अनजाने में किया गया प्रहार था।

कश्मीर की विशिष्टता इसमें भी है कि वहा जो भी धर्म प्रभावी हुआ उसने एक अलग रूप ले लिया। इस्लाम जिस रूप में कश्मीर में आया उसी रूप में नहीं रहा। कश्मीर की इस्लामी ऋषि परंपरा का संस्थापक नुन्द ऋषि। उनके बारे में मान्यता है कि उन्हें शैव योगिनी ललद्यद (जिन्होंने मूर्तिपूजा, आडंबर और जाति प्रथा के साथ पुरुष सत्ता पर भी कठोर हमले किए) ने अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था। कश्मीर का इस्लामीकरण पश्चिम - मध्य एशिया के अलग - अलग देशों से आए सूफ़ी संतों और विद्वानों के प्रभाव में आरंभ हुआ और कश्मीर में जन्मी ऋषि परंपरा में ही फला - फूला।

कश्मीर में सदियों से कश्मीरी पंडित और मुसलमान साथ रह रहे थे। दोनों की संस्कृति, भाषा समान थी और दोनों में कश्मीरी होने का आत्मसम्मान था।

1947 में हरि सिंह की विदाई और शेख अब्दुल्ला सत्ता में आने पर कश्मीरी पंडितों के लिए बड़ी संख्या में मुसलमान लड़के स्कूलों/ कॉलेजों से शिक्षा लेकर राज्य सरकार की नौकरियों में वर्चस्वशाली कश्मीरी पंडितों को चुनौती देते।

- **❖ सांस्कृतिक परिस्थितियां**

कश्मीर का सबसे सुंदर शहर श्रीनगर है तथा पाकव्याप्त कश्मीर की राजधानी मुजफ्फरबाद है। यह शहर प्राचीन और रूढ़ीप्रिय है। आज भी वहा मिट्टी के घर दिखाई देते हैं।

भारतीय पत्रकार, लेखक और राजनेता एम.जे.अकबर ने कश्मीर में फिरन पहनना और कागड़ रखना अनिवार्य किया और हथियार रखने पर पाबंदी लगा दी। इसका परिणाम यह हुआ कि एक योद्धा कौम धीरे धीरे युद्ध करना भूल गई। एक श्राप की तरह उपयोग करनेवाला प्रचलित कश्मीरी मुहावरा है - अछ वचे गशि रूसे -इसका अर्थ है आंखें खुली रहें तुम्हारी लेकिन रौशनी न हो। अन्य शासन कश्मीरी जनता के लिए ऐसे ही रहा।

एक और प्रचार कश्मीरी संविधान में स्त्रियों के साथ होने वाले भेदभाव को लेकर है जिसके तहत जम्मू और कश्मीर की स्त्रियों को बाहर के अन्य पुरुष से विवाह करने पर राज्य में अचल सम्पत्ति खरीदने और नौकरी के अधिकार उनसे छीन जाते है। 17 अक्टूबर 2002 में जम्मू और कश्मीर हाईकोर्ट ने यह स्पष्ट किया कि जम्मू और कश्मीर की महिलाओं के मौलिक अधिकार किसी अन्य राज्य के नागरिक से विवाह करने पर सुरक्षित रहेंगे।

कश्मीर में हर साल मकबूल बट्ट की फांसी का दिन शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता है यह परंपरा है।

❖ आर्थिक परिस्थितियां

917- 18 ईस्वी में कश्मीर में भयानक बाढ़ आई जिससे वितस्ता नदी लाशों से भर गई। चावलों के दाम बढ़ गए। भूख की वजह से लोग गलियों में मरने लगे लेकिन तान्त्रिन लोगों की सहायता करने के बजाय गोदाम में रखे चावलों को ऊंचे कीमतों में बेचकर लाभ कमाने में ही लगे रहे।

कश्मीर की तरबियत खान की सूबेदारी में 1641 में लगातार बारिश के कारण बाढ़ आ गई।इससे फसल खराब हो गई और तीस हजार लोग कश्मीर छोड़कर लाहौर आ गए। शाहजहां को पता चला तो उन्होंने मदद के तौर पर एक लाख रुपए और लाहौर में शरण लिए लोगों को मुफ्त भोजन की व्यवस्था की।

अफगानिस्तान का मुख्य कोच थोर्प कश्मीर में लड़कियों की खरीद - फरोख्त के बारे में एक भयानक तथ्य बताते हैं कि डोगरा शासन के दौरान वेश्यावृति के लाइसेंस फीस के तौर पर सौ रुपए लिए जाते। कश्मीरी समाज इस समय अपनी गरीबी और भूखमरी के कारण मजबूरन अपनी बेटी को भेजने जैसा निर्णय लेना स्वाभाविक था।यह काम सिर्फ निचले तबकों के लोग ही करते क्योंकि उनकी आर्थिक स्थिति उतनी अच्छी नहीं थी।

पाकव्याप्त कश्मीर की राजधानी मुजफ्फरबाद है। यह शहर प्राचीन और रूढ़ीप्रिय है। आज भी वहा मिट्टी के घर दिखाई देते है। यहां खेती ज्यादा नहीं होती इसलिए वहां गरीबी बहुत है।

निष्कर्ष

कश्मीर अपने प्राकृतिक सौन्दर्य के कारण धरती का स्वर्ग कहलाता है। परंतु कश्मीर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को जानने के बाद इस स्वर्ग की भयानक स्थिति का ज्ञात हुआ। कश्मीर में राजनितिक, सामाजिक,धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में बदलाव का कश्मीरी जनता पर पड़े प्रभाव को स्पष्ट किया गया है। भारत-पाकिस्तान का विभाजन होते ही कश्मीर के सामने प्रश्न था कि किसके साथ विलय करना है। अपने राज्य को स्वतंत्र रखने के निर्णय से जनता को कई समस्याओं का सामना करना पड़ा इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। उसी प्रकार सामाज में बलात्कार बाढ़ आदि भयानक चीज़े हो रही थी।

संदर्भ

1.पाण्डेय कुमार अशोक, कश्मीरनामा, राजकमल एंड संज,नई दिल्ली, प्र. सं 2018,पृष्ठ-संख्या- 07

2. वहीं,पृष्ठ-संख्या- 320

3.वहीं,पृष्ठ-संख्या-321

4.वहीं,पृष्ठ-संख्या-321

5.वहीं,पृष्ठ-संख्या-323

6.एक देश, एक विधान, एक निशान का सपना साकार, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ-संख्या-02

7.एक देश, एक विधान, एक निशान का सपना साकार, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ-संख्या-09

8.पाण्डेय कुमार अशोक, कश्मीरनामा, राजकमल एंड संज, नई दिल्ली, प्र. सं 2018,पृष्ठ-संख्या- 326

द्वितीय अध्याय

समकालीन हिंदी महिला उपन्यासकारों में चंद्रकांता का स्थान

समकालीन हिंदी महिला उपन्यासकारों में चंद्रकांता का स्थान

समकालीन हिंदी महिला उपन्यासकारों की सूची में चंद्रकांता, ममता कालिया, मैत्रेयी पुष्पा, उषा प्रियंवदा, प्रभा खेतान, कृष्णा सोबती, चित्रा मुद्गल, मन्नू भण्डारी, मृणाल पाण्डे का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उत्तरशती का हिंदी कथा साहित्य कई विमर्शों से प्रभावित है, उनमें से एक है स्त्री विर्मश। समकालीन महिला लेखिकाओं ने अपने पूर्व भाव बोध को तोड़कर नए विचार की अनुभूति की। समकालीन साहित्य में पुरुषवर्ग का जितना योगदान है उतना ही योगदान महिला लेखिकाओं का भी है। हिंदी कथा साहित्य नारी विमर्श से प्रभावित है तथा अनेक लेखिकाओं ने विविध विधाओं में विशेष रूप से काव्य, कहानी, उपन्यास, आत्मकथा आदि में साहित्य सृजन किया है। महिला लेखिकाओं ने स्त्री अस्मिता को समझते हुए उसे अभिव्यक्ति देने की कोशिश की है। इनमें चंद्रकांता का 'अपने अपने कोणार्क', ममता कालिया का 'दुक्खम - सुक्खम', मैत्रेयी पुष्पा का 'इदन्नमम', प्रभा खेतान का 'छिन्नमस्ता', कृष्णा सोबती का 'दिलोदानिश', चित्रा मुद्गल का 'आवाँ', मन्नू भण्डारी का 'आपका बंटी' और मृणाल पाण्डे का 'देवी' आदि विशेष प्रशंसनीय हैं। स्त्री होने के कारण वह स्त्री की शोषित अवस्था को व्यक्त करने में सफल रही। स्त्री को स्वतंत्र और भयमुक्त होना है तो उन्हें आत्मनिर्भर होना जरूरी है। अधिकांश लेखिकाओं ने जीवन के विविध स्तरों पर होनेवाले नारी शोषण को अपनी लेखनी की प्रमुख विशेषता बनाई है।

ममता कालिया

समकालीन हिंदी साहित्य उपन्यासकारों में ममता कालिया का नाम बहुत चर्चित है। ममता कालिया के अधिकतर उपन्यास स्त्री पात्र को केंद्र में रखकर लिखे गए है। उनके उपन्यास- बेघर, एक पत्नी के नोट्स , नरक दर नरक, दौड़, प्रेम कहानी, दुक्खम सुक्खम , अंधेरे का ताला आदि है।

एक नारी शिक्षित होने के बावजूद भी किस तरह वह शोषण का शिकार बनती हैं इसका चित्रण उन्होंने अपने उपन्यासों में किया है। 'दुक्खम सुक्खम' उपन्यास लेखिका ने बीसवीं शताब्दी की पृष्ठभूमि पर लिखा है, तथा 'अंधेरे का ताला' उपन्यास में शिक्षा के क्षेत्र में बदलते परिवेश के कारण हो रही उथल पुथल हो दर्शाया है। इस संदर्भ में फार्मास्युटिकल रसायन विज्ञान विभाग में सहायक प्रोफेसर डॉ. भूमिका पटेल लिखती हैं -**"ममताजी ने अपने कथा साहित्य में सामाजिक पारिवारिक, धार्मिक और राजनीतिक समस्याओं को अलग-अलग कोणों से अभिव्यक्त किया है। वे यथार्थधर्मी लेखिका हैं। उनकी दृष्टि की व्यापकता का परिचय हमें उनके कथा-साहित्य द्वारा मिलता है। ममताजी सिर्फ घर-परिवार के दायरे में ही सीमित न होकर जीवन के विभिन्न आयामों का संस्पर्श करती है।"1**

ममता कालिया ने अपने उपन्यासों में स्त्री की समस्याओं एवं मध्यवर्ग की समस्याओं का सूक्ष्मता से चित्रण किया है।

मैत्रेयी पुष्पा

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक की सशक्त महिला लेखिकाओं में जिन रचनाकारों ने अपनी अलग पहचान बनाई हैं, उनमें मैत्रेयी पुष्पा का नाम आता है। उपन्यासकार मैत्रेयी पुष्पा अकेले ऐसी लेखिका है , जिन्होंने प्रेमचंद के समान ही अपने समय और समाज को ईमानदारी से व्यक्त किया। इनके उपन्यासों में अभिव्यक्त आंचलिक परिवेश 'फणीश्वरनाथ रेणु' की याद दिलाते हैं। उनके लेखन के बारे में साहित्यकार राजेंद्र यादव कहते हैं- **"रेणू के बाद, संजीव के साथ- साथ मैत्रेयी अकेली लेखिका है, जिसने सबसे अधिक चरित्र हिंदी साहित्य को दिए। मैत्रेयी का गाँव-कस्बे से संबंध आज भी बना हुआ है। यह गाँव जाकर लोगों से मिलती-जुलती है। यहाँ रांगेय राघव के लिए कहा गया एक वाक्य याद आ रहा है कि वे धुमकेतू की तरह हिंदी के आकाश पर उदित हुए। शायद मैत्रेयी का आगमन भी कुछ वैसा ही हुआ है। हिंदी साहित्य के घुटे और बंद वातावरण में मैत्रेयी का आना अचानक एक ऐसी दुनिया के**

दरवाजे खुल जाना है, जिसके पार फैला, जंगल, पशु-पक्षी, फूल फसलें, सब कुछ दूर-दूर तक चला गया है। हाँ, वहाँ मोर-मैनाएँ हैं तो सियार भेड़िए भी।"2 इस तरह मैत्रेयी का साहित्य संसार उनकी अनुभव और प्रेरणा भूमि उनका गाँव है जो प्रेमचंद के कथा-साहित्य की याद दिलाता हैं।

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास 'बेतवा बहती रही' तथा 'अगिनपाखी' में गांव का दामन नहीं छोड़ा इसी कारण आलोचकों ने उन्हें गांव की लेखिका के रूप में संबोधित किया। उनका जनवरी 2002 में प्रकाशित 'विजन' यह हिंदी का पहला उपन्यास था जो मेडिकल क्षेत्र को केंद्र में रखकर लिखा गया था। यही उपन्यास उनके साहित्य यात्रा का नया पड़ाव कह सकते है।

अधिकतर मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में पुरुष प्रधान समाज के प्रति आक्रोश तथा उनके साहित्य के केंद्र में नारी है। उन्होंने एक साक्षात्कार में कहा है **"उस पुरूष व्यवस्था से मुझे चिढ़ है जो स्त्री के चारों ओर बंधन डालती है। हजारों वर्षों से ज्यादा समय से देशी विदेशी आक्रमण की सीधी मार या सच कहूं तो दोहरी मार स्त्री पर पड़ती हैं। आक्रमणकारियों के अत्याचार, बलात्कार और उनके हरम की सजावट का सामान। उधर घर में पुरुष का आहत अहं और सुरक्षा की घेराबंदी।"3**

मैत्रीय पुष्पा के उपन्यास- बेतबा बहती रही', 'इदन्नमम्', 'चाक', 'झूला नट', 'अल्मा कबूतरी', 'अगिनपाखी', 'कही इसूरी फाग' उपन्यास लिखकर मैत्रेयी पुष्पा ने प्रेमचंद के समान अपने समय और समाज को पूरी ईमानदारी से प्रस्तुत किया है। 'झूला नट', 'अल्मा कबूतरी' और 'इदन्नमम्' उपन्यास ग्रामीण जीवन पर आधारित होने से रेणू की याद दिलाते हैं। बीस वर्ष गांव में बीतने के कारण गांव की स्थिति, संघर्ष, पारिवारिक संबंधों का प्रभाव, शहरी परिवेश, धर्म, जाति आदि का चित्रण उनके उपन्यासों में हुआ है। अतः कह सकते हैं कि मैत्रीय पुष्पा का साहित्य स्त्री को एक नई पहचान देनेवाला साहित्य है।

उषा प्रियंवदा

समकालीन कथा साहित्य में उषा प्रियंवदा का महत्वपूर्ण स्थान है। उनका साहित्य जीवन की त्रासद स्थितियों को उभारता हैं। उनके उपन्यास- पचपन खंभे लाल दिवारे, रुकोगी नहीं राधिका, शेष यात्रा, अंतर्वर्शी, भया कबीर उदास, नदी।

'पचपन खंभे लाल दिवारे' उपन्यास में लेखिका ने मध्यवर्गीय परिवार की बेटी सुषमा के विवाह की समस्या तथा 'शेष यात्रा' उपन्यास में अनु के माध्यम से यथार्थ जीवन में नए विश्वास से प्रवेश करने की कहानी है। 'अंतर्वर्शी' उपन्यास में अमेरिका में रहनेवाले भारतीय परिवारों की जीवनशैली का विश्लेषण किया है। उपन्यासकार उषा प्रियंवदा ने नारी जीवन की विसंगतियों, नारी के बदलती मान्यताएं, नई परिस्थितियां तथा परिस्थितियों के कारण आनेवाले बदलाव को उजागर किया है।

लेखक अरविन्द कुमार के अनुसार उषा प्रियंवदा का साहित्य- **"वे मूलतः भारतीय होने के कारण अपनी रचना के अंत में एक कृत्रिम आदर्शवाद को स्वीकार करती है, किन्तु चरित्रों, घटना और स्थितियों को सूक्ष्म वैज्ञानिक एवम् तर्क के आधार पर पहचानती है।"4**

प्रभा खेतान

आधुनिक हिंदी साहित्य में प्रभा खेतान एक प्रतिष्ठित कथाकार है। उनके उपन्यास- आओ पेपे घर चलें, तालाबंदी, छिन्नमस्ता, अपने अपने चेहरे, पीली आंधी प्रकाशित है।

'आओ पेपे पर चलें' उपन्यास में लेखिका ने कॅथरिन पात्र के माध्यम से अमेरिका के ऐश्वर्य- वैभवपूर्ण जीवन को चित्रित किया है। प्रभा जी के उपन्यास यथार्थ की धरातल पर आधारित होने के साथ साथ उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों को नारी चरित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। प्रभा खेतान जी ने अपने उपन्यासों में सदियों से चली आ रही उपेक्षित, शोषित, परंपरा में बंधी हुई और अत्याचारों से पीड़ित नारी को दर्शाया है।

कृष्णा सोबती

कृष्णा सोबती ने अपने उपन्यासों की रचना स्त्री को केंद्र में रखकर लिखे है। उनके रचना से उनके परिवेश निजी व्यक्तित्व और गहन संवेदनशीलता का आभास होता है। उनके उपन्यास- डार से बिछुड़ी, मित्रों मरजानी, सूरजमुखी अंधेरे के, जीवन में, ऐ लड़की, दिलो दानिश, सोबती एक सोहबत, समय सरगम।

'मित्रों मरजानी' उपन्यास में लेखिका ने एक मित्रो नामक स्त्री को चित्रित किया है जो भय और लज्जा से मुक्त है, और इसी कारण उनपर अश्लीलता का आरोप भी लगाया गया। 'जिन्दगी नामा' उपन्यास में अपनी जन्मभूमि पंजाब विगत सदी का पूरा ब्यौरा प्रस्तुत किया गया है।

कृष्णा सोबती के साहित्य का मूल्यांकन करते हुए फार्मास्युटिकल रसायन विज्ञान विभाग में सहायक प्रोफेसर डॉ. भूमिका पटेल लिखती हैं- **"कृष्णा सोबती के उपन्यासों में हमें दो प्रकार के स्वर सुनाई देते हैं। एक स्वर- जो नारी- मन को विशेष खुलेपन तथा ईमानदारी से व्यक्त करने का और दूसरा स्वर साम्प्रदायिकता और विभाजन की त्रासदी की गहन संवेदनशील अभिव्यक्ति।"5**

चित्रा मुद्गल

पिछले एक दशक में महिला लेखन के क्षेत्र में चित्रा मुद्गल ने अपनी एक अलग पहचान बनाई। उनके उपन्यास- एक जमीन अपनी, आवा, गिलीगडु, पोस्ट बॉक्स नं - २०३ नाला सोपारा आदि प्रकशित है।

उन्होंने अपने उपन्यासों में नारी की समस्याओं को खास कर निम्न मध्यवर्गीय को प्रस्तुत किया है। जैसे 'एक जमीन अपनी' और 'आवा' उपन्यास में चित्रित दोनों स्त्रियां आत्महत्या करने के लिए मजबूर हो जाती हैं। 'आवा' उपन्यास की पात्र नीता की अवस्था पर साहित्यकार डॉ.कृष्णचन्द्र गुप्त लिखते हैं - **"रेगिस्तान में भटकती हुई हिरनी जैसी दशा है उसकी।"6 गिलीगडु उपन्यास में वृद्धों की स्थिति दर्शायी**

है। इस बारे में लेखिका स्वयं लिखती हैं- "इस घर में बच्चों की शिकायत नहीं आती। बूढ़ों की आती है। इस सोसायटी के लोग शायद कभी बूढ़े नहीं होंगे। न उनकी शक्ति क्षीण होगी न स्मृति। ऐसे अजर अमर जन्मे हैं, न कभी कोई कष्ट व्यापेगा न हारी बीमारी।"7 तथा उनका अंतिम उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नं - २०३ नाला सोपारा' किन्नर समाज को मध्य नजर रखते हुए लिखा गया है।

मन्नू भण्डारी

समकालीन रचनाकारों में मन्नू भण्डारी का नाम बहुत चर्चित रहा है। मन्नू जी ने जो देखा , अनुभव किया और भोगा उसे ही अपनी लेखनी में प्रस्तुत किया। फार्मास्युटिकल रसायन विज्ञान विभाग में सहायक प्रोफेसर डॉ. भूमिका पटेल लिखती हैं- **"मन्नूजी की संवेदनाओं का विश्व व्यापक है। नारी होने के नाते उन्होंने न केवल नारी को ही अपने लेखन को केन्द्र में रखा, बल्कि समाज के हर क्षेत्र में रहनेवाले व्यक्ति को स्वर दिया है। वस्तुतः मन्नूजी के कथा साहित्य के दो आयाम हैं। प्रथम है- मध्यवर्गीय आम आदमी और दूसरा है नारी। इन्हीं को आधार बनाकर उन्होंने अपनी लेखनी चलाई है।"8**

उनके उपन्यास- एक इंच मुस्कान (पति राजेंद्र यादव के साथ), आपका बंटी, महाभोज, स्वामी । उनका 'आपका बंटी' उपन्यास बहुत चर्चित रहा है जो बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। उन्होंने अपने उपन्यासों में केवल नारी को ही केंद्र में न रखकर बल्कि समाज की हर छोटी - छोटी घटनाएं जिसे हम नजर अंदाज कर देते है उन्हें भी उजागर करने का प्रयास किया है। अधिकतर उन्होंने मध्यवर्ग को अपने उपन्यासों में अभिव्यक्ति दी है।

मृणाल पाण्डे

कथा लेखिकाओं में मृणाल पाण्डे ने अपनी रचनाओं के कारण हिंदी महिला लेखिकाओं में अपना विशेष स्थान बनाया है। उनके उपन्यास- विरूद्ध, अपनी गवाही, हमका दियो परदेश, पटरंग पुराण, रास्तों पर भटकते हुए, देवी आदि प्रकाशित है।

'देवी' उपन्यास में लेखिका ने आधुनिक समाज में व्याप्त विसंगतियों को देवी पाठ का स्मरण करते अपने बचपन के बारे में बताया है। उनकी रचनाएं प्रगतिवादी स्त्री को चित्रित करती है। पटरंग पुराण में ग्यारह पीढ़ियों की इतिहास गाथा तथा रास्तों पर भटकते हुए उपन्यास में व्याप्त भ्रष्टाचार को उजागर किया है।

लेखिका ने स्त्री समस्याओं के साथ समाज में व्याप्त अनेक समस्याओं पर अपनी आवाज बुलंद की है।

❖ **उपन्यासकार चंद्रकांता**

अंतिम दशक के महिला उपन्यासकारों की तुलना करते हुए कह सकते हैं कि सभी लेखिकाओं ने राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिस्थितियों का चित्रण किया है। उत्तरशती का हिंदी कथा साहित्य नारी विमर्श से प्रभावित है और इसमें चंद्रकांता का अपना विशिष्ट स्थान है। चंद्रकांता के उपन्यास - अर्थान्तर, बाकी सब खैरियत है, ऐलान गली जिन्दा है, अंतिम साक्ष्य, यहां वितस्ता बहती हैं, अपने - अपने कोणार्क, कथा सतीसर प्रकाशित है।

चंद्रकांता का जन्म कश्मीर में हुआ। उन्होंने अपना जीवन कश्मीर की खुबसूरत घाटियों में बिताया तथा वहां की परिस्थितियों को अपने उपन्यासों में चित्रित किया। स्वर्ग कश्मीर में अनेक समस्याएं हैं जैसे अज्ञान, अभाव, और मुख्य रूप से आतंकवाद जिसे लेखिकाने अपने कथा सतीसर उपन्यास में प्रस्तुत किया है। जिस तरह बाहरी रूप से कश्मीर को देखते हैं क्या आंतरिक रूप से स्वर्ग कश्मीर वैसा ही है या नहीं? इसी सच्चाई से लेखिकाने ने अवगत कराने का प्रयास अपने उपन्यासों द्वारा किया है।

उनका सन् 1981 में प्रकाशित पहला लघु उपन्यास अर्थान्तर दाम्पत्य जीवन की व्यथा- कथा है। इस उपन्यास के केंद्र में कम्मो है। कम्मो का विवाह विजय से होता है। परंतु विजय का प्रेम संबंध जूली से था। इसके अतिरिक्त उषी के साथ भी उसके प्रेम संबंध थे। वे दोनों के दूसरे के साथ रहते हुए भी एक दूसरे के लिए पराए थे।

एक दूसरे से कटे हुए होकर भी वे दोनों अपने दाम्पत्य जीवन को जी रहे थे। उनका 1983 में प्रकाशित दूसरा उपन्यास बाकी सब खैरियत है का परिवेश एवं कथ्य संयुक्त परिवार से संबंधित है। विनु और पारुल अपने पुत्र और सास- ससुर के साथ एक ही घर में रहते थे और पारुल उन सबका अच्छी तरह से ध्यान रखती थी। आर्थिक रूप से सक्षम न होने के बाद भी वह किसी से शिकायत नहीं करती और अपनी देवरानी निम्मी को पत्र के अंत में यह लिखती है कि समस्याएं हैं, फिर भी बाकी सब खैरियत है। एक स्त्री होने के कारण पारुल को किन किन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है इसे लेखिका ने बखूबी प्रस्तुत किया है। 1984 में प्रकाशित ऐलान गली जिन्दा है उनका महत्वपूर्ण उपन्यास है। चंद्रकांता जी को अपने पति की नौकरी की वजह से भारत के कई राज्यों में रहने का अवसर मिला जैसे उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, राजस्थान इत्यादि। वहां उन्होंने देखा कि कश्मीर को लेकर आम लोगों के मन में बहुत सारी गलत धारणाएं है। उन लोगों को कश्मीर के जन - जीवन से परिचित कराने में उपन्यास अच्छा तरीका था। इसलिए इस उपन्यास में लेखिका ने प्रतीक रूप में कश्मीर की एक गली को चुना, जिसका नाम रखा 'ऐलान गली जिन्दा है'। कश्मीर के संबंध में कहा जाता है कि पृथ्वी पर यदि कई स्वर्ग है तो वह कश्मीर है लेकिन स्वर्ग के पास नरक भी होता है इसका 'ऐलान गली' सशक्त उदाहरण है। सपनों की नगरी कश्मीर में दरिद्रता, अज्ञान, अभाव, पारस्परिक संघर्ष, आतंकवाद व्याप्त है इसे लेखिका ने इस उपन्यास में चित्रित किया है। अंतः यह उपन्यास एक गली से संबंधित होने के कारण इसमें आंचलिक भाषा, लोkगीतों, बिंबो, रीति रिवाज, कहावते, मुहावरों का प्रयोग किया गया है। 1990 में प्रकाशित अंतिम साक्ष्य उपन्यास मातृ - पितृ विहिन, अनाथ मीना के विवश जीवन का दस्तावेज है। उपन्यास में मीना मौसी के जीवन की त्रासदी को चित्रित करता है। यहां वितस्ता बहती हैं 1992 में प्रकाशित कश्मीर की पृष्ठभूमि पर रचित यह उपन्यास तीन पीढ़ियों के समय संघर्ष एवं मानवीय सरोकारों को व्यापकता से उजागर करती हैं। यह उपन्यास तीन पीढ़ियों की ही नहीं बल्कि केंद्रीय पात्र राजनाथ की तीन पत्नियों को कहानी है।

सन् 1995 में प्रकाशित अपने - अपने कोणार्क में लेखिका ने अपने संपर्क में आए चरित्रों को उपन्यास में चित्रित किया है। तथा उन्होंने इस उपन्यास में अपने जीवनानुभव रेखांकित किए हैं। वह उड़ीसा में छह वर्ष रहने के कारण उन्होंने सामाजिक जीवन को प्रत्यक्ष देखा और वहीं इस उपन्यास में चित्रित किया है। समाजिक बोध के अंतर्गत दाम्पत्य जीवन, विवाहेत्तर संबंध, बदलते सामाजिक मूल्य, दहेज समस्या, अनमेल विवाह, पारिवारिक और वृध्दावस्था की समस्या आदि को अपने उपन्यासों में चित्रित किया है। अपने साहित्य से संबंधित उनके विचार स्पष्ट है **"जब हमारा निजी सच वृहत्तर समाज का सच बन जाता है तभी साहित्य बन जाता है। साहित्य शब्द में ही तो साहित्य का भाव जुड़ा है। हमारे अपने सुख-दुख भी सामाजिक आर्थिक परिवेश की उपज होते है। विविध व्यवस्थाओं के परिणाम होते है। इसलिए साहित्य हमारे समग्र जीवन का दस्तावेज होता है। जिसमें हमारे पाठक अपनी अनुभूतियों को खोजते, ढूंढते अपने सुख-दुख का प्रतिबिम्ब पाते हैं।"9**

उनका 2001 में प्रकाशित कश्मीर की स्थिति पर लिखा गया कथा सतीसर उपन्यास कश्मीर के राजनीतिक, समाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक विखंडन को गहनता से चित्रित करता है। लेखिका चंद्रकांता जी ने स्वयं लिखा - **"...जो हो रहा है, मैंने उसको अनावृत किया; जो हो सकता था, या होना चाहिए, उसकी दस्तक दी। आज के कश्मीर को कल के साथ जोड़कर, प्रदेशवासियों के स्वप्नों, स्मृतियों और आकांक्षाओं को जिंदा रखने के लिए 'कथा सतीसर' लिखा गया। समय अतीत, समय वर्तमान और आनेवाला कल, सभी तो समाहित होता है वर्तमान में। इतिहास, पुराणों और लोककथाओं में हमारी स्मृतियाँ गुँथी हैं, हमारे विश्वास और समय के साक्ष्य।'कथा सतीसर' मेरे लिए महज एक किताब नहीं, मातृभूमि का ऋण है, जिसे चुकाना ज़रूरी**

था, ताकि स्मृतियाँ नष्ट न हो जाएँ और उम्मीदें कायम रहें। वरना ज़िंदगी के अर्थ ही क्या रह जाएँगे?"10 आतंक से व्याप्त कश्मीर के हिंदुओं की निष्कासन की भयानक परिस्थितियों को उपन्यास में उजागर किया है।

प्रख्यात हिंदी आलोचक, संस्मरण लेखक, प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका 'समीक्षा' के संपादक स्तंभकार और अनुवादक डॉ. सत्यकाम ने लिखा है - **"कथा सतीसर' निर्वासन का दंश झेलते कश्मीरियों का दर्द बाँ है। अपने ही भाईयों द्वारा अपने ही घर से निष्कासन का दर्द क्या होता है, यह शायद हम और आप महसूस न कर सकें।..... अब तो इतनी हत्याएँ होने लगी हैं कि यह हमारे लिए आम बात हो गई है और कश्मीर में रहनेवाले अल्पसंख्यकों को इतनी बेरहमी से मारे जाने के बावजूद उनकी हत्या का हमारे शीत रक्त पर कोई असर नहीं हो रहा।"11**

अतः अन्य लेखिकाओं ने अधिकतर अपने उपन्यासों के केंद्र में स्त्री को रखा है। चंद्रकांता जी ने अपने उपन्यासों में स्त्री को केंद्र में रखते हुए अन्य सामाजिक स्थितियों को उजागर किया है। प्रख्यात उर्दू कवि, उपन्यासकार और लघुकथा लेखक डॉ.कश्मीरी लाल कहते हैं - **"नर-नारी संबंधों का विवेचन चन्द्रकांता जी ने कई कथाओं में किया है। उनकी कथाओं में पारम्परित पारिवारिक अनाचार भोग रही नारी थी विद्यमान है और आर्थिक स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए घर और बाहर के बीच असहज तादात्मय बैठाती कामकाजी गृहणी थी। प्रेम में पुरूष के आगे समर्पित होकर प्रवचन पीड़ा सहती अबला भी है और आत्मनिर्णय लेने वाली आत्मविश्वास की प्रतिमूर्ति सबला थी।"12**

- **चंद्रकांता और कश्मीर**

पृथ्वी का स्वर्ग कहे जानेवाले कश्मीर में जन्मी और पली- बढ़ी कथाकार चंद्रकांता समकालीन हिंदी महिला उपन्यासकारो में अपना विशेष स्थान रखती हैं। इन्होंने कश्मीर के दुःख- दर्द को बहुत नजदीक से देखा और उसका साक्षात् अनुभव भी

किया। इन्होंने जहां कश्मीरी के आपसी भाईचारे का सुकून महसूस किया, वहीं मानवता को लज्जित करनेवाली नफरते भी देखी। इन्हीं अनुभवों और लोगों की भावनाओं को इन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से व्यक्त किया है। साथ ही स्त्री के जीवन से जुड़ी अनेक समस्याओं को उजागर किया है। जीवन के उन सभी सुखद दुखद घटनाओं की अनुभूतियों की अभिव्यक्ति उनके कथाओं में चित्रित हुई है।

कश्मीर शैव और शाक्तों की भूमि रही है। ऐसी पुण्य भूमि पर जन्म लेकर किसी को भी गर्व महसूस हो सकता है। चंद्रकांता भी स्वयं को भाग्यशाली मानकर लिखती हैं - **"काश्मीर-जैसी सुंदर प्रकृति-प्रिय वादी में जन्म लेना हर किसी के भाग्य में नहीं होता। मैं उन भाग्यशालियों में हूँ, जिन्होंने वहाँ जन्म ही नहीं लिया, वहाँ के पर्वतों, पानियों, चीड़, देवदार और झीलों पर झुके वेद-वृक्षों की कतारों को अपनी रगों-रेशों में उतरते महसूस किया।"13**

चंद्रकांता का बचपन और किशोरावस्था कश्मीर की प्राकृतिक वादियों में बीतने के कारण इस प्राकृतिक परिवेश के प्रति उनकी गहरी आत्मीयता उनके कृतित्व में दिखाई देती है। उन्हें बचपन से ही प्रकृति के प्रति मोह रहा है। उनका भावुक मन प्रकृति के साथ आनंद प्राप्त करता है। - **"अपने बारे में सोचते हुए जब भी मुड़कर देखती हूँ तो मुझे एक छह-सात वर्ष की खिलन्दडी बच्ची आड़ी-मेड़ी घसीली पगडण्डियों पर हवा से होड़ लेते भागती नजर आती है।.... कच्ची दूबिया पगडण्डियों पर ऊँचे चीड, देवदारों से बतियाती बेहताश दौड़ी जा रही है, अकेली-अकेली । जबकि उसके भाई-बहन सम्भ्रांत घर के तौर-तरीकों के अनुसार घर में बैठे खिलौनों से खेल रहे होते हैं।"14** प्रकृति के प्रति यह आकर्षण उनके साहित्य में दिखाई देता है। कश्मीर के बदलते माहौल से व्यथित हुई, जिसे कई उपन्यासों में अभिव्यक्ति मिली है।

बाहरी रूप से देखे, सुने तो स्वर्ग के समान ही कश्मीर का चित्रण आखों के सामने आ जाता है परन्तु वास्तव में स्वर्ग दिखने वाले कश्मीर में दरिद्रता, अज्ञान, अभाव, आतंकवाद व्याप्त है, यह चंद्रकांता के उपन्यासों से स्पष्ट हुआ है।

आज हमारे देश की एक विडंबना हो गई है कि जहां देखते हैं वहां एक समस्या उत्पन्न होती नज़र आती है और वहीं समस्या धीरे -धीरे एक विकराल रूप धारण कर लेती है। ऐसी ही एक सबसे बड़ी समस्या है - आतंकवाद। इसी आतंकवाद का पिछले तीस वर्षों से सामना कर रहा है - धरती का स्वर्ग कश्मीर। वहां के लोग हर समय भय से जीते हैं कि वे कल का सूरज देख पाएंगे या नहीं। इससे और तकलीफ की क्या बात हो सकती है जो समाज चैन की सांस तक नहीं ले सकता। ये सब होने के बावजूद भी कश्मीर के लोगों में एक जीवन जीने की जिजीविषा है। वे कश्मीर की सुन्दर वादियों में अपना जीवन जीए जा रहे हैं, और एक संदेश दे रहे है कि बस एक धैर्य होना चाहिए और वे विषम परिस्थितियों में भी स्वर्ग का आनंद ले सकते हैं।

लेखन प्रेरणा के संबंध में कथाकार चंद्रकांता से पूछा गया कि इस क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए किस रचनाओं और ग्रंथों ने प्रभावित किया तो उनका कहना था - **"मैंने बारह वर्ष की आयु से आज तक कई भाषाओं का साहित्य पढ़ा है। कई ग्रंथों ने प्रभावित किया, पर मैंने लेखन अपने अनुभवों, विचार और संवेदना की तीव्रता के बल पर ही किया। वहाँ किसी भी रचना या रचनाकार का प्रभाव आने नहीं दिया। यों, हो सकता है, मेरे जाने-अनजाने कहीं कुछ प्रभाव पड़े भी हों, पर मैंने अपनी शैली-शिल्प में न अटपटे प्रयोग किए, न दूसरों की नकल । मुझे टॉल्स्टॉय की 'अन्ना करेनीना', सोलजेनित्सिन का 'कैंसरवार्ड',स्टेनबैक का 'ग्रेप्स ऑफ राथ', गोर्की की 'मदर', हेमिंग्वे का 'ओल्ड मैन ऐंड द सी' इत्यादि कई ग्रंथ उच्चकोटि के लगे हैं, सालबैलो मार्केज की कई कहानियाँ बेजोड़ लगी हैं, पर सीखा मैंने अपने परिवेश से ही। कश्मीर कथा-कहानियों की भूमि है। यहीं गुणाढ्य ने 'बृहत्कथा' लिखी, सोमदेव ने 'कथासरित्सागर'। मुझे ललद्यद ने निर्भीक दृष्टि दी, 'रामायण' ने करुणा, लोककथाओं ने मनुष्य के साथ प्रकृति को भी प्यार करना सिखाया। संक्षेप में, मैं अपनी जन्मभूमि कश्मीर की ऋणी हूँ, जिसकी उन्मुक्त प्रकृति, बर्फ ढके पर्वतों,**

झीलों, नदियों और ऊँचे चीड़-चिनारों ने मुझे संवेदनशील रचनाकार बनाने की पहल की, शेष तो जीवन की पाठशाला में ही सीखा और आज भी सीख ही रही हूँ।"15

भले ही परिस्थितियों ने उन्हें अपनी जन्म भूमि से दूर कर दिया हो पंरतु वहां की वादियां इन्हें दुबारा बुलाती है। इन्हें इस बात का दुःख है कि वह कश्मीर में जाकर पुनः बस नहीं सकती।

- चंद्रकांता से साक्षात्कार लेते समय उन्हें एक प्रश्न पूछा गया कि वह लेखन की ओर कैसे प्रवृत्त हुई और उनके प्रेरणा स्रोत कौन हैं, तो उन्होंने इस प्रश्न का जवाब देते हुए कश्मीर का भी उल्लेख किया।
- उन्हें यह भी प्रश्न पूछा गया कि वे मूलतः कश्मीर की हैं, तो साहित्य स्थानीय भाषा में न लिखकर हिंदी भाषा में लिखने के पीछे उनकी क्या मानसिकता है? जवाब में उन्होंने कहा कि - यह बात बहुत-से लोगों ने मुझसे पूछी है। मेरा मानना है कि कश्मीरी भाषा में रचित साहित्य बहुत उच्चकोटि का साहित्य है। वहाँ ललद्यद से लेकर महजूर, नादिम रहमान राही जैसे कवि और कथाकार हुए हैं। उससे मैं संपन्न और गर्वित महसूस करती हूँ। और शायद कश्मीरी भाषा में लेखन कर मैं मातृभाषा की थोड़ी-बहुत सेवा कर पाती, परंतु हमारे पिताजी यद्यपि अँगरेजी के विद्वान् थे, पर वे कश्मीर में हिंदी-भाषा के प्रचारकों में से रहे हैं। उन्होंने मुझे और मेरी बहन को ओरिएंटल कॉलेज में दाखिला दिलाकर, हमें हिंदी पढ़ने-सीखने के लिए प्रेरित किया। वहीं आगे, मैंने हिंदी साहित्य से 'रत्न-संबद्ध-भूषण', 'प्रभाकर' आदि की परीक्षाएँ भी पास कीं, जिससे हिंदी पढ़ने-लिखने की समझ आ गई। मैंने जब लेखन शुरू किया, तब में महादेवी, पंत, प्रसाद जैसे लेखकों से काफी प्रभावित थी। और जब मैंने लेखन के विषय में गंभीरता से सोचा, तो मुझे लगा कि मैं राष्ट्रभाषा हिंदी द्वारा अपनी बात एक बड़े समुदाय तक पहुँचा सकती हूँ। शायद यही भावना अंतर्मन में रही हो। जब एम्.ए. में मुझे विषय का चयन करना था, तब

सचमुच मुझे निर्णय लेना था कि मैं कौन-सा विषय लूँ। पॉलिटिकल साइंस और अँगेजी विषय भी मेरे सामने थे। उस समय मैंने यह निर्णय लिया कि अगर मुझे लिखना है तो हिंदी विषय को ही चुनना है। मेरे घर पर तो हिंदी का वातावरण नहीं था, पर एक बात मैं ज़रूर कहूँगी कि मैंने कश्मीरी को यदि माँ माना है तो हिंदी को नानी-दादी का दर्जा दिया है। मुझे कभी भी हिंदी - भाषा पराई नहीं लगी। बचपन से ही मैंने इसे अपनाया है।

- उन्हें उनके लेखन कार्य के बारे में भी पूछा गया कि उन्होंने अपना लेखन कार्य कश्मीर से बाहर रहकर किया फिर भी अधिकतर उपन्यास कश्मीरी परिवेशबद्ध हैं। इसपर कथाकार चंद्रकांता का मत था - मेरे लेखन की शुरुआत यों तो कश्मीर से ही हुई, मैं वहीं पली-बढ़ी। मेरे अनुभवों की ज़मीन वहीं है। बाद में पति की नौकरी की वजह से देश के विभिन्न प्रदेशों में रही, पर कश्मीर को मैं कभी भूली नहीं। कश्मीर पर मैंने इसलिए भी अधिक लिखा, क्योंकि हिंदी-साहित्य-जगत् में कश्मीर था तो उसे एक सुंदर प्राकृतिक स्थली के रूप में चित्रित किया गया था या एक समस्याग्रस्त प्रदेश के रूप में। मुझे लगा, कश्मीर की संस्कृति और सामयिक विरासत से हिंदी-साहित्य लगभग अपरिचित रहा है। वहाँ एक समृद्ध लोक-संस्कृति भी रही है, जिसे मैंने 'ऐलान गली जिंदा है' उपन्यास में पहली बार चित्रित किया। यह उपन्यास जब राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ, तब वहाँ की मैनेजिंग डायरेक्टर श्रीमती शिला संधु ने और हिंदी-साहित्य-जगत् ने खुले मन से उसका स्वागत किया कि पहली बार कश्मीर की लोक-संस्कृति से उनका परिचय हुआ। इसके बाद भी कश्मीर निरंतर समस्याओं के केंद्र में रहा है और पिछले बीस एक वर्षों से आतंकवाद के कारण वह पृथ्वी का स्वर्ग न रहकर रक्त-रँगा प्रदेश बन गया है। इसलिए वहाँ की जनता की यातना को स्वर देना मुझे लेखकीय दायित्व लगा।

- और कश्मीर के संबंध में सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न - स्थानीय समस्याओं की वजह से लाखों लोगों को कश्मीर से पलायन करना पड़ा तथा धरती का स्वर्ग कश्मीर आज आतंक का पर्याय बन गया है। इन सबका उल्लेख आपकी रचनाओं में हुआ है, तो इस पलायन से आपने अपने व्यक्तिगत जीवन में क्या कठिनाइयां महसूस की ? इसपर चंद्रकांता का जवाब था - आतंकवाद के कारण कश्मीरी जनता को काफी यातनाएँ भोगनी पड़ीं। हजारों लोगों की जाने गईं। इस आतंकवाद ने जब सांप्रदायिक उन्माद का रूप लिया और पाकिस्तान से सह और सहायता पाकर कश्मीरी युवा भटककर इस्लाम परस्त हो गया और अपनी ललद्यद और नंद ऋषि जैसे संतों की सामाजिक सद्भाव की विरासतों को भूल गया तो उसे कश्मीरी पंडित अचानक काफिर लगने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि मस्जिदों से लाउडस्पीकरों पर कश्मीरी पंडितों को घर छोड़कर चले जाने के लिए आदेश दिए जाने लगे। जो लोग अपनी पुरखों की विरासत को छोड़ नहीं जाना चाहते थे, उन्हें जान से मार दिया गया और बहू-बेटियों की अवमानना की गई।

हालात ऐसे बन गए कि लाखों कश्मीरी पंडित सबकुछ छोड़-छाड़कर खाली हाथ देश के विभिन्न भागों में आकर शरणार्थियों का जीवन जीने को विवश हो गए। बेघर होना हम सबके लिए दुःख का कारण तो था ही, पर अपने स्वतंत्र गणतंत्र में बिना किसी अपराध या बिना किसी विभाजन के हमें अपने ही राष्ट्र में शरणार्थी होना पड़ा। इस बात को मैं निजी दुःख के साथ पूरे राष्ट्र के लिए लज्जा की भी बात है, क्योंकि हमारे नेता अपने नागरिकों के मूलभूत अधिकारों की भी रक्षा करने में असमर्थ रहे। अल्पसंख्यक लोग वादी छोड़कर चले गए। उस समय मैं भुवनेश्वर में थी। हमारे माता-पिता और नाते-रिश्तेदार कश्मीर में ही थे। हमारा भी घर-द्वार, उम्रों की सँजोयी-बटोरी सारी विरासत आतंकियों के हाथ में चली गई। यह केवल मेरा व्यक्तिगत और पारिवारिक दुःख ही नहीं था, बल्कि पूरी बिरादरी और अपनी संपन्न विरासत को खोने का भी दुःख है, जिससे हम हमेशा गर्वित रहे हैं। यहाँ मैं यह भी

जोड़ना चाहूँगी कि घर खोना मात्र मकान या प्रोपर्टी का खोना नहीं होता, वो अपनी पूर्वजों की धरोहर को खोकर अस्मिताविहीन होना और जड़ों से विहीन होना भी होता है। इसका दुःख तो आजन्म सालता है और मैं भी इस यातना से मुक्त नहीं हो पा रही हूँ।

- कश्मीर शाक्त संप्रदाय और प्रत्यभिज्ञादर्शन की आदिभूमि रही है। इनमें से आप किससे दीक्षित हैं ? - कश्मीर शैव, शाक्त एवं कई संप्रदायों की भूमि रही है। शैव संप्रदाय में प्रत्यभिज्ञादर्शन कश्मीर की ही देन है। कश्मीरी मानते हैं कि संपूर्ण सृष्टि शिवमय है। शिव और शक्ति प्रकाश और विमर्श है। अंतिम सत्य है परम शिव। इसी में शक्ति का वास है अर्थात् शिव शक्ति से अलग नहीं है। शैवशास्त्र के अनुरूप शिव और शक्ति का यामल स्वरूप शिवरात्रि है। इसी शिव-शक्ति का मिलन हमारी शिवरात्रि है, जिसे हम बड़ी श्रद्धा से मनाते हैं। मैं भी शिवरात्रि को कल्याणकारिणी रात्रि के रूप में महत्त्व देती हूँ। कश्मीर की भूमि को हम सती का रूप मानते हैं और सभी नदियों को हम देवियों के रूप में पूजते हैं, बल्कि झेलम नदी को हम वितस्ता के रूप में जानते हैं, जो कि सती का ही एक रूप है।

इन सवालों के जवाब सुनकर यह स्पष्ट होता है कि कथाकार चंद्रकांता और उनकी जन्मभूमि कश्मीर का संबंध बहुत गहरा और अटूट हैं। उन्हें अपनी जन्मभूमि पर गर्व है भले ही वहा दरिद्रता , अज्ञान, आतंकवाद आदि व्याप्त है। आज भी उनके स्मरण में कश्मीर की यादें जिंदा है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्याय से स्पष्ट हो जाता है कि समकालीन हिंदी महिला उपन्यासकारों में चंद्रकांता का एक विशिष्ट स्थान है। समकालीन अन्य लेखिकाओं ने स्त्री के विविध रूपों के साथ समाज में व्याप्त कई समस्याओं को अपने उपन्यासों में उजागर किया है। चंद्रकांता ने अपने उपन्यासों में समाज स्त्री के अनेक रूपों को और सामाजिक

समस्याओं को उजागर करते हुए अपनी जन्मभूमि कश्मीर में घटित अनेक सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक समस्याओं का सूक्ष्मता से चित्रण प्रस्तुत किया है। साथ ही उनका उनके जन्मभूमि कश्मीर से अटूट संबंध स्पष्ट होता है। उन्होंने साक्षात्कार देते समय भी हर एक उत्तर में कश्मीर का जिक्र किया है, इससे कश्मीर के प्रति उनका लगाव दृष्टिगोचर होता है।

संदर्भ

1.पटेल डॉ. भूमिका, मन्नू भंडारी का कथा साहित्य: संवेदना और शिल्प, चिंतन प्रकाशन,कानपुर, प्र.सं 2012,पृष्ठ- संख्या- 165

2.सिंह बहादुर सं. विजय, मैत्रेयी पुष्पा: स्त्री होने की कथा,किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली,सं.2016,पृष्ठ- संख्या-60

3.कुमार अरविंद, विक्षा, जुलाई- दिसंबर 08, पृष्ठ- संख्या-55

4.पटेल डॉ. भूमिका, मन्नू भंडारी का कथा साहित्य: संवेदना और शिल्प, चिंतन प्रकाशन,कानपुर, प्र.सं 2012,पृष्ठ- संख्या-162

5.गुप्त डॉ. कृष्णकांत, प्रकर, जून - 1991, मार्च - 1992, सितंबर - 1993,पृष्ठ- संख्या-38

6. मुद्गल चित्रा, गिलिगडु, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं 2004,पृष्ठ- संख्या-65

7.पटेल डॉ. भूमिका, मन्नू भंडारी का कथा साहित्य: संवेदना और शिल्प, चिंतन प्रकाशन,कानपुर, प्र.सं 2012,पृष्ठ- संख्या-172

8.चव्हाण डॉ. जगदीश, चंद्रकांता का कथा साहित्य, विद्या प्रकाशन,कानपुर, प्र.सं 2012,पृष्ठ- संख्या-29

9.http://hdl.handle.net/10603/97668 (चंद्रकांता के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक समस्याएं),पृष्ठ- संख्या-228- 229

10.शर्मा डॉ. प्रभा, चंद्रकांता के उपन्यास वस्तु, शैली और शिल्प,निर्मल पब्लिकेशन्स,दिल्ली,सं.2017, पृष्ठ- संख्या-23

11.चव्हाण डॉ. जगदीश, चंद्रकांता का कथा साहित्य, विद्या प्रकाशन,कानपुर, प्र.सं 2012,पृष्ठ- संख्या-17

12.शर्मा डॉ. प्रभा, चंद्रकांता के उपन्यास वस्तु, शैली और शिल्प,निर्मल पब्लिकेशन्स,दिल्ली,सं.2017,पृष्ठ- संख्या-30-31

तृतीय अध्याय

चंद्रकांता के चयनित उपन्यासों की समीक्षा

चंद्रकांता के चयनित उपन्यासों की समीक्षा

गद्य साहित्य की सबसे लोकप्रिय विधा उपन्यास ही है। उपन्यास के अंतर्गत किसी व्यक्ति, परिवार, समाज अथवा युग का विस्तृत चित्रण किया जाता है। शुरुआत में इस विधा से तात्पर्य मनोरंजक पुस्तकों से ही था। धीरे-धीरे उपन्यास शब्द का विस्तार होने लगा।

उपन्यास लेखन में अनेक प्रकार दिखाई देते है। इस में ऐतिहासिक उपन्यास, राजनैतिक उपन्यास, सामाजिक उपन्यास,क्षेत्रीय उपन्यास, ग्रामीण उपन्यास, दलित उपन्यास, आंचलिक उपन्यास आदि का समावेश होता है। इन अनेक प्रकारों के अनुसार उपन्यासों का स्वरूप बदलता दिखाई देता है। ऐतिहासिक उपन्यास से उपन्यासकार इतिहास को उजागर करता है तो सामाजिक उपन्यास से समाज मन का चित्रण दिखाई देता है।

उपन्यास के अनेक प्रकारों में से क्षेत्रीय उपन्यास यह अन्य प्रकारों की तरह महत्वपूर्ण है। उपन्यासकार इससे विशिष्ट भूभाग जीवन, वहां के रीति रिवाज, वातावरण, खेती, वहां की संस्कृति, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक परिस्थितियों से उत्पन समस्याओं का चित्रण करता है। खानपान, परिवार, भगवान के प्रति श्रद्धा, विविध त्योहार, रुढी परंपरा, वहां के लोगों की मानसिकता, आदि क्षेत्रीय उपन्यास में दिखाई देता है।

क्षेत्रीय उपन्यास से तात्पर्य है कि किसी विशेष क्षेत्र के लोगों के जीवन, सामाजिक संबंधों, रीति रिवाजों, भाषा, बोली या संस्कृति के अन्य पहलुओं को अलग करनेवाली विशेषताओं का वर्णन करता हो। ऐसे उपन्यास लेखन में किसी विशेष स्थान या क्षेत्रीय संस्कृति का उपयोग संभवतः सामान्य रूप से जीवन के एक पहलू या उसमें रहनेवाले लोगों पर किसी विशेष वातावरण के प्रभावों को चित्रित करने के लिए किया जा सकता है। अनेक लेखकों ने रहस्यात्मक, गांव, महानगर क्षेत्रीय आदि से संबंधित समस्याओं को उपन्यासों में चित्रित किया है। आज के लेखक ऐसे ही रहस्य या क्षेत्र

का भ्रमण करते हैं। अनेक लेखकों ने कश्मीर का भ्रमण किया है। उनमें से एक है समकालीन हिंदी महिला उपन्यासकार चंद्रकांता।

❖ ऐलान गली जिन्दा है

चंद्रकांता जी का 'ऐलान गली जिन्दा है' सन 1984 में प्रकाशित हुआ। जिसमें लेखिका ने स्वर्ग कहे जानेवाले कश्मीर की एक तंग गली को चुना है। गली में हर जाति, धर्म, संप्रदाय के लोग रहते हैं। इन्हीं लोगों के आपसी संबंध, दरिद्रता, अज्ञान, अभाव आदि समस्याओं से परिचित करने का प्रयास किया है। यह समस्या केवल उस गली की ही नहीं बल्कि पूरे समाज की समस्या है।

उपन्यास की शुरुआत में ऐलान गली का वर्णन किया गया है। ऐलान गली में शाम हो गई है।एक दूसरे का सहारा लिये खडे मकानो की छत बर्फ सी ढकी हुई है। ऐलान गली की गृहणियां शाम के समय दीपक लगाकर ऐलान गली में अंधेरे को चुनौती देती है। इस गली में लोगों ने अपने मकान इतने ऊँचे बनाएँ है कि गली में सूरज की रोशनी तक ढंक जाती है और इसी कारण पूरे गली में अंधेरा ही रहता है। अब तो इस दिनभर के अंधेरे से उस गली के लोग आदि हो गए है लेकिन इसी अंधेरे से रत्नी को शिकायत है दुख, क्रोध है।

ऐलान गली में रहनेवाला हर एक इन्सान अलग किस्म, अलग स्वभाव का है। अगर इन लोगों को कोई घर के नजदीकीयों के बारे में पूछे तो उनका कहना है की इस घर में क्या हो रहा है? उस घर में क्या पक रहा है? पकवानों की आदान-प्रदान कैसे हो ? कोई बीमार है तो कैसे पता चले? महिलाओं की खुसुर पुसूर कैसे हो? उदहारण के लिए हिमाल की बहु को दूसरे पहर रात दर्द हो गया तो वह थके- माँदे मर्दों की नींद नहीं खराब कर सकती इसिलिए तो पड़ोसियों की घरे नजदीक होना फायदेमंद होता है। आज महानगरों में यह स्थिति दिखाई देती है किन्तु वे अपने काम इतने व्यस्त रहते है कि उन्हें दूसरे घर में क्या हो रहा है इसकी भनक नहीं लगती।

संसारचन्द अपने बेटे अवतारे को गली का नाम ऐलान गली और अपनी मां की बहादुरी के बारे में बताते जब रात को मंदिर से आते समय वह चोरों को देखकर डर जाता। वह बताते है कि एक बार उनके घर चोर घुस गया था। तब अरुधंति अकेली थी। अरुधंति की होशियारी से वह चोर तीसरी मंजिल की खिडकी से नीचे गली में गिरा जिससे उसकी मृत्यु हो गई। फिर से ऐलान गली में चोर न आए इसलिए गलीवालों ने निर्णय लिया कि हर महीने चोरों को उनकी तरफ से बंधी- बंधाई रकम दीयी जाए और ऐसे ही गलीवाले चोरो के डर से ऐलान रहने लगे इसी कारण इस गली का नाम 'ऐलान गली' पड़ गया।

ऐलान गली के बच्चों को जब सर्दियों में स्कूल- कॉलेजों को छुट्टी होती थी तो सभी बच्चों को नीलकण्ठ काका की सनातन धर्म पाठशाला में उपस्थित रहना जरूरी था। किसी भी बच्चो में उन्होंने धर्म के आधर पर कभी भेदभाव नहीं किया। अवतारे के पिता संसारचंद का पूरा दिन ही भगवान की पूजा पाठ में बीतता। जब काका ने अवतारे के बारे में शिकायत की तो संसारचन्द ने पौथिया पढ अवतारे का यज्ञोपवीत संस्कार कर डाला। अवतारा अपने पिता के इस व्यवहार से संतुष्ट न था। एक बार उसने पिताजी को देर से कम्बल में बाँधकर ढेरो सिक्के लाते देखा तो उसने अपनी मां से इस बारे में कहा तब माँ ने दानपात्र के पैसे तो भगवान के मन्दिर के लिए होते है यह कहकर उसका मुंह बंद किया।

अरुधंति भी पुराने खयालों की औरत थी। वैसे तो गली के अधिकतर व्यक्ति पूराने खयालों के ही है। अरुधंति को ऐनक लगाने की जरूरत है ऐसा संसारचंद ने जब कहा तो वह राजी न हुई - ऐनकवाली औरत, फैशनवाली औरत यह उसकी धारणा थी। अरुन्धती सुच्ची औरत थी - इसीलिए तन की पवित्रता के बचाव के लिए वह नदी नालों की शरण अन्तिम सत्य की तरह स्वीकार करती है। इसी कारण मुहल्ले के जबरदस्त भाईचारे के बावजूद उन्होंने सोन्दर मल की किरायेदारनी से मेल-जोल नहीं बढ़ाती।अरुन्धती का मानना है कि लड़कियों ने अपनी मर्यादा में रहना चाहिए।

पढ़ाई लिखाई कर वह क्या करेगी आखिर तो एक दिन ब्याह करके किसी के घर चूल्हा ही फूंकना है, छाज छलनी ही पकड़नी है।

सुबह होते ही मुर्गों की बांग, चिड़ियों की चहचाहट और संसारचंद के श्लोकों के आवाज सुन अवतारा समझ जाता कि सुबह हो गई है। इसी गली में चालीस उम्र के बाद भी सुंदर दिखने वाली और खुले विचारों की रत्नी भी रहती है। इसी कारण मुहल्ले के मर्द लोग उससे मोहित होते हैं इसलिए अरुंधति उससे नफरत करती हैं। जब रूपा चार साल की थी तब टायफस के महारोग ने रूपा की दादी, पिता और दो बड़े भाई की मौत हो गई थी। बारह घंटे पति की लाश पड़ी रही तो इस लाजवंती रत्नी ने घूंघट उलटकर पति की अंतिम क्रिया कर्म के लिए चमारों को बुलाकर साहस दिखाया। वह लोग क्या सोचेंगे इस बारे में नहीं सोचती और अपने मन से खुलकर जीती हैं। यही साहस आज के अधिकतर स्त्रियों में भी दिखाई देता है।

रत्नी की बेटी रूपा भी उसी की तरह सुंदर थी। अवतारे को रूपा दी से अधिक लगाव था। रूपा के साथ शुभी नामक एक लड़की काफ़ी रहती थी। शुभी पास रहनेवाली कमली की बेटी थी, जो एक रिफ्यूजी थी। अरुंधति के कहने के अनुसार कमली को कबाइली ले गए थे। उनके सरदार को वह बहुत पसंद आई। उसका भाई पुलिस में है, उसके कहने पर सरदार ने उसकी कुंवारी बहन से निकाह किया। लेकिन लड़ाई में सरदार मारा गया और कमली रातों रात निकल भागी। वहा से यहां आते समय बॉर्डर पर वह जवानों के साथ रही। उसका बेटा चमना एम. एस. सी. पास कर स्थानीय कॉलेज में लेक्चरर भी हो गया, पर रिफ्यूजी नाम सूखे एरलडाइट की तरह चिपका ही रह गया। कमली के विरोध न करने पर उनके नाम के साथ यह नाम जुड़ा रहा।

गली में रहनेवाले दयाराम मास्टर जी का मत था कि हर बात लोगों को नहीं समझाई जा सकती। शाम के समय गली में दयाराम मास्टर जी के घर में सब पुरुष मिलकर इधर उधर की बाते करते। बात करते समय कोई कबाइली हमले की बात करता तो कोई शेख साहब को शेरे 'कश्मीर' कहता, कोई बहादुर शाह ज़फ़र को, तो कोई राणा

प्रताप सिंह को। तभी घर के अंदर से किसी की सिसकियां सुनाई देती। यह सिसकियों की आवाज मास्टर जी की बेटी की थी। मास्टर जी की पढ़ी लिखी एम.ए पास लड़की भरी जवानी में मुरझा गई थी। कारण था कि वह कम पढ़े लिखे लड़के से प्रेम करती थी, परंतु मास्टर जी ने उसकी शादी कहीं और कर दी। इससे वह चुपचाप रहने लगी तब ससुराल वालो ने उसे पिता के घर भेज अपने बेटे की शादी कई और कर दी। पिता के घर भी बेटी चुपचाप एक कोने में बैठी रहती। उसे देख मास्टर जी अंदर ही अंदर घुटते रहते।

मास्टर जी का बेटा कुंदन, जो रुपा से प्रेम करता था। कुंदन इंटर में फेल होने पर मास्टर जी ने बिना कुछ पूछे, बिना कुछ बोले उसे बहुत मारा। तब कुंदन ने आत्महत्या की। किसी ने पुलिस को मास्टर जी के घर भेज दिया लेकिन बिजली की तार से करंट लगने की वजह से कुंदन की मौत हुई थी इसके चश्मदीद गवाह अनवर मियां थे। उनके कारण मास्टर जी और उनकी पत्नी सही सलामत छूट गए। अपने बेटे की असमय मृत्यु से मास्टर जी टूट गए थे। कुंदन की रुचि पढ़ाई में न होकर अभिनय में थी। वह बड़ा होकर मुंबई की फिल्मी दुनिया में जाना चाहता था, पर मास्टर जी को यह पसंद नहीं था। इस प्रसंग के जरिए लेखिका यह संदेश देना चाहती हैं कि बच्चा जवान होने पर उसकी गलती पर हाथ उठाने के बजाय उसे सही गलत समझाना चाहिए। दूसरी बात भले ही कुंदन पढ़ाई में कमजोर था लेकिन उसकी असली खुशी और रुचि अभिनय में थी। मां- पिता को अपने विचार या इच्छाए अपने बच्चो पर थोपने से अच्छा है कि बच्चो की रुचि का सम्मान करें।

गली के सबसे पसंदीदा व्यक्ती अनवर मियां पेशे से एक दर्जी थे लेकिन उनके स्वभाव की खासियत थी कि कोई भी दुःख - दर्द में हो वह उनकी मदद जरूर करते। अवतारा तो माता -पिता को बिना पता चले उनके घर जाकर शीरचाय पी लेता। पेशे से दर्जी होनेपर भी उन्हें दर्जी के बदले मास्टर जी कहते। यह दयाराम मास्टर जी सुनते तो उन्हे बहुत बुरा लगता। वे कहते- **“कहा मैं इतना पढ़ा - लिखा और कहा**

वह अनवर मियां, जिनसे मात्र दो -चार कक्षा पढ़ी होगी, उसमें और मुझमें क्या कोई फर्क ही नहीं। मैं भी मास्टर और वह भी मास्टर।"1 ऐलान गली की एक और खासियत थी कि कोई भी व्यक्ति अगर सपना देखता तो दूसरे दिन वह संसारचंद पुरोहित से मिलकर उस स्वप्न का फल जानना न भूलता।

अर्जुननाथ और लच्छी को अनेक कोशिशों के बावजूद भी कोई औलत न थी, फिर भी अर्जुननाथ बहुत कंजूस व्यक्ति थे। रोटी का चौथाई टुकड़ा रोज सुबह कुत्ते को डालकर अर्जुननाथ स्वर्ग जाने के सपने देखते। लच्छी और अरुंधति दोनों अच्छी सहेलियां थी। अवतारे के समय जब अरुंधति गर्भवती थी तब अरुंधति ने लच्छी से वादा किया था कि इस बच्चे को वह उसे देगी परंतु लच्छी ने कहा **"थोड़ा बड़ा हो जाएगा, तब मैं लूंगी।"2** अवतारे को गोद देने की बात जब अर्जुननाथ को पता चली तो उन्होंने साफ मना किया। लच्छी को अवतारे से विशेष लगाव था। इस लगाव को देखकर अर्जुननाथ ने अपने भाई के बेटे नाथे को गोद ले लिया।

अरुंधती और लच्छी दोनों सहेलियां अमावस के व्रत में साथ खाना खाते थे। इस बार अमावस के दिन अरुंधती के घर खाने का प्रबंध किया था, लेकिन शाम तक लच्छी अरुंधती के घर न आने पर चिंता से अरुंधती ने अवतारे को देखने भेजा। अवतारा जब आते ही लच्छी ने उसे पानी पिलाने के लिए कहा। अवतारे के पानी पिलाते ही उन्होंने हमेशा के लिया शांति ले लीयी। जैसे की वह अवतारे की ही राह देख रही थी। लच्छी के जाने के बाद अर्जुननाथ ने उनकी मौत पर खूब दान पुण्य किया और हरिद्वार चले गए। कुछ समय पश्चात जब वह लौटे तो उनके साथ एक स्त्री थी ,जिसका नाम रामप्यारी था, जो काफी नौजवान भी थी। रामप्यारी अर्जुननाथ से काफ़ी नाराज़ रहती। अर्जुननाथ भी उसे खुश करने के लिए कभी नए कपड़े लाते, कभी मिठाइयां लेकिन वह नाराज़ ही रहा करती। अर्जुननाथ ने कभी लच्छी पर इतना खर्चा नहीं किया। इतना सब करने के बावजूद भी रामप्यारी अर्जुननाथ को छोड़कर एक लड़के के साथ भाग गई। वह जाने के बाद रत्नी ने खबर लाई कि अर्जुननाथ

उसे कहकर लाए थे कि वह अपने बेटे से उसकी शादी करेंगे। जब अर्जुननाथ अपने साथ सोने का प्रस्ताव करने लगे तो वह भाग गई।

गली में अक्सर साधु - संन्यासी आया करते थे, उनमें से एक था - भूता। उससे कोई भी प्रश्न पूछता तो वह इस प्रश्न का जवाब बिलकुल सही देता और उसी जानकारी के कारण दयाराम मास्टर जी भूता से काफ़ी प्रभावित थे। उन्हें भूता के भाषण सुनकर ऐसा लगता कि वह कोई पढ़ा- लिखा फ्रस्टेटेड यूथ होगा। उन्होंने इस लड़के के बारे में खबर किया तो पता चला कि उसका नाम 'लंबोदर प्रसाद काकपोरी' हैं। काफ़ी समय के बाद जब शेरे कश्मीर की योजना आई कि इस तंग गलियों को तोड़ चौड़ी सड़क बनाई जाएगी, जिस कारण दोनों तरफ़ थोड़े बहुत मकान तोड़ने होंगे। इस खबर को सुनते ही लोगों में मातम छा गया। एक वाली कतार ढहाई जाए तो शिव जी का मंदिर बीच में आता है, और दूसरी वाली कतार ढहाई जाए तो मस्जिद बीच में आता है। इनमें से किसी को भी तोड़ने पर हिंदू - मुस्लिम दंगे भड़क सकने की सम्भावना थी। इसलिए अंतिम निर्णय लिया गया कि ऐलान गली जैसी है, वैसी ही रहेगी। भले ही देश का विकास हो गया हो लेकिन आज भी धर्म के नाम कई घटनाएं होती रहती है।

अवतारे ने इंटरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण कर मास्टर जी के सलाह पर बनारस यूनिवर्सिटी में इंजीनियरिंग में दाखिला ले लिया। अवतारा जब बनारस जाने के लिए निकला तो उसे छोड़ने के लिए ऐलान गली का हर सदस्य वहां मौजूद था। अवतारे की पढ़ाई का भार उठाते- ठाते संसारचंद के हाथ भी थोड़े तंग होने लगे। लेकिन अवतारे ने अपनी पढ़ाई खत्म होते ही तुरंत बाद राजस्थान के एक गांव में गणित के अध्यापक का कार्य शुरू किया। इसी बीच ऐलान गली में दो घटनाएं घटी। पहली सबको सलाह - मशविरा देनेवाले अनवर मियां के बेटे ने रिफ्यूजी कमली की बेटी शुभी से शादी कर ली, उस कारण बेचारे अनवर मियां को काफ़ी कुछ सहन करना पड़ा। अंत में अनवर मियां ने अपने बेटे और बहू को घर से निकाल दिया। कोई भी

घटना घटती है, तो शुरुवाती दिनों में उसका असर ज्यादा होता है, धीरे - धीरे वह कम हो जाता है। उसी प्रकार द्वारकानाथ की घटना। द्वारकानाथ बूढ़े थे, लेकिन उन्होंने अपने बेटे - बहुओं के समझाने को नजरअंदाज कर कम उम्र की एक गरीब लड़की से शादी कर ली। इसके पीछे कारण था कि बुढ़ापे में उनकी सेवा करनेवाला कोई हो। आज भी कई माता-पिता गरीबी के कारण अपनी बेटियों का अधेड़ उम्र के व्यक्ति के साथ विवाह करने पर मजबूर हो जाते है।

जाहिर है कि कोई भी काम करने दूर बाहर जाता है, तो वह जल्दी लौटकर नहीं आ पाता। उसी तरह अवतारे के साथ था। जब वह डेढ़ - दो साल बाद लौटकर अपनी गली में आया। तो गली में हुआ परिवर्तन देख बहुत हैरान हुआ। यहां गली के विकास के बारे में नहीं बल्कि गली में रह रहे लोगों के जीवन परिवर्तन की बात केंद्र में है। अवतारे के घर का बटवारा हो गया और दोनों भाई अलग- अलग रहने लगे। वर्तमान समय में एकल परिवार की संख्या अधिक दिखाई देती है। भले ही दो सदस्य अलग रहना चाहते हो, लेकिन इस बटवारे का पूरे घर के सदस्यों पर असर होता है। कुछ दिनों के पश्चात यह ख़बर मिली कि अवतारे को बंबई में पक्की नौकरी लग गई है। यह ख़बर सुन अवतारे की मां तो खुश हो गई परंतु उनके पिता संसारचंद दुःखी होकर सोचने लगे कि अवतारा बंबई जैसे महानगर में जाकर वही के रंग - ढंग में खो जाएगा और वहीं का हमेशा के लिए हो जाएगा। दयाराम मास्टर जी ने संसारचंद को चिंतित अवस्था में देख, उन्हें समझाते हुए कहा कि हमारे यहां इतनी फैक्टरीया आदि सुविधाएं नहीं है, जिससे युवाओं को रोजगार मिले। इसलिए उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद बच्चों को बाहर रोजी- रोटी के लिए जाना पड़ता है। ऐसे कितने ही युवा, शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी बेरोजगार हैं। सुख सुविधाएं उपलब्ध न होने से अनेक व्यक्ती अपने गांव को छोड़कर महानगरों में जाने के लिए मजबूर हो जाते है। कश्मीर में भी यहीं स्थिति आज भी देखने मिलती है।

अवतारा जितने दिन भी यहां रहा उसने महसूस किया कि अब वह गली में रौनक नहीं रही, जैसे पहले थी। एक दिन उसने देखा कि गली के अमरनाथ और अर्जुननाथ दोनों अपनी- अपनी खिड़की पर बैठकर बातचीत कर रहे थे, तभी अमरनाथ के बेटे ने उन्हें देख वहां आकर अपने पिताजी को बहुत बातें सुनाई। यह अजीब व्यवहार अवतारे के लिए बिल्कुल नया था। बेहतर जिंदगी की तलाश में अवतार बंबई जैसे महानगर में तो चला गया, लेकिन उसे अपनी ऐलान गली की याद बार -बार आया करती। बंबई में उसका बिल्कुल मन नहीं लगता था, क्योंकि ऐलान गली की तुलना में बंबई जैसा महानगर अलग ही था। वहां का रहन- सहन, सोच बिलकुल अलग ही थी। महानगरों में किसी को भी किसी से मतलब नहीं होता है, बस सभी अपने में ही मस्त रहते हैं।

अवतारा बंबई में अपने एक दोस्त के निमंत्रण पर उनसे मिलने उनके घर पहुंचा। अपनी दोस्त की पत्नी और बेटे से मिलकर उसे बहुत खुशी हुई। जाहिर है खुशी तो होगी ही क्योंकि ऐलान गली में सभी लोग मिलझुलकर रहा करते थे,भले ही अब परिस्थिति बदल गई हो। वहा जाकर उसे बहुत अच्छा लगता इसलिए वह हफ्ते दो हफ्ते में सबसे मिलने वहा जाया करता। वहीं पर अवतारे की मुलाकात पवार साहब की बेटी दिव्या से हुई। दिव्या ने अपनी पहली मुलाकात में ही अवतारे को प्रभावित कर दिया। दिव्या ने अवतारे को अपने घर आने का निमंत्रण भी दे दिया। अवतारा दिव्या के निमंत्रण पर उसके घर गया तो वह घर की हालत देख चौंक - सा गया। उनके घर में पवार साहब अपनी तीन बेटियों के साथ अकेले रहते थे। बंबई जैसे महानगर में यह सब साधारण सी बात थी। लेकिन अवतारे ने यह सब इससे पहले कभी नहीं देखा था। पता चला की यह हालत सिर्फ उनके घर की ही नहीं बल्कि आसपास रहने वालों की भी थी। आज तो यह सब आम बाते है।

दिव्या काफ़ी खुले मिजाज़ कि लड़की थी। दिव्या गाईड का काम करती थी। अवतारे के साथ बातचीत करते समय उसने अपने प्रेम का इज़हार अवतारे से कर उसे गले

लगा लिया। इन सबके बावजूद भी अवतारे को अपने ऊपर बहुत चीड़ होती कि क्यों वह दिव्या के इतने करीब आ गया। कुछ दिनों के बाद वह अपने घर जाने के लिए निकला तो दिव्या उसे स्टेशन पर मिलने आई। अवतारे के उदास चेहरे को देखकर वह समझ गई कि उसके मन में कुछ चल रहा है। अवतारे को पता था कि उसके घर में उसके विवाह की बात चल रही है, तो उसने दिव्या को स्पष्ट शब्दों में कहा - **'मेरे अंदर इतना साहस नहीं है कि मैं अपने घरवालों की बातों को न मानकर अपनी करूं।'3** दिव्या ने अवतारे की बात बहुत ध्यानपूर्वक और सहजता से सुनकर कहा - **'सारी बातों को जानते हुए भी मैं तुम्हारा इंतजार करूंगी।'4** अवतारे जैसा आज के समय में हजारों में कोई एक होगा जो अपने माता-पिता के इच्छा के लिए अपने प्यार की कुरबानी देगा।

वहां पहुंचते ही उसे रत्नी चाची की बीमारी के बारे में पता चला। रूपा जो खुले विचारों की, हमेशा हंसते खिलखिलाते रहती थी, वह भी अपने प्रेमी कुंदन के जाने के बाद चुपचाप सहमी- सहमी रहने लगी। अवतारे को रूपा दी को देखकर यह महसूस हुआ कि वह कुंदन की यादों से मुक्त रहने के लिए अपने आपको घर के कामों में इतना व्यस्त रखती कि उसे कुंदन की याद न आए। अवतारे ने रत्नी चाची के कहने पर रूपा दी से बात करते वक्त शादी की बात कही। शादी का नाम सुनकर रूपा पहले तो उदास हो गई फिर अपनी मां रत्नी की तबीयत के बारे में सोचकर और उनकी अंतिम इच्छा पूर्ण करने हेतु उसने शादी के लिए सहमति दे दी। साथ ही अरुंधती ने अवतारे के लिए भी अपनी पसंद की लड़की ढूंढ ली। अरुंधती ने अवतारे को शादी के लिए उस लड़की के बारे बताया तो उसने बहुत आसानी ने से, बिना कुछ कहे इस शादी के लिए अपनी सहमति दर्शाई।

अरुंधती और रत्नी दोनों कुछ महीनों से बहुत नजदीक आ गई थी। रत्नी तो बीमार थी लेकिन अरुंधती ने रूपा और अवतारे की शादी में कमर - कस मेहनत की। हर माता - पिता का सपना होता है कि वह अपनी बेटी का कन्यादान कर उसे हंसी-

खुशी विदा करे। उसी तरह रूपा की शादी में रत्नी ने कुर्सी पर बैठकर उसका कन्यादान कर खुश हो गई। रूपा का पति नरेंद्र शादी के दूसरे दिन ही अपनी सास रत्नी को अपने घर लेने आया। गली वालों ने कहा कि वे रत्नी का ध्यान रखेंगे, उसे यहां से ले जाए। परन्तु बड़ी ही विनम्रता से सबका धन्यवाद करते हुए नरेंद्र रत्नी को अपने साथ ले गया। रूपा दी के विवाह होने के बाद अवतारे का विवाह जया से हुआ। दोनों ही अपनी गृहस्थी संभालने लगे ही थे की अवतारे की महीने भर की छुट्टियां खत्म होने लगी। अवतारे को सबके साथ मिलजुलकर रहना पसंद था। इस कारण उसने अपनी मां अरुंधती और अपनी पत्नी को अपने साथ आने का प्रस्ताव रखा। लेकिन अरुंधती ने जाने से मना किया और न ही अपनी बहु को भेजा।

अवतारा जब भी छुट्टियों में अपने घर आता अपने सभी प्यारे दोस्तों से अवश्य मिलता। इस बार अवतारा छुट्टियों में आया तो उसके दोस्त चंदन, शामू, करीना, बंता, तेजा और अवतारा ने मिलकर पिकनिक जाने की योजना बनाई, जो सफ़ल भी की। पिकनिक जाते समय बस की खिड़की से बाहर देख वह अपने खूबसूरत अतीत की यादों में खो गया। नगीन लेक में पालवाली नावों पर, लहरों के साथ बहते वे चुपचाप नीले पहाड़ों के ऊपर घूमते भापीले बादलों के बनते - बिगड़ते आकार देखते एक - एक कर सब अपनी बातें बताने लगे कि नौकरी के लिए सबको किन- किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनमें से एक कहता है कि उसे नौकरी करने बाहर जाने की इच्छा थी, लेकिन मां - पिता ने कहा कि हमारे पास है उसी से हम गुजारा कर लेंगे, पर तुम कहीं मत जाना।

दूसरा कहता है कि 'पढ़ - लिखकर मैं बंगलौर गया। वहा मेरी अच्छी नौकरी है, आगे उन्नति की भी संभावनाएं हैं। परंतु मुझे उस नौकरी के लिए कश्मीर के संबंध में किन किन सवालों के जबाव देने पड़े। जैसे - कश्मीर से बंगलौर नौकरी करने क्यों आया ? और चेयरमैन का सवाल था कि भारत सरकार तुम्हारे लिए इतना कुछ करती है, विशिष्ट सुविधाएं, योजनाओं के लिए अधिक ऋण देती है, फिर भी भारत

का कोई भी व्यक्ति कश्मीर की जमीन खरीद नहीं सकता या वहा बस नहीं सकता। कश्मीर के लोगों ने जब अपने को अलग कर लिया है, तो तुम यह उम्मीद क्यों करते हो की भारत के किसी भी भाग में तुम्हें नौकरी मिलेगी ? तीसरा कोई कहता है कि वह कश्मीर में स्थित अपनी ऐलान गली में ही अपने पिता का दुकान संभाल रहा है। सभी अपनी -अपनी मजबूरी या दिल की बाते एक - दूसरे से कह रहे थे लेकिन उनमें से चंदन चुपचाप सब सुन रहा था। तभी शामू ने कहा कि अगर मैं चंदन की जगह होता तो बाहर नौकरी करने चला जाता।

चंदन दयाराम मास्टर जी का छोटा बेटा था। उसने अपने घर में घटते दो - दो हादसों को करीब से देखा था। एक अपने भाई की आत्महत्या और दूसरी अपनी बहन के पागलपन के पीछे का इतिहास। इसलिए वह बहुत सहम - सा गया था। बचपन से ही गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित चंदन कहता है - '**जब मेरा प्रदेश मेरी क्षमताओं के लिए छोटा पड़ जायेगा, तब मैं पूरे विश्व में घूमने निकल पड़ूंगा। फिलहाल तो यहीं ठीक हूं।'5** चंदन की यह बाते सुन अवतारा ही नही बल्कि सभी दोस्त उससे प्रभावित थे। समय होते ही सभी बस में बैठकर घर जा रहे थे। अवतारे को कई आवाजे सुनाई दे रही थी। जैसे अनवर मियां की बूढ़ी लड़खड़ाती - सी आवाज ,'**अपनी जमीन के अहसासों को कभी न भूलना बच्चो! जमीन मां होती है। मां - बाप के कर्जे की तरह उसका कर्जा भी कभी नहीं चुकता।'6** तभी अचानक जोरदार हार्न के साथ बस रुक गई। अवतारे की खिड़की के नीचे बस के साथ पीठ टिकाए सिर से पैर तक कंबल में लिपटा कोई पगला सिर हिला -हिलाकर गाता जा रहा था,**'कल्हण, गनी ते सर्फी, सैराब करि यमि आबन, सुय आब सान्य बापथ, ज़हरे हिलाल आस्था ?'7** इसका अर्थ इस प्रकार था कि - जिस धरती के जल से कल्हण, गनी और सर्फी जैसे विद्वान फले - फूले, क्या वही जल हमारे लिए हलाहल विष बनेगा ? अवतारे को आवाज जानी पहचानी लगी उसने चौंककर खिड़की से बाहर देखा, तो वह भूता, जिसका नाम लंबोदर प्रसाद काकपोरी था। अवतारा मन ही मन सोचने लगा कि महानगरों में ऐसी स्थिति है कि कोई पास में रहकर भी एक- दूसरे को पहचान नहीं

पाता। उन्हें एक - दूसरे से कोई मतलब नहीं है। परंतु अपने गांव के भूता को जिसे बचपन में देखा था वह आज भी याद है। इतने सालों के बाद भी वह उसे पहचान पाया।

लेखिका ने यह उपन्यास एक गली से संबंधित होने के कारण आंचलिक भाषा का प्रयोग किया है। सरल शब्दों में अपने विचारों को व्यक्त किया, जिससे हर व्यक्ति आसानी से समझ सके। प्रतीक, बिंब, मुहावरों का भी प्रयोग इस उपन्यास में किया गया है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्याय में चंद्रकांता के 'ऐलान गली जिन्दा है' उपन्यास को समीक्षा से स्पष्ट होता है कि लेखिका ने कश्मीर के एक गली को चुना है। जहां हर धर्म, जाति के लोग अपनेपन से रहते हैं। स्वर्ग कश्मीर के हाशिये पर रह रहे लोगों के दुःख, दर्द आदि से लेखिका ने परिचय कराया है। ऐलान गली की ज्यादातर युवा पीढ़ी रोजगार की तलाश में महानगरों की ओर जाती दिखाई देती हैं। उन महानगरों में वह अपनी ऐलान गली जैसे अपनेपन को तलाश रही है परंतु वह अपनापन उन्हें बिलकुल नहीं मिल रहा है।

❖ कथा सतीसर

चंद्रकांता जी के 2001 में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित 'कथा सतीसर' उपन्यास में सन 1931 ई. से सन 2000 ई. के शुरआती समय तक कश्मीर के परिवर्तन की कथा है। उपन्यास की शुरुआत में सतीसर की कथा के बारे में बताया गया है। कश्मीर के प्रथम हिंदू राजा गोनंद को कई हज़ार वर्ष पहले मुनि बृहदश्व ने 'सतीसर' कथा आरंभ से अंत तक सुनाई थी। प्रलय के उपरांत जब चारों तरफ़ जल था। उस समय सती शिव रूपी जल सृष्टि में नौका बनी और भगवान विष्णु ने मत्स्य रूप धारण कर उस नौका को खींचकर दक्षिण - पश्चिम में नौ बंधन की चोटी

पर बांध दिया। तब सती ने भूमि रूप धारण कर लिया। नाव बने सती ने भूमि रूप धारण करते ही बृहदश्व ने कहा -

"नौदेहन सती देवी भुमिर्भवति पार्थिव।

तस्यान्तु भूमौ भवति सरस्तु विमलोदकम।।"8

कथा में 'छह योजन' लंबे और 'तीन योजन' चौड़े सतीसर का वर्णन किया है, जहां जलोदभव राक्षस है, और उसने नागों के राजा नील को त्रस्त किया। यातनाओं से त्रस्त राजा नील ने अपने पिता कश्यप ऋषि को उस राक्षस से मुक्ति दिलाने की विनती की। कश्यप ऋषि ने उस राक्षस से छुटकारा दिला दिया। इसके बाद मुनि ने सुंदर वादी का वर्णन किया। कश्यप ऋषि के नाम पर ही यह वादी कश्यपमर यानी कश्मीर कहलाई। देवी देवता भी यहीं रहने लगे। लेखिका इस कथा के माध्यम से यह कहना चाहती है कि जलोदभव राक्षस का तो अंत हो गया लेकिन आज भी यह राक्षस नए रुप में मौजूद हैं।

'कथा सतीसर' उपन्यास के केंद्र में नब्बे साल की लल्लेश्वरी है, जिसे छोटे - बड़े सभी लल्ली कहते हैं। लल्ली ने पूरी उम्र भर घर की धुरी की तरह काम किया और अपने सोच से नए रास्ते निर्माण किए। उम्र के इस पड़ाव पर आकर वह अतीत, भविष्य और वर्तमान में इस प्रकार उलझ गई है कि नब्बे साल में वह पागल होने का अनुमान लगाया गया।

नब्बे वर्ष की लल्ली अपने वतन से दूर अपने बेटे के साथ न्यू जर्सी में रहती है, परंतु वह अपने वादी से बहुत प्यार करती है और उसकी ओर खींची आ रही है। शाम को जब लल्ली आरामकुर्सी पर बैठी थी तो उसे अपनी वादी का भ्रम हुआ कि पेड़ो के झुरमुट के पीछे सुरमई मेमने सिर उठाते दिखे। तो उसने तुरंत अपने बेटे नंदन से पूछा कि -**"उधर उन पेड़ों के पीछे पहाड़ों की चोटियां- सी दिख रही हैं न, बेटे ? नव बंधन की तीन चोटियां।"9**

तो बेटे ने उत्तर दिया कि **“पहाड़, यहां कहां पहाड़, मां ?”3** तभी बेटे नंदन ने नई नज़र से अपनी पुरानी मां को देखा। कल टी.वी पर देखा समाचार लल्ली को याद आता है, जिसमें एक राजनेता लोगों को वापस कश्मीर में आने के लिए कहता है तब लल्ली के मन में एक उम्मीद जाग जाती है और वह बहुत प्रसन्न हो जाती है परंतु दुसरे ही क्षण दूसरा राजनेता कश्मीर को सुरक्षित न कहकर लल्ली की उम्मीद पर पानी फेर देता है। उसी वक्त मां की निराशा को देख नंदन मां को दिलासा देता है कि बहुत जल्द सब ठीक हो जाएगा। लल्ली को बिना नींद की गोली लिए नींद नहीं आती है। उसकी बहू उसे बिस्तर पर लिटा देती हैं लेकिन वह अपने बचपन के बारे में सोचती है कि किस तरह वह नींद न आने पर रास्ते पर जाकर बकरियां गिनती थी। वह आंखे बंद कर अपने ही खयालों में खो जाती है। इसी खयालों में आश्चर्य और आतंक की भरमार है। वह एहसास कराती हैं कि वह अपने मिट्टी से दूर न्यू जर्सी या विदेशी मिट्टी में ही जज्ब हो जाएगी। वह सोचती हैं कि आठ वर्ष पहले वह अपनी मिट्टी से अलग हुई थी तथा पुरखों की मिट्टी अपने नसीब में नहीं है। उसे अपनी बेटी कात्या की याद आती हैं। जो वादी से अब तक अलग नहीं हुई है। जिसने कहा था कि अगर हालत ठीक हुए और तब तक लल्ली जिंदा रही तो वह अवश्य वहा बुलाएगी। लल्ली अब अपनी बेटी कात्या की प्रतीक्षा कर रही थी कि कब वह अपने को वादी में बुलाएगी।

लल्ली अपने अतीत के ख़यालो में खोई हुई है। रहमान जू का तांगा उसे लेने आया है। मां , चाची, बहनें उसे विदा देने आए और खुर्शीद बाह पकड़कर उसे तांगे पर बैठा रही है। बैठने पर तांगा अपने रास्ते चल पड़ता है। ज्योतिषी आनंद जू शास्त्री को तंत्रालोक के रचयिता अभिनवगुप्त की शिव - स्तुति कंठस्थ प्राप्त थी। उनके मुख से निकला हर वेद - वाक्य हो जाता , इसलिए माहौल में दशहद की गर्द होते हुए भी कोई उनके द्वारा दिए मुहूर्त की अवहेलना नहीं करता था। वे कहते कि - **“मुहूर्त, मुहूर्त है जजमान! चाहे धरती फट रही हो या आकाश उफन रहा हो, घड़ी - मिनट का भी अंतर नहीं आना चाहिए।”10** लल्ली को ससुराल भेजने के लिए पैंसठ

साल पूर्व शास्त्री आनंद जू ने आषाढ़ शुक्ल पक्ष तृतीया का मुहूर्त निकाला था तब लल्ली मां बनने वाली थी, और इसी खुशी से ससुराल की ओर चली। बीच में हुड़दंगी आए थे वे भी ठिठककर रह गए और गाड़ी में दही - कुंडों के ऊपर मलाई जमी उसकी परत भी नहीं टूटी। इस प्रसंग से यह स्पष्ट हो जाता है कि साक्षात भगवान जी ने उनकी रक्षा की तथा आनंद जू ने निकाला मुहूर्त बिलकुल सही है।

लल्ली को ससुराल ले जाते समय कृष्ण जू ने रहमान तांगे को चेतावनी दी थी कि वह संभालकर ले जाए क्योंकि एक तो लल्ली की तबेत बहुत नाजुक थी और माहौल भी कुछ ठीक नहीं था। रहमान आश्वस्त करता है कि वह दस साल की उम्र से तांगा चला रहे हैं, अब उसे पंद्रह साल हो गए है। उसने कभी किसी को शिकायत का मौका नहीं दिया था। फिर भी उसने एक पिता की चिंता को समझते हुए कहा कि, **"अल्ला ताला मालिक है, फिक्र मत करना।"11**

लल्ली के पिता कृष्ण जू ने नाथ जी को लल्ली के साथ खुर्शीद को देखरेख के लिए छोड़ने के लिए तैयार किया। रहमान ने तांगा आगे बढ़ा दिया। बेरी कुंज के मजार पर बारिश में भीगती हुड़दंगियों की दस - बारह टोली तांगे की तरफ आई और उसमें से दो व्यक्ति तांगे के पास आते हुए जोर से चिल्लाए **"साले जहान के! लाम पर जा रहा है।"12** गाली देते हुए घोड़े की लगन खींच ली। तब दाई मां खुर्शीद ने उन्हें बड़े ही शांति से कहा कि **"भाया, बेटी के अस्पताल ले जा रहे हैं। दर्दे उठी हैं। खुदा के वास्ते रास्ता छोड़ दो। मां -बहनवाले हो। खुदा के लिए रास्ता छोड़ दो।"13** यह कहने के बाद एक व्यक्ति अंदर झांकने लगा तभी खुर्शीद ने कड़ककर कहा कि अगर भरोसा नहीं है तो बुरखा खोलकर अपनी बहन को देखोगे ? उसकी आवाज ने वह आश्चर्यचकित हो गया। अतः अंत में उन्होंने उन्हें जाने दिया।

उनका तांगा सत्तू के बंड से गुजरते हुए श्रीरामचंद्र मंदिर के पास से पहुंचा तभी लल्ली ने ईश्वर को धन्यवाद देते हुए अपने हाथ जोड़ माथा झुकाया। लल्ली के ससुराल में लल्ली का बेसब्री से इंतज़ार हो रहा था। उसके स्वागत के लिए ससुर

अजोध्यानाथ के घर दोस्त - रिश्तेदारों की भीड़ लगी हुई थी। पुरूष और स्त्रियों की सोच-विचार में जमीन आसमान का फरक दिखाई देता है। पुरूष आपसी कुशलमंगल के साथ ही पुराने राजा - महाराजाओं से जलियांवाला बाग हत्याकांड ताज की बात करते तथा गांधी, नेहरू तक पहुंचते पहुंचते बात खत्म करते। और स्त्रियों में एक दूसरे से घर - परिवार , रसोई , जवान होते बेटे - बेटियों के रिश्ते जोड़ने की बातें होती। तभी अचानक जियालाल मास्टर जी ने हड़बड़ी में आकर खबर दी कि सभी जगह हुड़दंग मच गया है, लोग पागल हो गए है। आगे मास्टर जी कहते है कि - **"मैं भगवान - भगवान कर निकल गया।... आपने भी अजोध्या भाई कौन-सा , दिन चुन लिया रस्म - अदायगी के लिए! बहू मंगल - कुशल घर पहुंच जाए, शिव शंभो की कृपा से,तो बड़ी बात समझो।"14**

इस खबर को सुनते ही अजोध्यानाथ जी चिंता में पड़ गए। उस परिस्थिति में महदू भी विचार करने लगा कि रस्में इतनी जरूरी क्यों होती हैं। वहां उपस्थित सभी लल्ली की चिंता में थे उतने में ही अचानक तांगा रुखने की आवाज आई। तांगे के आवाज को सुनते ही सभी की चिंताएं और बातचीत रुख गई। लल्ली के सही सलामत पहुंचने से वहा का माहौल एकदम बदल गया। घर की बुजुर्ग बड़दादी के साथ लल्ली का परंपरागंत स्वागत किया गया। बातचीत में खुर्शीद ने बड़ा चढ़ाकर रास्ते में हुई घटनाएं सुनाई। लल्ली के सुखरुप घर आने से घर में नाच गाना हुआ। सगुन, नेग की सभी रस्में हुई और नाथ और रहमान का आतिथ्य कर उन्हे विदा किया। लल्ली के पति केशव को इन रस्मों से चीड़ थी, लेकिन वह इसका विरोध नहीं कर सकता था। उसके हिसाब से यह रस्में केवल एक तमाशा थी। केशव अपनी पत्नी लल्ली से बहुत प्रेम करता था लेकिन वह जाहिर नहीं करता। परंतु लल्ली के मायके से यहां आने तक की जो घटना हुई उसमे केशव ने लल्ली से चिंता व्यक्त की कि अगर लल्ली को कुछ हो जाता तो उसका जीवन रसहीन हो जाता।

लल्ली इतनी थक गई थी कि उसकी आंख सुबह ही खुली। उसने सपना देखा कि अपनी चारों तरफ़ अधकटे , रुंड- मुंड और किनारों पर बेतहाशा भागते हुए लोगों का हुजुम जैसे कोई भयानक राक्षस घुस गया हो और हलबली मचा रहा हो। यह सपना देख लल्ली को लगा कि जल्लोदभव राक्षस दोबारा आ गया है। उसे अब डर लगने लगा कि कुछ बुरा न हो जाए। फिर पता चला कि उसकी ननद सोना के पति माधव जू की दंगाइयों ने मृत्यु कर दी।घर के किसी भी सदस्य के अचानक छोड़ कर जाने से पूरा घर हील जाता है। यह ख़बर सुनते ही सभी पर बिचली गिरी। सभी उसकी लाश को लाने जब गए तो पता चला कि दंगाइयों ने पटवारी माधव जू की लाश के टुकड़े टुकड़े किए हैं। वहा जाकर टुकड़ों की पहचान कर उन्हें समेट लाना इस आतंक के माहौल में आसान नहीं था। पुलिस हिफाजद में माधव जू के अवशेष ले आए और अंतिम संस्कार कर उन्हें मुक्ति मिले इसलिए प्रयत्न किए गए जैसे - हरिद्वार में अस्थि विसर्जन, श्राद्ध और तर्पण किए जाते हैं।

लल्ली की ननद सोना को दो बच्चें थे और तीसरा बच्चा उसके पेट में पल रहा था। सोना को इस बात का अहसास हुआ कि उसे अपने बच्चों के साथ तथा अपने पति माधव के बिना अकेले ही जीना पड़ेगा। उपन्यास में सनातनी धर्मी ब्राह्मणों का पुनर्जन्म में बहुत विश्वास था। उनका तर्क था कि माधव जू की मृत्यु स्वाभाविक नहीं थी, इस कारण उनकी आत्मा मृत्यु- योनि में भटकता रहेगा, जब तक उन्हें इच्छित कोख नही मिलती। इस बात की संभावना भी है कि माधव अपनी पत्नी सोना के गर्भ से बेटे के रूप में जन्म ले ले।

कुछ समय के बाद लल्ली को दर्द होने पर उसके ससुर अजोध्यानाथ उसे अस्पताल ले गए। दो दिन दर्द सहने पर लल्ली ने एक बेटी को जन्म दिया। लल्ली की सास को जब पता चला की लल्ली को बेटी हुई है तो उनके स्वर में हताशा और दिलाशा दोनों थी। उसका मुंह उतर गया था, बेटा होता तो वह फूला न समाती। नवजात बच्ची की रोने की आवाज आने पर वार्ड में गोरी नर्स ने चौकित होकर कहा कि -

“अरे पिद्दी सी जान और इतनी जबरदस्त चीख।”15 केशव प्रगतिशील व्यक्ति था। उसने पत्नी के चिंतित और थके चेहरे प्रश्नाकूल आखों से कई प्रश्नों के जवाब माथा चूमकर दिया और साथ ही बधाई भी दी। उन दिनों बाहर के वातावरण में तनाव बढ़ने लगे थे। अब्दुल कादिर पठान के भड़काऊ भाषण सुनकर दंगाइयों ने सेंट्रल जेल पर हल्ला कर पुलिस पर पत्थर बरसाए। पुलिस ने भी उनका जवाब लाठीचार्ज और गोलियां बरसाकर किया। इन सबका नतीजा यह हुआ कि कहर बरपा। एक भाई दूसरे भाई का दुश्मन बन गया तथा वादी में मुस्लिम कांग्रेस की नीव पड़ने से, दूध और शक्कर की तरह रहनेवाले हिंदू - मुस्लिम भाइयों के बीच दीवार खड़ी हो गई।

लल्ली के पिता कृष्ण जू और मां सरस्वती ने दूसरी नातिन के जन्म ने पर जो कुछ महसूस किया वह अपने में रख नवजात बच्ची को रस्मों पर ढेर सारे आशीष दिए। बच्ची के नामकरण के लिए पंडित जी ने ‘म’ अक्षर कहा था। लेकीन केशव का पसंदीदा नाम कात्यायनी रखा गया पर राशि का मान रखने के लिए मुन्नी नाम भी रखा गया। बच्ची का नामकरण बड़े धूमधाम नहीं किया क्योंकि सोना के पति की मृत्यु का घाव अभी ताजा था। इसी बीच सोना को भी बेटा हुआ, जिसका नाम कन्हैया रखा गया तथा उसके पालन- पोषण की जिम्मेदारी बड़दादी ने ले ली। खुर्शीद लल्ली के सुतक खत्म होते ही (कात्या के जन्म के चालीस दिन बाद) अपने पति सुबहान मल्लाह के साथ घर के लिए निकली। जाते समय रास्ते में न जाने खुर्शीद को किसी के व्यवहार में फर्क नजर न आते हुए भी क्यों एक बेगानेपन का एहसास हुआ। उसे यह बखूबी पता था कि इसके कारण बाहरी थे। बाहरी ताकतों के बहकावे में आकर लोगों ने दंगे शुरू किए। अपना राज्य, अपनी हुकूमत के जुनून ने लोगों को अपनी गिरफ्त में लेना शुरू कर दिया था। इतने बरसों के कमाए गए विश्वास, प्यार, अपनेपन सभी एक झटके में टूट गए। भाई - भाई एक दूसरे की जान के दुश्मन बन गए।

इन सबका परिणाम यह हुआ कि - सालों से कृष्ण जू की हजामत बनाने वाला अली नाई अब नहीं बनाता था। अजोध्यानाथ के घर में चलती अनेक बहसों का रुख खुर्शीद और महदू के सामने पलट दिया जाता। रहमान तांगा तक नाथ जी से बिना वजह कतराने लगा। माहौल इस तरह बदल गया कि सालों से कमाई इज्जत, ईमानदारी और विश्वास टूटकर इसमें शक पनपने लगा था। लल्ली के जन्म लेते ही लल्ली की मां सरस्वती की तबयत के कारण लल्ली को दूध पिलाने का सामर्थ भी उनमें नहीं था। इसलिए लल्ली को खुर्शीद ने अपना दूध पिलाया और उसे अपने गोद में लेते ही उसकी मां बन गई थी। सरस्वती ने बड़ी ही दयनीय आवाज में खुर्शीद से कहा था कि **"यह नन्ही जान तेरे आसरे है खुर्शी बन्यी। मैं तो जन्मभर देने की मां हूं। उसे अपनी कोख जायी समझना।"16** पहले की स्थिति और आज की स्थिति से कोई सामंजस्य खुर्शीद नहीं बिठा पा रही थी, इसके बावजूद भी वह सिर्फ मां थी।

खुर्शीद की तंद्रा भंग होनेपर उसने अपने पति को देखा जो पानी में चप्पू चला रहा था। खुर्शीद के पति का काम था कि लोगों को झेलम के एक किनारे से दूसरे किनारे बिना रुके पहुंचाना। अंगरेज सेनानियों को भी वह इस झील की सैर करता। इस काम में वह इतना निपुण था कि आज तक उसने कोई हादसा नहीं होने दिया था। एक हादसे को सुबहान मल्लाह ने अपने अनुभव से होते - होते बचाया था। इसका जिक्र कृष्ण जू बार - बार किया करते थे। खुर्शीद बिस्तर पर लेटकर सोचती हैं कि सभी लोग मिलजुलकर, भाईचारे के साथ रहते थे परंतु आज ऐसा क्या हो गया कि सभी एक दूसरे को शक की निगाह से देखने लगे है। उसे लल्ली के घर जो अपनापन मिलता था उसकी याद आती हैं।

लल्ली को कात्यायनी के बाद इस बार लड़का हुआ। लड़के के जन्म से अजोध्यानाथ के घर खूब खुशियां मनाई गई। मुन्ने के जन्म के बाद लल्ली मायके गई तो खुर्शीद लल्ली को रोज सुबह देखने आती और शाम को लौट जाती। बच्चे की सेहत भी ठीक थी, इसलिए सरस्वती ने भी खुर्शीद को रुकने का जिक्र नहीं किया। लल्ली कभी-

कभी खुर्शीद से शिकायत जरूर करती कि आप मुझसे दूर हो गई है, पहले जैसा अब प्यार नही करती। समय के साथ रिश्ते किस तरह बदल जाते हैं इसका उदाहरण खुर्शीद और लल्ली को देखकर अंदाजा लगाया जा सकता है।

कात्या ताता की मुंहलगी थी। जब उसकी बड़ी बहन उसके द्वारा काम करने से नकार देने पर कहती कि जब उसने जन्म लिया था तो बड़दादी ने तुझे खूब कोसा था और उस दिन उन्होंने खाना भी नहीं खाया था। कात्या को यह सब सुनकर बहुत बुरा लगा। वह अपने ताता से जरूर इस बारे में पूछती है कि क्यों बड़दादी ने उसे कोसा था । ताता नन्ही सी कात्या की जिज्ञासा देखकर मुस्कुराकर कहते है - **"न मेरी मुनिया, तेरी बड़दादी तो तेरा बड़ा लाड़ करती थी, कोसती क्यों! हां, उसे लड़के की हौस ज़रूर थी। तू अपने पीछे भइया लेकर आई तो बड़ी खुश होकर कहने लगी, मुन्नी बिटिया ही अपने खेलने को भइया लाई है।"17**

ताता ने कात्या को प्यार कर इस बात को वहीं खत्म किया। लेकिन एक दिन आनंद बापू ने कात्या से कहा कि तुम्हारे माथे के ऊपर बालों के पास चक्र है, और उसका अर्थ यह है कि लड़की अपने पीछे बेटे को लाएगी। और हुआ भी उसी तरह जिससे खूब खुशियां मनाई गई बिलकुल उत्सव की तरह। कात्या नन्ही सी जान तो थी वह इसका मतलब क्या समझती फिर भी उसे इतना पता चला कि वह अपने पीछे घर में कुल दीपक लाई है। कात्या अपनी बड़ी बहन प्रभा दीद्दा से बिलकुल विपरीत थी। कात्या को सजने संवरने का बिलकुल शौक नहीं था परंतु प्रभा दीद्दा को सजने संवरने का शौक था। एक बार ताता इंदौर से हरे - लाल बूटेदार साटन का गरारा (पोशाक)लाए थे। वह उसे पहनाया गया। वह गरारा पहनकर आँगन में खेलते हुए उसका पांव का अंगूठा घेर में उलझने से वह मुंह के बल गिरी।

ताता रोज बैठक में बैठकर नए- नए मुद्दो पर बातचीत, बहसे होती रहती। कात्या की पुकार सुन वह हड़बड़ी से आए और उसकी चोट पर दवाई लगाते हुए लल्ली को हिदायत दी कि कात्या अभी छोटी है, उसे गरारा न पहनाया जाए। यह कहकर वह

वापस अधूरी बातों को पूरी करने बैठक में चले गए। जिसमें रियासत की बाते, शासन से शिकायते, अंग्रेजों की कूटनीति , 1892 का हैजा प्रकोप आदि विषयों पर बहस करते शाम हो जाती थी।

बचपन में हम अपनी मर्जी से जीते हैं। जो हमारा मन चाहता वहीं करते। हमें उच्च - नीच, भेदभाव आदि से कुछ लेना देना नहीं होता है। उसी तरह मासूस कात्या जो घर की दूध मलाई छोड़कर महदू की शीर चाय पीने के लिए दौड़ती। और जिद्द करती की वह अपने प्याले से उसे दो घूंट चाय पिलाएं। महदू को अपनी उम्र और अनुभवों ने मजहबों के दायरे से परिचित कराया था। मगर बच्चे गरीब मजहबे की दायरे नहीं जान पाते और इसलिए महदू मजबूरी से सबसे चुपकर उसके प्याले में दो घूंट डाल देता। साथ ही महदू रोज - रोज मज़ेदार नई - नई कहानियां सुनाता। महदू एक भूमिहीन किसान की औलाद थी, जो कुली की मज़दूरी करता। महदू अल्लाताला की मर्जी से शहर चला आया और अजोध्यानाथ के घर पहुँचा और बड़ों-बच्चों से इतनी जल्दी इस तरह हिल-मिल गया की जैसे इसी घर का हो। ताता साहब का हुक्का भरना, घर की साफ-सफाई, बच्चों का मन बहलाना, उसके रोज़ के काम बन गए थे। कात्या उसे अमरनाथ की कहानी सुनाने का हट करती और महदू सुनाता भी क्योंकि वह जानता था कि वह सबको मना कर सकता था, पर कात्या को नहीं, मना करने पर वह ताता से शिकायत करती। किस तरह अनंतनाग के मलिकों का लड़का भेड़-बकरियों को चंदनबाड़ी में चराने ले गया और किस तरह ठंडी हवा के झोंकों में सो गया और आँख खुलने पर कुछ भेड़ों को कम पाने पर उन्हें ढूँढ़ने के लिए पहाड़ों पर दूर निकल गया और कैसे उसे एक गुफा मिली, जिसमें एक बर्फ का शिवलिंग था, जो न ज़मीन और न आसमान में था, बीच हवा में अटका था। लड़के ने गाँव में आकर इसकी सूचना दी और गाँव के लोगों ने गुफा में शिवजी के दर्शन किए। बच्चे कहानी के बीच में महदू को कई प्रश्न पूछते। जन्म से अनपढ़ महदू कहाँ तक प्रश्नों का जवाब दे पाता। वह कहानी का रूप कथबब की ओर मोड़ बच्चों को सलाह देते हुए कहता कि बब साहब से पूछ लो, वह तो बस इतनी ही

बात जानता है कि मलिक खानदान के लड़के ने शिवजी का स्थान खोज़ निकाला था। इसलिए आज भी श्रावण मास की पूणम में अमरनाथ-यात्रा होती है और देश-परदेश से लोग शिवजी के दर्शन करने आते हैं और जो भेंट-चढ़ावें आते हैं, उनमें से एक हिस्सा मलिक-परिवार के लिए अलग ही रखा जाता है।

अपने नाना कृष्ण जू उर्फ कथबब से कात्या और दिदा ने विस्तार से अमरनाथ की कथा सुनी तो उन्हें यह विश्वास हो गया कि महदू उन्हें गप्पे ही नहीं सुनाता बल्कि सच्ची कहानियाँ भी सुनाता है। कृष्ण जू और उनके दोस्त बलभद्र में नोक-झोंक हमेशा चलती रहती थी। बलभद्र कृष्ण जू का सम्मान करता, उससे चुन्नी की शादी के बारे में सलाह मशविरा करता। शादी करने वाला लड़का निरंजन रैना का बेटा है, जो बलभद्र के ऑफिस में ही काम करता है, जिसे कृष्ण जू पहचानते हैं और लड़के के बारे में कहते हैं कि वह लड़का लाखों में एक है, शादी कर दो। पर बलभद्र खानदानी रीति-रिवाज़ों में इतने उलझते हैं की कृष्ण जू उन्हें समझाते हुए कहते हैं कि तुम्हारी बच्ची मेरी भी बच्ची है तथा बलभद्र भाई और ये सभी लोग अपने हैं। इसमें छोटा-बड़ा कुछ नहीं है। कृष्ण जू भी कभी-कभार टाँग खिंचाई करने से नहीं चूकते और उससे बलभंद्र अधिक चीड़ जाता। अजोध्यानाथ जी भी बहुत होशियार थे। बीच - बचाव करते वह चाय मंगवाते और कहते कि मीठे घूंट से बहस की तल्खी गले उतर जाती और मन फिर साफ हो जाता। बलभद्र और कृष्ण जू जो अजोध्यानाथ के समधी भी थे इन दोनों के मित्र अजोध्यानाथ थे। बच्चें उन्हें फुरसत में पाते ही कहानी सुनाने के लिए घेर लेते। अजोध्यानाथ कृष्ण जू का कथा ज्ञान देखकर कहते कि - **“जरूर ये सोमदेव के वंशज होंगे।”18**

कृष्ण जू बच्चो में बच्चे बन जाते और बड़ो में बड़े बनते। उन्हें हजारों वर्ष पूर्व की कहानियां भी पता थी। जैसे - पंचतंत्र और पुराणों की कहानियां। बच्चो को वे राक्षसों, देवी - देवताओं की कथाएं सुनाते जिसे सुनकर बच्चे प्रेरित होते। नाना की कहानियों का सार तो समझ ही पाते कि बुरे काम का फल बुरा ही होता है। पंडित कृष्ण जू

खुले विचारों के व्यवहारकुशल व्यक्ति थे। वे जिम्मेदार व्यक्ति के रूप में भी उपन्यास में उभरकर आते हैं जब बड़े भाई की मृत्यु होने पर सभी घर को कृष्ण जू ने बड़े ही प्यार और शिद्दत से संभाला। दो- दो बेटियों के शादी भी बड़े धूमधाम से करवाई। घर में नाथ ही एक ऐसा व्यक्ति था जो केवल दसवीं तक पढ़ा था। कम पढ़ाई - लिखाई के कारण कृष्ण जू ने उसे नंदा बस सर्विस में में काम पर लगाया जहां नाथ ने अपने काम से सभी को प्रभावित कर दिया। नाथ ने जब अनंतनाग वाले श्रीधर भट्ट की बेटी इंद्रा से अपना विवाह तय कर दिया। लेकिन श्रीधर भट्ट ने आनंद वायु के सामने नाथ के शिक्षा की शंका प्रकट की तब आनंद वायु ने कहा कि पंडित कृष्ण जू कौल दत्तात्रेय मुनीश्वरो के वंशज हैं। तथा दत्तात्रेय मुन्नीश्वर की कथा भी उन्होंने श्रीधर भट्ट को सुनाई। श्रीधर यह सुनकर प्रेरित हो गए और उन्होंने अपनी बेटी इंद्रा का रिश्ता नाथ जी के साथ पक्का किया।

आनंद जू एक पंडित थे। उनका धार्मिक विचार धाराओं पर एवं पूजा- पाठ , व्रत आदि पर अधिक विश्वास था। मनु महाराज के कथन पर आनंद जू का अधिक विश्वास था -"जन्मना जायते शुद्र: संस्कारात द्विज उच्यते।" आनंद जू का सभी आदर करते थे। वह सालों से धर्म, दर्शन और संस्कृति का ज्ञान बीजारोपण अपने मोहल्ले के बच्चों बच्चों में कर अपने ब्राह्मण जन्म को सार्थक मानते थे। लेकिन उनके बेटे नित्यानंद ने धार्मिक शिक्षा में कभी रुचि नहीं दिखाई और ना ही उसके पोते मोती ने। मोती ने कहा कि वह साइंस पढ़ेगा, धर्मशास्त्र पढ़ कोई पंडित - पुरोहित नहीं बनना है। फिर भी वे मोती को समझाने के लिए बड़े ही प्यार से प्राचीन संस्कृति की गौरवनित परंपरा तथा उनके उपलब्धियों का उल्लेख करते धर्म और दर्शन का महत्व समझाते परंतु इस पर मोती कहता कि - **"मेरा इस विद्या में मन नहीं लगता बबलाल, मैं क्या करूं ?"19**

मोती पढ़ाई में बहुत होशियार था। साइंस ,अंग्रेजी, गणित इत्यादि विषयों में अव्वल नंबर भी पाता। फिर भी वह अपने दादा को प्रसन्न करने के लिए निश्चल मन से

प्रयास करता। उसका प्रयास देख सकते है जैसे कुछ जरूरी मंत्र - गायत्री मंत्र, विपत्ति नाशक मंत्र, सप्तश्लोकी, गीता और रामायण के कुछ श्लोकों के साथ- साथ ही ब्राही विद्या भी रट ली थी। मोती के इस बात ने शास्त्री को भी प्रभावित किया की वह संस्कारवान है। लेकिन दुर्भाग्य से वह मध्ययुगीन आक्रमणकारियों और यूरोप के प्रभाव से कमजोर होती सांस्कृतिक धारा में बड़ा हो रहा था। मोती ने बी.एस्सी. अमर सिंह कॉलेज में और एम.एस.सी हिंदू यूनिवर्सिटी में कर सफलता हासिल की। उसकी इस सफलता पर आनंद जू कहते हैं कि -**"सृष्टि के रहस्य को हमने वेदों, उपनिषदों से जाना, तुम विज्ञान से ज्ञान लो, उसमें ज्यादा फर्क नहीं है। पर आत्म - साक्षात्कार के लिए अपने भीतर झांकना सीखो। उसमें शैव दर्शन तुम्हारी मदद करेगा और किसी भी ज्ञान से दूर मत भागों।"20** आनंद जू ने मोती की सफलता पर खुश होकर, एक वचन उससे ले लिया कि उसके अंतिम समय में उनका बेटा जो बहम - विद्या सुनाएगा उसके बजाय मोती सुनाएगा।

अजोध्यानाथ एक नामी वकील थे। उन्होंने अपने बच्चों को चौथी - पांचवीं कक्षा तक घर में ही पढ़ाया। पढ़ाई के लिए उन्होंने कई शिक्षक भी रखे जैसे पंडित ईश्वर जू, जानकी नाथ मास्टर और प्रकाश राम मास्टर। परंतु बच्चों की शैतानियों के कारण कोई भी मास्टर ज्यादा दिन तक टिका नही। आखिरकार अजोध्यानाथ ने बच्चो को बकायदा स्कूल भेजने जैसा फैसला किया। कात्या और राज्ञा को मैत्रेयी मिडल स्कूल, छुटकू को बिस्को साहब के हेडो मेमोरियल स्कूल और दिद्या शारिका को वसंता हाईस्कूल में भेजा। कात्या ने स्कूल में जात- पात का एहसास न करते हुए अनेक सहेलियां बनाई। कात्या की सबसे अच्छी सहेली तुलसी थी। तुलसी दो गली छोड़कर तीसरी गली में ही रहती थी, जिसके साथ उसकी गहरी दोस्ती हो गई थी।

कात्या के घरवाले उसे तुलसी के घर जाने से मना करते। उनका कहना था कि वे 'लेजि बटअ' है। कात्या के उनसे पूछने पर कि यह क्या होता है तो ताता उसे बताते है, **"यूँ तो भगवान् ने सभी मनुष्य बराबर बनाए हैं, पर संस्कारों में हम बाहमण हो**

गए मुन्नी। कोई 600 साल पहले सुल्तान सिकंदर के शासन में कई ब्राह्मणों को जबरन धर्म-परिवर्तन कराया गया। कुछ लोग मुसलमान वन गए, कुछ ने धर्म-परिवर्तन के साथ कुछ शर्तें रखीं, जो थी कि मुसलमान द्वारा पकाया खाना वे तभी खाएँगे, जब खाना रोज़ नई हांडी में पके और वे खुद हांडी से निकालकर भात खाएँगे। उनकी यह शर्त मान ली गई। सो वे मुसलमानों का पकाया भात अपने हाथों हांडी से निकालकर खाते और बाद में प्रायश्चित्त करते। ये अपने को हिंदू समझते थे, पर कट्टर बाह्मणों ने इन्हें आधा मुसलमान मानकर हिंदू-धर्म में शामिल करने से इंकार कर दिया और इन्होंने पूरा मुसलमान बनने से इंकार कर दिया। सो आगे चलकर इनकी संतानें 'लेजि बटअ' (हांडी भट्ट) कहलाई।"21 तुलसी पुराण के माध्यम से कात्या को अपनी सहेली तुलसी से दूर रहने के कारण बताए जाते, पर वह यह सबकुछ मानने से मना करती। उसका मानना था कि दोस्ती जात - पात,खानदान, गोत्र या धनाभाव देखकर नहीं की जाती, वह तो दिल से की जाती है। कात्या के परिवारवाले जितना कात्या को तुलसी से मिलने से मना करते, वह उतने ही दुगुने वेग से तुलसी की ओर खींची जाती। कात्या का भाई नंदन, जिसे घर का वंश कहा जाता और इसलिए वह पूरे घर का लाडला था। नंदन पहले बहुत पतला था, पर धीरे-धीरे बड़ा होने पर उसकी कद-काठी अच्छी निकल आई तथा वह पढ़ने में भी अच्छा था, उसे सरकारी वज़ीफे पर बनारस के इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिला मिला।

कात्या धीरे-धीरे बचपन और किशोरवस्था से जवानी की ओर बढ़ने लगी। उसके शरीर में इस संदर्भ में जो बदलाव आने लगे, जिसका अर्थ था कि पुरुष व्यक्ति से दूर तथा सावधान रहे। कात्या को यह ख़बर मिली कि उसकी सहेली तुलसी की शादी तय हो गई, तो वह उससे मिलने गई। जब उसे यह पता चला कि तुलसी की शादी एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति से हो रही है, जिसके पहले से ही दो बच्चे हैं, जिसमें बड़े बच्चे की उम्र तो तुलसी जितनी है। वह तुलसी से इस शादी के लिए मना करने कहती हैं। तब तुलसी उसे कहती है कि सभी शादी के लिए दहेज मांगते हैं,पर यह बिना दहेज के उससे शादी कर रहा है। दहेज देने के लिए उनके पास इतने पैसे नहीं

है। गरीबी के कारण ही उसे और उसके घरवालों को ऐसा करना पड़ रहा है। कात्या के लाख मना करने पर भी तुलसी की शादी अधेड़ उम्र के सरपंच से हो गई। तुलसी के विवाह कर जाने के बाद कात्या अकेली और उदास-सी हो गई। कुछ समय बाद जब तुलसी मायके आई और कात्या से मिली तो उसे बड़ी ही प्रसन्नता से अपनी ससुराल की बातें बताने लगी कि उसके टीन की छत का चौमंजिला बड़ा-सा घर, ढेर सारी गाय-भैंसें, जहाँ दूध-मक्खन की कोई कमी नहीं, खुला-खुला घर-आँगन, खेती-बाड़ी इत्यादि। कात्या ने तुलसी को हैरान होकर पूछा कि क्या वह उस बूढ़े व्यक्ति के साथ खुश है? तो तुलसी ने कात्या से अपने पति को 'बूढ़ा' कहने के लिए मना किया क्योंकि वह उसे सभी सुख- सुविधाएं देता है।

कात्या को तुलसी की बाते सुनकर ऐसा लगा कि **"राजपाठ के सुख से उसकी सहेली का दिमाग खराब हो गया है, या उस बूढ़े ने घी-दूध में कोई जादू की पुड़िया मिलाकर उसे दे दी है, क्योंकि पहले जहाँ वह शादी के बारे में सोचकर ही रो-रोकर हल्कान होती थी, वहीं शादी के बाद वह अब कुछ अपनी ससुराल के रंग में रंग-सी गई है।"22** एक ओर जहाँ घर का वातावरण कुछ और था तो दूसरी ओर राजनीतिक वतावरण कुछ और। कश्मीर में जिना साहब के प्रवेश करने से सियासी बातों में और नेशनल काँग्रेस एवं मुस्लिम लीग में हलचल शुरू हुई। समाज में दोबारा टकराव जरूर होगा इस बात का पढ़े-लिखे लोगों ने पहले ही अंदाजा लगा लिया था। अजोध्यानाथ की बैठक में सियासी बातों और दूसरे विश्व युद्ध के कल्पना की अनेक बातचीत चलतीं। अजोध्यानाथ ने कहा कि **"और क्रिप्स कमीशन ? भारत का बँटवारा करना चाहता था। भाई-भाई को लड़ा दो आपस में। क्या किया है अँगरेजों ने, वही फूट डालो, राज करो वाली नीति।"23**

बलभद्र को इस बात की चिंता थी कि अब लोगों को 'मज़हब' के नाम पर भड़काया जाएगा। बलभद्र सुल्तान जू और इनके दोस्त जिन्ना दोनों के फलसफे में यकीन नहीं रखते। नादिर साहब ने जिन्ना का भाषण सुना, अपने भाषण में उन्होंने कहा

था **"भाइयो, मुसलमान का एक मंच है, एक खुदा, एक कलमा। सभी इस झंडे के नीचे आकर अपने हकों के लिए लड़ें।"24** धर्म के नाम पर भटकाकर लोगों को इस तरह अलग करना बलभद्र को बिलकुल सही नहीं लगता था। उन सभी ने रहमान जू की माँ अशी दाई को अपने बेटे को समझाने के लिए भी कहा गया। उसने बेटे रहमान को समझाया कि वह एक दाई का काम करती है, अगर वह हिंदू-मुसलमान में फर्क करने लगेगी तो फिर पेट कैसे पालेगी। लेकिन बेटे पर तो भूत सवार था। एक बार रहमान लीगियों के जुलूसों में नारे देते समय विरोधी दलों में अचानक झड़पें शुरू होने से उसके सिर पर चोट लगी और खून बहने लगा। पुलिस जब वहा पहुंची तो उन्होंने उसे पकड़कर जेल में बंद कर दिया। अशी ने पुलिस के सामने अपने बेटे को छोड़ने के लिए हाथ जोड़ने पर भी उन्हें दया नही आई। वहीं खुर्शी थी, जिसके बेटे इन सियासी झंझटों में न पड़कर अपने काम से काम रखते। इसके लिए खुर्शीद अपने आपको नसीबवान समझती है कि उसकी संतानें अशी के बेटे-सी नहीं हैं।

आवाम शेख साहब को एक सही लिडर मानते, क्योंकि वह सभी लोगों को एकसाथ लेकर चलते रहे। उनका कहना था **"जिम्मेदार सरकार बनाने के लिए हिंदू,सिक्ख, बौद्ध और हरिजनों को भी नेशनल कॉन्फ्रेंस में शामिल होना होगा।"25** सियासी बात जब शुरू होती तो गाँधी, नेहरू, अब्दुल गफ्फार खान और न जाने किस-किस की बात उठती। एक तरफ जहाँ बुद्धिजीवी लोग बैठकर सियासी और इधर-उधर की बातें करते, तभी सड़कों पर विरोधी दलों के जुलूस निकलते। जिन्ना साहब को तो कश्मीर से नाकामी ही मिली, परंतु लोगों के दिल में अंदर-ही-अंदर एक-दूसरे के प्रति दूरी आने लगी। लोगों के बहकावे में ही रहमान जू को लिडरी और नारे लगाने का पागलपन सवार हो गया।

जब वादी में पहली बर्फबारी होती तो लोग तहेदिल से एक-दूसरे से मिलकर उस क्षण का स्वागत करते। यह मौका एक दूसरे को खिलाने-पिलाने और जश्न का होता था। आनंद शास्त्री तो अजोध्यानाथ के घर पर 'नीलमतपुराण' में वर्णित बर्फ का जश्न

मनाने का ढंग विस्तार से बताते। बर्फ गिरते ही लोग फिरन, कनटोपे से लैस, गुलूबंद, गरम मोजे दस्ताने इत्यादि पहनकर मौसम का आनंद लेते। वहीं गरीब व्यक्ति अपनी गरीबी के कारण इस जानलेवा ठंड को कोसा करते।

सर्दियों का मौसम शुरू होते ही पकवान और तीज-त्योहारों का अवसर आ जाता। अमावस्या के दिन हिंदू घरों में खिचड़ी कर बड़ी धूमधाम से मनाया जाता। इसी तरह 'गाड़वत', 'दिवचखीर' इत्यादि अवसरों को भी बड़ी धूमधाम से मनाया जाता। चिल्लयकलान बीतने पर एवं फाल्गुन महीना आने पर भी इस बार ठंड नहीं जाती। इसी महीने में शिवरात्रि का महापर्व आता है, उसके स्वागत के लिए लोग घरों की साफ-सफाई में जुट जाते। जानकीमाल के मना करने पर भी बेचारी खुर्शीद लल्ली का साफ - सफाई में हाथ बटाती।

शिवरात्रि के दिन घर में नए बर्तन खरीदे जाते। आनंद शास्त्री इस दिन आकर पूरे विधि-विधानों से घर में पूजा करते। आनंद जू ने बच्चों को शिवरात्रि के महापर्व पर किए जानेवाली इस पूजा का महत्त्व समझाया और बच्चो के तमाम प्रश्नों के जवाब देकर उनकी जिज्ञासा को शांत किया। फिर भी कहा जाता है बच्चों की जिज्ञासा कभी खत्म नहीं होती उसी तरह इनके सवाल खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहे थे कि शिवनाथ ने बच्चों को जाने का इशारा किया। उसके बाद आनंद शास्त्री ठाकुर द्वारे की ओर पूजा के लिए निकले और सारी सामग्री तैयार कर पूजा शुरू हुई। बच्चे तो मासुस और निरागास होते है। पूजा होते-होते बच्चे वहीं सो जाते, पर जैसे ही पूजा के समाप्त होने पर चारों तरफ जल छिड़का जाता, तभी सभी उठ जाते और प्रसाद लेकर अपने घर सोने चले जाते। शिवरात्रि के दूसरे दिन ही हर मिलने-जुलने वाले के हाथ में कुछ पैसा रखा जाता और इस पल का इंतजार बच्चो को काफी रहता। जैसे जैसे समय बीतता रहा, लल्ली की ननद सोना, जिसने अपने पति के बिना चौदह साल बिताए उसे पृथ्वी को देखकर एक अजीब-सी कशिश महसूस होने लगी। एक बार जब वह अपनी भाभी, बच्चे, पृथ्वी इत्यादि के साथ बाहर घूमने गई तो

वहाँ पर सोना को पुरानी यादें याद आने लगीं और उसकी आँखों से आसू टपकने लगे। उस वक्त पृथ्वी सोना के पास आया और अनायास ही उसका सिर पृथ्वी के कंधे का सहारा लेता है। सोना स्वयं इस एहसास को समझ नहीं पाती। और एक प्रसंग होता है जब सीढ़ियाँ लिपते समय सोना का पैर फिसल जाता है तो उसके दर्द को आँखों से छलकता देख पृथ्वी ने कन्हैया से कहा कि "एक बाँह पकड़ लो माँ की, डॉक्टर को दिखाना होगा। मैं ताँगा लेकर आता हूँ।" जब पृथ्वी ताँगा लेकर आया तो उसने सोना को अपनी बाँहों का सहारा देकर ताँगे में बिठाया। डॉक्टर के पास ले जाकर सोना की मरहम-पट्टी करवाई। वह खुद हैरान हुई कि कितने अधिकारपूर्वक पृथ्वी ने यह सब किया था। सोना पृथ्वी से जितनी दूर जाने का विचार करती उतनी ही वह पास आने लगी। सोना के सिर पर स्पर्श कर पृथ्वी का उसका हालचाल पूछना ही उसे एक अजीब एहसास कराता। लल्ली यानी सोना की भाभी को इस झुकाव का पता चला तो लल्ली ने सोना को समझाया और लल्ली के सहारे ही उसने अपने मनोभावों पर काबू पा लिया। सोना ने दिल पर पत्थर रखकर पृथ्वी से कहा कि **"नहीं पृथ्वी, भगवान् के लिए तुम जाओ। अब मत आना इधर। मेरे रहते नहीं आना, तुम्हें मेरी कसम।"26** सोना के कसम देने के कारण पृथ्वी फिर कभी नहीं आया। उसके न आने पर सोना ने उसे कुछ दिन ढूँढ़ा और फिर खुद को समझाया कि उसकी ज़िंदगी अब बीत चुकी है। अब उसे अपने बारे में न सोचकर अपने तीन जवान बेटों के विवाह के बारे में सोच - विचार करना चाहिए। और सोना ने किया भी वैसा ही अपनी खुशी अपने बेटों में ढूँढकर उनके सहारे अपनी जिंदगी गुजारी।

सुल्तान जू जिसका कालीन बनाने का काम था। लोग उनके संबंध में कहते कि उन्होंने अपने बेटों के लिए सोने की खान बनाई है और अब वे बैठकर खाएँ और सात पुश्तों को भी खिलाएँ। कभी स्कूल न जानेवाले सुल्तान जू को कालीन बनाने का हुनर अपने पिता से मिला था। उनकी दुकान पर हिंदुस्तानी ग्राहक के साथ अँगरेज़ ग्राहकों की भी भरमार ज्यादा होती थी। उनके पास रूस और अमेरिका से भी ऑर्डर आते थे। धीरे-धीरे सुल्तान जू अपना व्यापार अपने बच्चों के हवाले कर

स्वयं अपना समय इबादत में गुज़ारने लगे। जब वे हज पर चले गए और वहाँ से लौटते ही, 'हाजी साहब' हो गए तब सभी ने उन्हें मुबारकबाद दी। हाजी के बेटे अपने वालिद की बहुत इज्जत, सम्मान करते। सभी अच्छे काम पर नियुक्त थे। इसी बीच उनका छोटा बेटा डॉक्टर, अफजल को विजया नामक एक लड़की से प्यार हो जाता। उसके इस प्रेम के पागलपन को देखकर हाजी साहब और फातिमा बी ने उपाय सोचा कि उसे एम्.डी. की पढ़ाई के लिए विदेश भेजा जाए। और अगर उन दोनों का सच्चा प्रेम होगा तो इस दूरी को सहन करते हुए भी एक- दूसरे को याद रखेंगे वरना थोड़े दिनों में ही भूल जाएंगे। अफजल विदेश जाने के छह महीने बाद, विजया भी एम्.डी. करने के लिए विदेश चली गई। विजया के पिता भी खानदानी रईस थे इसलिए विजया ने डॉक्टर की पढ़ाई की थी।

अफजल और विजया ने शादी करते ही हाजी साहब ने अपने दिए इम्तहान में खरा उतरा देख दिल खोलकर दुआ दी। विजया ने भी अपने माता-पिता को सूचित किया कि उसने अफजल से कोर्ट मैरिज कर ली है, क्योंकि वह उससे बहुत प्रेम करती है और उसके बिना जी नहीं सकती। अफजल जब एम्.डी. करके घर लौटा तो पिता हाजी साहब ने हृदय से अपने बहू-बेटे का स्वागत किया। विजया और अफजल वादी के सबसे अच्छे डॉक्टर भी बन गए।

यहां अजोध्यानाथ और काकन्यदेदी को अपनी बेटियों की उम्र बढ़ने से उनकी शादी की चिंता सताने लगती है। उनकी बेटी शारिका, जो बीस साल की होने जा रही है, अभी तक कुँआरी है। आनंद शास्त्री शारिका और इंद्र की कुंडलियाँ मिलाकर उनके विवाह का शुभ मुहूर्त निकालते हैं। किसी न किसी रुकावटों की वजह से विवाह न हो रहे शारिका के लिए आनंद जू एक भगवान् बनकर आए और शारिका का भाग्य सँवार गए। काकन्यदेदी शारिका के बाद कात्या के लिए भी लड़के देखने की बात करती है तो कात्या कहती है कि उसे अभी आगे पढ़ाई करनी है। कात्या की आगे पढ़ाई करने की बात से जानकीमाल बौखलाकर ताता से कात्या के विवाह के बारे में

कहती है तो ताता आगे सोचने की बात कहकर बात को टाल देते है। केशवनाथ का स्त्री शिक्षा में विश्वास था। वही अपनी बेटी कात्या की पढ़ाई के लिए ताता से मशवरा करते और उसे कॉलेज भेजने की रजामंती मिल जाती है। वही शारिका और नन्नी की सगाई होने से वे अपनी आगे की जिंदगी के सपने सजोने लगती है। इसी बीच वादी में एक दिन गांधी जी आते है, जिनके दर्शन करने शीतलानाथ, केशवनाथ, शिवनाथ, कात्या और लल्ली जाते है।

सुबहान मल्लाह, मुस्ताक, हसन पांडे इत्यादि आसमानों में हो रही नीले-पीले फव्वारों की रंगीन आतिशबाजियाँ देखकर चौंक गए और उन्हें लगा कि शायद आज़ादी मिल गई। राग-रंग योजनाएँ, हर्ष और चिंताएँ, महत्त्वाकांक्षाएँ, अनिश्चितताएँ वादी में एक साथ कंधे मिलाकर खड़ी हो गई। आज़ादी के साथ जो बँटवारा हुआ, उसमे जो दोनों तरफ मार-काट, लूट और आगजनी हुई, उस भयानक स्थिति को देखकर सभी अवाक रह गए। अमृतसर और लाहौर से लाशों से भरी गाड़ियाँ दिल्ली आ रही थीं और दिल्ली से कटी हुई लाशें जवाब में पार्सल की जा रही थीं। भगवान् ही जानता कि यह कैसी आजादी थी, जो इंसानों के जीवन के साथ खेल रही थी। उस परिस्थिति में अजोध्यानाथ ने कश्मीर के बारे में चिंता जताई कि, सुना है, जिन्ना साहब धर्म के नाम पर कश्मीर को पाकिस्तान का हिस्सा बनाना चाहते हैं। बंता सिंह तो पाकिस्तान का नाम लेने से ही घबरा उठते हैं और उनकी आँखों के आगे लाहौर-अमृतसर वाला कांड सजीव होने लगता है।

तभी अजोध्यानाथ फिर से दिलासा देते हैं कि कश्मीर के नेता शेख साहब, न ही मुस्लिम लीग को पसंद करते हैं, न जिन्ना को और वे नेहरू के पक्के दोस्त और राष्ट्रभक्त भी हैं। अतः हम अवश्य ही भारत का हिस्सा बने रहेंगे। फिर भी कश्मीर का पढ़ा-लिखा वर्ग चिंतित था कि अब उनका क्या होगा, वहीं आम लोग अपने रोज़ के धंधों में मसरूफ थे। प्रबुद्ध लोगों के घरों में हिंदुस्तान-पाकिस्तान की सीमाओं पर होनेवाली छोटी-छोटी ख़बरें आती रहती थीं। हाँ, कहीं बंदूक चलाना न भूल जाए,

इसलिए अभ्यास करते रहते हैं ऐसा कहकर लोग मज़ाक में बात उड़ा देते, मगर सच्चाई बिलकुल इसके विपरीत थी। अजोध्यानाथ के घरवाले शारिका दिद्दा की मेहँदी की रात को कभी भूल नहीं पाएंगे। मेहंदी होने से पूरे घरभर में रौनक थी। लोग खुशी से हँस-गा रहे थे और शारिका दिद्दा अपने आनेवाले रंगीन कल के सपनों में खोई हुई थी। उसी समय लीलावती की बहन शोभा घबराई हुई आई और छाती पीटकर सभी से कहने लगी कि कबाइली लोग बारामूला तक पहुँच गए हैं। चारों तरफ निष्पाप हत्याएं हो रही है और यहाँ धूमधाम से बाजा गाजा बज रहे हैं। सभी लोग अपनी अपनी जान बचाने के लिए इधर - उधर भाग रहे हैं। कबाईयो ने मुजफ्फराबाद पर अपना कब्जा कर कर दिया है। वे लोग पुरुषों के कत्ल कर औरतों को बेइज्जत कर रहे हैं। सभी का कोई ना कोई मुजफ्फराबाद में था, जिसे उन्होंने खो दिया। किसी का बेटा तो किसी का भाई तो किसका पूरा परिवार ही था। सभी जगह तांडव मचा हुआ है। इस भयानक खबर को सुनते ही ढोल - बाजे से और खुशियों से सजे शादी वाले घर में अचानक मातम मच गया। खबर सुनते ही सभी लोग - पुरुष, औरते अपने अपने घर भागी - दौड़ी चली गई।

शिवनाथ, केशवनाथ घर के चाकू-छूरियों से धान कूटने तक के बल्लम, केन सोटियाँ इकट्ठा करने लगे। सभी बेसब्री से मौत की काली रात बीतने का इंतज़ार करने लगे। सबसे बड़ी चिंता थी कि कबाइली कश्मीर में आ गए तो? वही चिंता ताता को हो गई कि कबाइली कश्मीर में आ गए और उन्होंने उनकी बहू-बेटियों की आँखों के सामने इज्जत लूटी तो क्या होगा। सभी के लिए 26 अक्टूबर, 1947 का दिन अटकलों अंदाज़ों और वहमों भरा था। 27 अक्टूबर के दिन आकाश में गड़गड़ाहटें सुनाई दीं। आवाज सुनते ही उन्हें राहत मिली।उन्हें पता चला कि भारतीय फौजे उनकी मदद के लिए आ गई है तो लगा, जैसे डुबते हुए को नदी का किनारा मिला। इस खुशी से लोगों के आखों से आसू टपकने लगे। एक विश्वास हो गया कि अब सब ठीक हो जाएगा। और हुआ भी वैसे ही। कुछ समय बाद सब ठीक होनेपर ताता की दोनों पोतियों का विवाह खुशियों से संपन्न हुआ। कबाइली वादी से बाहर तो हो

गए, पर कभी न मिटनेवाला जख्म दे गए। इस हादसे से लोग नए जोश और होश से खड़े हुए। लड़कियाँ भी पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए उठ खड़ी हुईं। लोगों को इस दौरान इतने कड़वे और भयानक अनुभव मिले की सुननेवालों के भी रोंगटे खड़े कर दिए। हत्याएं, बलात्कार, आगजनी ने लोगों के दिल- दिमाग पर गहरा प्रभाव डाला। इस हादसे के बाद कात्या का मन अपनी सहेली तुलसी के लिए परेशान हो जाता है। वह तुलसी से मिलने जाती है पर वहां जाकर उसे पता चलता हैं कि उसकी दुनिया ही उजड़ चुकी थी। तुलसी के पति, बच्चों का आतंकियों ने कत्ल कर दिया और उसकी इज्जत लूटी। वह बड़ी ही मुश्किल से अपने दुधमुँहे बच्चे को लेकर भाग निकली थी। वह तुलसी को दोबारा अपनी बिखरी हुई जिंदगी को सँवारने के लिए प्रोसाहित करती है। वह कहती है कि पुस्तकों को अपना आधार बनाकर वह फिर से पढ़ाई करे। सोना बुआ भी इस आतंक का शिकार हो गई थी। किंतु सोना बुआ के जैसे तुलसी आतंकवाद का शिकार भले ही हो गई हो पर सोना बुआ की तरह आधी संन्यासिनी, आधी पागल बनकर तुलसी न जिए, यह संकल्प कात्या का ज़रूर था।

पिछले सालों के कहर को जनवरी की जबरदस्त ठंड में लोग भूल गए। लेकिन अजोध्यानाथ के घर आकर बलभद्र सभी को दहला देनेवाली खबर देता है कि महात्मा गांधी जी की हत्या हो गई। गांधी जी की बात आई तो सभी अंतहीन घटनाओं का जिक्र हुआ। लंबे समय के बाद स्कूल-कॉलेज खुले और काफी समय के बाद कश्मीर में लोक राज्य नाम सुना गया। लोग अपने-अपने कर्तव्य और ज़िम्मेदारी को समझने के लिए सक्रिय होने लगे। शेख अब्दुला कश्मीर में नए नेता का जिम्मा सँभाल रहे थे। कात्या भी लंबी छुट्टियों के बाद कॉलेज गई तो उसे हवाओं में कुछ नयापन महसूस हुआ। पुरुषों ने तो प्रगति के नाम पर लड़कियों की शिक्षा पर मुहर लगाया, लेकिन माएँ हज़ारों चिंताओं-आशंकाओं में घुली ज़माने को कोसती रही। कॉलेज यानी छोटे-मोटे हादसे होते रहते है तथा लड़के - लड़कियों के बीच नोक-झोंक होती रहती हैं। कात्या के कॉलेज में त्रीभू नाम का एक लड़का था जो कात्या को पसंद आया।

वह समझ नहीं पा रही थी कि यह सब क्या हो रहा है, उसे एक अलग ही एहसास था। कात्या तो पढ़ाई में होशियार तो थी ही उसमे कोई शंका मात्र नहीं थी। इंटर की परीक्षा में कात्यायनी ने स्टेट में प्रथम स्थान प्राप्त किया। देखते-ही-देखते कॉलेज ख़त्म होने आया जिससे युवा प्रेमी भाव-विह्वल हो गए। विदाई के समय कात्या भी त्रीभू के कहे गए शब्द को शायद ही भूल पाएगी **"मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ और तुम्हें बहुत मीस करूँगा। त्रीभू मैं भी तुमसे बहुत प्यार करती हूँ।"27** कात्या का आगरा के मेडिकल कॉलेज में दाखिला हो गया और वह अपने पिता केशवनाथ के साथ आगरा जाने के लिए और अपनी जिंदगी की नई शुरुआत करने निकल पड़ी। जाते समय रास्ते में केशवनाथ ने कात्या को कई ऐतिहासिक और पौराणिक किस्से सुनाए। जब बस पहाड़ियों से उतर समतल रास्तों पर तेजी के साथ जाने लगी तो रास्ते में कटरा की पहाड़ियाँ दिखीं। उसे देखते ही लोगों ने सिर झुकाए और 'जय माता शेरो वाली माँ' का नारा लगाया। तभी केशव ने कात्या से वादा किया कि जब वह छुट्टियों से वापस लौटेगी तो उसकी माँ के साथ सभी माता के दर्शन करने जाएँगे। कात्या ने पठानकोर्ट में ट्रेन में बैठी और ट्रेन सबको पीछे छोड़ती चली गई।

दिन बाऊ मंदिर में एक पुजारी थे, और वे तथा उनकी पत्नी मंदिर में चढ़ाए गए प्रसाद से ही अपना जीवनयापन करते थे। दिन बाऊ बड़े ही कोमल स्वभाव के थे। दिन बाबू की आदत थी कि उन्हें कोई भी गरीब व्यक्ति दिखाई देता तो वे उनकी मदद करने दौड़े जाते। वे गरीब होने के बावजूद भी दिल से कितने अमीर थे उसका पता इस बात से चलता है, सभी लोगों के विरोध के बाद भी उन्होंने समाज की सताई हुई दो महिलाओं जयदेद और दुर्गा को अपने मंदिर में आश्रय दिया।

कात्यायनी को आगरा मेडिकल कॉलेज का वातावरण कुछ अलग ही नजर आया। हर चीज़ में उसे कुछ नयापन दिखाई दिया जैसे पेड़, पौधे, मकान यहाँ तक कि आसमान भी। अनेक प्रदेशों से आए विभिन्न बोलियों वाले छात्र-छात्राएँ कॉमन रूम या मेस रूम में आकर एक हो जाते थे। कात्यायनी को तो शुरुआत में दवाइयों और मरीजों

के घाव आदि को देखकर उबकाई और चक्कर आते, पर जैसे ही वक्त बीतता गया उसने अपने आपको मजबूत बनाना सीख लिया। छात्र समय मिलने पर कॉमन रूम में इकट्ठा होते और अपने सुख-दुःख एक-दूसरे से साझा करते। अगर बातचीत के समय राजनीति की बात आती और उसमें अगर कश्मीर का जिक्र आता तो कात्या उसमें शामिल हो जाती। कई मुद्दों पर जैसे अपीजमेंट पॉलिसी, दिल्ली समझौता, शेख साहब के रवैये आदि पर बहसें होतीं।

कात्या छुट्टियों के बीच जब घर आई तो कुछ सहमी सी थी। उसे पता लगा कि पुलिस हिरासत में श्यामा प्रसाद मुखर्जी की रहस्यमय ढंग से मृत्यु हो गई। इस घटना से जो हलचल हुई तो ऐसा महसूस होने लगा कि पूरा देश कश्मीर के विरुद्ध हो गया। कश्मीर में जलसों, जुलूसों और फिर से सांप्रदायिक तनाव अधिक बढ़ने लगे थे। छुट्टियों में घर आए नंदन ने इंजीनियर बनकर बाहर नौकरी करने की अपनी इच्छा को बया किया। उसके फैसले से सभी दुःखी हो गए थे, मगर सब शांत रहे। शेख साहब को गुलमर्ग में गिरफ्तार कर लिया गया तथा बख्शी गुलाम मुहम्मद को राजनीति में शामिल किया और शेख साहब को बंदी बनाने पर हुए विरोध को मज़बूती से दबा दिया गया।

शेख साहब के जरिए रहमान जू को चुनाव का टिकट मिलना तय था परंतु शेख साहब की गिरफ्तारी से यह सपना टूट गया। तब रहमान रात में सोचने लगा कि उसने अपनी जिंदगी में क्या हासिल किया। उसके पिता एक गरीब आदमी थे, जिन्हें भान साहब ने अपने घोड़े की देखभाल के लिए रखा था। रहमान भी अपने पिता के समान भान साहब के घर काम करने लगा। वह भान साहब के बेटे श्याम सुंदर उर्फ किंग जी की जी- तोड सेवा करता। एक दिन रहमान के पिता चल बसे और ताँगे की जिम्मेदारी उसपर आ गई। कई दिनों के बाद सुंदर ने बूढ़े घोड़े और पुराने ताँगे को दान में दे दिया और रहमान की जिंदगी बना दी। समय गुज़रने के साथ ही वह पार्टियों आदि में राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होते - होते बीस साल बीत गए।

रहमान का बड़ा बेटा सेब का व्यापार करने लगा और छोटा बेटा दसवीं कर स्कूल का मास्टर बन गया। शेख साहब की गिरफ्तारी के कारण जो दंगे हुए उस दंगो में रहमान घायल हुआ तो उसके बेटों ने उसे कुछ सलाह दी। जिससे रहमान को लगा, वह तो कुछ न कर सका पर उसका बेटा ज़रूर आगे राजनीति करेगा। शेख साहब की बजाय बख्शी साहब के पास जब रहमान गया तो उसने उनसे अपनी पार्टी के लिए की गई सारी सेवाओं के बारे में बताया। तो बख्शी साहब ने उनकी बाते सुन उन्हें जल्द ही पार्टी की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपने के लिए कहा। बख्शी साहब ने रहमान से कहा कि उनके नाती-पोतों को पढ़ाए, क्योंकि पढ़े-लिखे लोगों की ज्यादा आवश्यकता है। अब रहमान जू के मन में एक बार फिर नेता बनने की आस जाग उठी। समय बीतता रहा और उसके समय के साथ छोटे छोटे बदलाव होते गए। कात्या जब डॉक्टर बनकर लौटी तो उसके पाँव की आहट पहचान लेने वाली उसकी नानी स्वर्गवासी हो गई थी तथा डॉक्टर कूरी कहकर बुलाने वाले उसके नाना जी का भी स्वर्गवास हो गया था। कात्या को पता चलते ही वह इस बात से दुःखी होती है तब जानकी माल ने उसे समझाया कि बेटा जिसने जन्म लिया है उसे एक दिन जाना ही पड़ता है। खुर्शीद ने सुबहान मल्लाह के गुजरने के पांच साल बाद बहू बेटों को पास बुला घर सम्पत्ति का बँटवारा कर दिया।

कात्यानी की बुआ सोना ने अपने बेटों की शादियां कर बहुएँ लाई परंतु तीसरे बेटे की पढ़ी-लिखी व धनी घर की बहू ने घर के काम-काज करने से मना कर दिया और धीरे-धीरे तीनों बहुओं में बहस होने लगी तब सोना को मज़बूरन उन्हें अलग करना पड़ा। और इस तरह सोना एक दिन इस दुनिया से विदा हो गई। ताता भले ही बूढ़े हो गए थे, मगर फिर भी उनकी शाख बरकरार थी। बख्शी साहब से कहकर उन्होंने अपनी पोती कात्या को एक सरकारी अस्पताल में नौकरी दिलवा दी। कात्या बख्शी साहब की पीस ब्रिगेड की पुलिस के बारे में ताता के सामने अपना विरोध प्रकट करती है, क्योंकि ये पीस ब्रिगेड गुंडे-बदमाश को भले ही पकड़ते हो पर वहीं नागरिक अधिकारों का हनन भी करते है। पोती की बात से सहमत ताता राजनीति का पक्ष

लेते हैं। वे कहते हैं कि जहाँ बख्शी साहब भारत-विरोधी अभियान का दमन करते हैं, वहीं आम आदमी के दुःख को भी समझते हैं। जब उन्होंने प्रेम की शादी में बख्शी साहब को बुलाया था तो न सिर्फ वे आए, विजया के हाथ में शगुन भी दे दिया। उपन्यास में प्रेम नई पीढ़ी का प्रधिनिधित्व करता है। वह अपनी माँ आदि के सामने अपनी पत्नी से हँसी-ठिठोली कर लेता। उसका यह रंग - ढंग किसी को भी पसंद न आता फिर भी वे चुप रहते। कात्या का भाई नंदन इंजीनियरिंग के बाद अमेरिका में नौकरी करने लगता है। कमलावती कात्या के बारे में सोचती है कि कात्या अट्ठाईस साल की होने के बाद भी घर पर बैठी है, जबकि उसकी लड़की के उन्नीस पार करने पर ही लोग टोकने शुरू हो गए थे। मगर कात्या इन सब फालतू सवालों से दूर अपने में खुश अस्पताल, मरीज़, दवाइयों में मस्त थी।

कात्या अस्पताल में इलाज के दौरान लोगों के अंधविश्वास आदि को देखकर मायूस हो जाती है। एक दिन मंगला मौसी कात्या के पास अपनी बेटी तारा का गर्भपात करने लाती है, जिसे किसी ने फंसाया था। तो कात्या साम - दाम के जरिए उस लड़की का विवाह उसी लड़के पुष्कर से करती हैं, जिससे वह गर्भवती हुई थी। कात्या को भी अपने जीवन की निजी घटनाओं की याद आती है और वह बैचेन हो जाती है। वह वर्षों पहले त्रिभुवन से मिली थी किंतु आज उसकी जगह हार्ट स्पेशलिस्ट डॉक्टर कार्तिकेय था। जब कात्या को बख्शी साहब ने सरकारी खर्चे पर ऑल इंडिया मेडिकल इंस्टीट्यूट में गाइनाकॉलोजी में महारत हासिल करने भेजा तो कात्या को वहां त्रिभुवन मिला जो अपनी पत्नी के इलाज के लिए आया था। कात्या और उसमें बहुत बातचीत हुई, जिसमें कात्या को महसूस हुआ कि कॉलेज का त्रिभुवन अब बदल गया है। उनकी बातचीत बहस में बदल गई और तब त्रिभुवन ने कहा कि उसके पिता कात्या के पिता की तरह बड़े और धनी आदमी नहीं थे, इसलिए वह कामयाब नहीं हो पाया। कात्या ने बात को बदलते हुए त्रिभुवन को उसकी पत्नी के संबंध में कुछ हिदायतें दी। उस रात कात्या को अपनी पुरानी यादों ने पूरी तरह से घेर लिया था। उसे एहसास होने लगा कि उसके जीवन में अब कार्तिकेय आ गया है।

कार्तिकेय एक शानदार व्यक्तित्ववाला इंसान था, जो डॉक्टरी की विद्या से निपुण था। पर उसके साथ एक हादसा हुआ था। जिसमें उसकी पत्नी सुनयना और उसका बेटा बबलू जिंदा जल गए थे। इस हादसे से वह अभी तक संभल न सका था। कात्या कार्तिकेय के साथ हुई दुर्घटना सुन बहुत दुःखी हुई थी। वह कार्तिकेय की तरफ अपनापन-सा महसूस करने लगी। कार्तिकेय के परिवारवाले उसकी दूसरी शादी का जिक्र करते। कार्तिकेय के पिता कामेश्वर कात्या और कार्तिकेय की नज़दीकियों को देखकर कात्या के ताता से उनके रिश्ते की बात करते और दोनों का विवाह कर देते। कात्या और कार्तिकेय को कामेश्वर नाथ समझदारी से हनीमून का नाम नहीं लेते पर कात्या और कार्तिकेय को कुछ दिन के लिए युशमर्ग की शैर की हिदायत देते हैं। कात्या और कार्तिकेय घूमने के लिए निकलते हैं और रास्ते में चचारे शरीफ के दर्शन करते हैं। कात्या कार्तिकेय को एकाकीपन से दूर करने और उसका ध्यान आकृष्ट करने ललद्दी, नंद ऋषि आदि के बारे में बात करती। कात्या जब रास्ते में पानी की आवाज़ सुनकर गाड़ी रुकाती है और पानी में अटखेलियाँ करती है तो कार्तिकेय उसे बच्ची कहकर मुस्कराता है और कात्या चाहती है कि कार्तिकेय हमेशा इसी तरह हसते - मुस्कुराते रहे। वह नील नाग घूमते हैं और रात होने तक वापस लौटते हैं। तब रास्ते में फिर कात्या ने कार्तिकेय को नील नाग की कहानियाँ सुनाई। डाकबँगले पहुँचकर खाना खाने के बाद कार्तिकेय के 'गुडनाइट' शब्द से उसके उत्साह से भरे-पूरे दिन को एक चुटकी में निराश कर दिया। कार्तिकेय बिस्तर पर सो गया वर तब कात्या ने खुद को बहुत अकेला महसूस किया। कात्या बाहर बालकनी में विचार करते करते कुर्सी पर ही सो गई। और सुबह वन मैना की चहचहाहट से उठी, तब उसके सामने कार्तिकेय था। जो उससे माफी माँगने के लिए वहा खड़ा था। पर कात्या ने अपने मन के आवेग को रोकने के लिए उसे नज़रअंदाज़ किया, तो कार्तिकेय ने उसे बीच बाँहों में पकड़ उसके होंठों को चूम लिया।

प्रेम का तबादला लेह में हो गया तो विजया और प्रेम अपने बच्चे संतोष और बुलबुल को माँ-बाबूजी के सहारे छोड़ वहाँ से चले गए। रास्ते भर विजया अपनी बच्चों की

याद में निराश रही, तो प्रेम ने विजया की मनोदशा को समझकर उसे अपनी बातों में तथा लद्दाख के इतिहास और भूगोल में भी उसको उलझाए रखा था। लेह पहुंचने पर उनका अच्छा-खासा स्वागत किया गया। ।जहाँ विजया सोच रही थी कि वह यहाँ अकेली हो जाएगी, लेकिन यहाँ पर संपत देदी, निम्मा, विम्मा, रूपावती इत्यादि थी। जो खरीददारी, शीरचाय पार्टियाँ आदि के जरिए रहने के तरीके बताती है। निम्मा कहती हैं कि यहाँ इंजीनियरों की अच्छी खासी कमाई होती है क्योंकि सड़कें बनाने में करोड़ों रुपए का बजट बनता है, लेकिन कौन-सी सड़क कहाँ बनी, कहाँ ढ़ही, कितनों का कागज़ों पर हिसाब है, यह तो प्लान भी नहीं जानते। विजया और प्रेम धीरे-धीरे वहाँ के माहौल में घुल मिल गए। प्रेम चिट्ठी लिखकर सारी खबरें ताता को बताता रहता है। कई दिनों बाद प्रेम का तबादला जम्मू के पूंछ सेक्टर में कर दिया गया।

रहमान जू समय बदलने के साथ 'रहमान साहब' हो गए। उसका बेटा कासिम सियासत में चल गया और बड़ा बेटा फ्रूट मर्चेंट बन गया। अब रहमान जू टूटे-फूटे घर को छोड़कर एक शानदार बँगले में रहने लगे और उसके पोते-पोतियाँ भी बड़े-बड़े अँगरेजी स्कूलों में पढ़ती। वह भूतकाल के विचारो में खो गए जिसमें सन् 1953 का दंगा, शेख साहब की गिरफ्तारी, 27 दिसंबर 1963 का दिन, 11 सितंबर, 1964 का दिन आदि। अपने बचपन के दोस्त नाथ जी की भी याद आई, जिसे दंगाइयों ने मार डाला था।

अयोध्यानाथ वक्त के साथ अपने परिवार को सँभालते-सँभालते एक दिन दुनिया से विदा हो गए। विदेश में रहने वाला नंदन, तीन-चार साल में एक बार घर आता। उसने अपने घर से दूर रहने की तकलीफ भी ताता से बया की थी। समय के साथ बदलाव तो आ ही जाता है। उसी तरह अजोध्यानाथ की धारणा थी कि लड़कियां अब अपने अधिकार के लिए लड़े। लेकिन उनकी यह बात सुन बाकी लोग कहते कि बुढ़ापे में उनकी मति भ्रष्ट हो गई है। लड़कियों को अपनी मर्यादा में रखने के बजाय उन्हें

बहला फुसलाकर अपनी सीमा को पार करने के लिए अजोध्यानाथ प्रयास कर रहे हैं। विवाह के दस साल बाद जन्मे राजाराम पर उसके पिता ने अपनी सारी उम्मीदों का भार डाल दिया, मगर उनका मन पढ़ाई में न लगने से वह बार - बार फेल होते गए और गलत संगतों में रम गए। पिताजी के डाँटने पर एक दिन राजाराम घर छोड़कर चले गए। बहुत ढूँढ़ने से कई न मिलने पर धक्के से उनकी मृत्यु हो गई। अब घर का सारा जिम्मा राजा भाई पर आ गया। कात्या ने उन्हें अपने अस्पताल में नौकरी दी। राजाराम यानी बब्बू बी.कॉम. कर एक नोकरी करने लगा। राजाराम यानी बब्बू का संगीता नामक एक लड़की से विवाह हो गया। माँ को अब निलू के विवाह की चिंता सताने लगी। चार साल बाद नंदन धरा और बच्चों को साथ लेकर क्रिसमस की छुट्टियों में आया। प्रेम ने भी इसी समय आने का निर्णय किया। वे जिस होटल में रुके थे उस होटल का मालिक नंदन का दोस्त था। तो फिर उन्होंने एकसाथ बैठकर भूतकाल साथ ही वर्तमान की बातचीत की उसका जैसे यूसुफ साहचक और हब्बा खातून की कहानी, बम्बुर लोलट की कहानी आदि का उल्लेख हुआ। साथ ही राजनीति के मुद्दे पर भी चर्चा हुई और फिर अपने दोस्त से दुबारा आने का वादा कर वे होटल से निकले। रास्ते में नंदन और प्रेम के बीच शेख साहब, महाराजा हरी सिंह, सन् 1950 के विधानसभा भाषण, ओवन डिक्सन प्लान, कश्मीर कॉन्सिपिरेसी इत्यादि सामाजिक-राजनीतिक चर्चा के विषय बने।

अजोध्यानाथ के दूसरे बेटे शिवनाथ की बेटी और प्रेम की बहन राज्ञा रैना कुर्सी पर बैठे- बैठे पुरानी यादों में खोई हुई थी कि कैसे राज्ञा रैना से राज्ञा मुंशी बनने की डेढ़-दो घंटे की यात्रा से उसने क्या पाया और क्या खोया है। ससुराल में जाते ही सास द्वारा किया उसपर अत्याचार चुपचाप से सहन करती थी। किस तरह उसकी बेटी देविका ने जब उससे कहा कि **“माँ, डायरेक्टर ऑफ स्कूल मिसेज राजदान ने उसे देखकर पूछा था, क्या मैं राज्ञा रैना की बेटी हूँ। क्योंकि शक्ल-सूरत ही नहीं, अक्ल से भी मैं आपकी जैसी लगती हूँ।”28** किसी प्रतियोगिता में मिसेज राजदान ने उसे पुरस्कार देते हुए यह सब कहा था और साथ ही कहा था कि राज्ञा के लिए

कुछ भी असंभव नहीं होता था। केवल स्त्री होने के कारण सबकुछ चुपचाप बर्दाश्त करते-करते उसके सब्र का बाँध फूट पड़ा तब उसने अपनी सास से स्पष्ट कहा कि **"माँ जी, बस कीजिए, आगे से मैं आपकी गालियाँ नहीं सुनूँगी, जो कुछ कहना है, बेटे से कहिए।"29** परंतु उसने जिस विश्वास के कारण यह बात कही थी, उस विश्वास (पति विमल) ने ही उसकी बात जाने बिना ही उसे कसूरवार ठहरा दिया था। तो उसने उसी रात देविका के साथ घर छोड़ दिया। रास्ते में जाते समय अपनी माँ को कही गई बाते याद आने लगी। शादी के समय किस तरह उसकी माँ ने उसे समझाया था कि एक लड़की के लिए उसका पति ही सबकुछ होता है तथा उसका ससुराल ही उसका असली घर होता है। माँ ने बताई गई बातों का उसने पालन किया परंतु उसके साथ हमेशा भेदभाव होता रहा और वह आँसू बहाती सबकुछ सहती रही। विमल भी उससे मात्र शारीरिक सुख के लिए ही इस्तेमाल करता था। इस प्रसंग से उसे अपने पूर्व प्रेमी जयंत की याद आई, परंतु रैना जैसे बड़े खानदान से टकराने की हैसियत जयंत के पिता की नहीं थी। जब राज़ा ने एम्.ए. में दाखिला लिया तो विमल ने उसे हिदायत दी कि तुम्हारे जो मन में हो करो लेकिन घर के काम में कोई भी हर्ज नहीं होना चाहिए। बाद में उसने डॉक्ट्रेट में दाखिला लिया। अब विमल, धीरे-धीरे पीने और बहकने लगा था उसे इस बात से घृणा आती। ऑटो की ब्रेक से वह उठी और उतरकर घर की ओर गई। घर पहुंचते ही उसे पता चला कि उसके पिताजी स्वर्गवास हो गए। जब उसके घर में उसके घर छोड़कर आने का पता चला तो माँ के अलावा सभी ने उसके इस कदम पर खुश होकर उसके हौसले की वाहवाही की। कुछ समय उसके ससुरालवाले ने उसकी प्रतीक्षा की लेकिन राज़ा ने तलाकनामे पर अपने दस्तखत किए और इस रिश्ते को यही खत्म किया।

कात्यायनी एवं कार्तिकेय को दो बच्चे अर्जुन और ईशान थे,और उन्हें शिहुल विला में रहते बीस साल हो गए थे। उनका बेटा अर्जुन मेडिकल का छात्र था। कात्या विरासत में मिले अपने पारंपरिक त्योहारों को अपने बच्चों के साथ मनाने का प्रयास करती। उसने अपने मानसिक रूप से कमजोर देवर ओंकार का पुत्र की तरह लालन-

पालन कर उसकी शादी करवाई। और उसका एक पुत्र टिपू, कात्या के बेटे अर्जुन के साथ ही हंसते-खेलते बड़ा होता है। लल्ली और केशवनाथ जो अपने बेटे नंदन के पास विदेश गए हुए थे। वह अक्सर तीन महीने में वहां रहकर वापस आ जाते थे। लल्ली और केशवनाथ इस विदेशी दुनिया की तकनीक से प्रभावित तो पहले से ही हो चुके थे। वे दोनों वहाँ की रेश्म-जैसी सड़कों एवं हरियाली के बीच रंगीन फूलों की कतारों को देख अपने देश के गड्ढों से भरी सड़कों एवं झाड़ियों से उनकी तुलना करते है। वे वहाँ की बड़ी - बड़ी गगनचुंबी इमारत को देख आश्चर्यित होते। उस विदेशी माहौल को देख उन्हें इस बात का तो पता चल गया था कि यहां कोई किसी के बीच हस्तक्षेप नहीं करता। जब वे पहली बार अमेरिका गए थे, तब चिंटू-पिंकी अपने दादा-दादी के साथ चिपके रहते और लल्ली-केशव भी उन्हें प्यार से विभिन्न कहानियाँ सुनाते परंतु अब बच्चे बड़े हो गए और अपनी-अपनी दुनिया में व्यस्त हो गए। लल्ली-केशव भी बच्चों की ज़िंदगी में अपनी दखलंदाजी नहीं करते। आधुनिकरण की ओर बढ़ती हुई युवा पीढ़ी भी दिखाई देती है, जैसे बच्चे पहले तो अपनी नाना - नानी लल्ली और केशव से कहानी-कथाएँ सुनते थे, वहीं वे अब टी.वी. वीडियो के खेल में मग्न हो गए। नंदन को कई बार ये एहसास होता कि अपने देश को छोड़ विदेश में रहने के फैसले को पिता केशव ने माफ नहीं किया। प्रेम के घर लौट आने से वह और भी अपराध-बोध महसूस करने लगा। प्रायः पिता-पुत्र बैठकर राजनीति के मुद्दे को लेकर बातें करते और अलग-अलग कई तर्क भी निकालते। लल्ली और केशवनाथ को नंदन अपने पास वहीं रहने के लिए कहता है, परंतु वह मना कर हिंदुस्तान के लिए निकल जाते है।

शेख साहब की मृत्यु के बाद लोगों के जुबान पर उनके किए संघर्षों की चर्चा रही। केशवनाथ महसूस करता है कि अब रिश्ते भी बदल गए है क्योंकि जो प्रेम उनसे हर बाते पूछकर करता था, वही दंगाइयों के डर से जम्मू जाने का निर्णय कर लेता। उसने जब बुआ जी से कहा कि वह माँ और राज़ा को लेकर जम्मू जा रहा है तो केशवनाथ को कुछ बदला सा नजर आया। प्रेम ने राज़ा को न पूछते हुए उसका

तबादला करवा दिया। 2 दिसंबर, 1988 को प्रेम, राज़ा, विजया और कमला चले गए पर केशवनाथ को खालीपन महसूस हुआ। कात्या अपनी माँ लल्ली के जीवन भर निभाए नियम, धर्म जीते जी नहीं छोड़ेगी इस व्यवहार के बारे में पता होते हुए भी माँ से अपने साथ रहने की जिद् करने पर लल्ली मना कर देती है। केशवनाथ अब अधिक समय टी.वी. अखबारों में डूबे रहते, जिसमे दिल दहलाने वाली खबरें रहतीं और दिन कैसे बीतता पता ही नहीं चल पाता। उदास दिन, डरावनी रातें, शोर, आज़ादी के नारे, बाहर हर जगह आतंकवाद फैला हुआ आदि।

प्रदेश में सभी जगह हिजबुलमुजाहीदिन छा गए थे। अल्लाह टाइगर्स, जिया टाइगर्स, हिजवे उल्ला यानी आतंक का साम्राज्य, अलगाववाद का ज़हर वादी में पूरी तरह फैल रहा था। सोत्रामाली के बेटे गुले-सुले जवान होकर पाकिस्तान से ट्रेंड मिलिटेंट बनकर हथियार लेकर आए थे। उनके दिमाग में यह बात घर कर गई थी कि उन्हें हिंदुस्तान के हिमायती, आज़ादी और पाकिस्तान के दुश्मन के विरुद्ध लड़ना है। हर जगह आतंक का माहौल हो गया था। एक दिन जब हब्बाक दल में दिन-दहाड़े अजयवली को गोली मारी, तो अगले दिन ही कात्या ने अपने माता-पिता को अपनी कार से जम्मू भेज दिया।

लल्ली को लगता कि जम्मू पहले जैसा अब नहीं रहा। वहा सबकुछ बदल गया किंतु एक ही चीज़ जो आज भी नहीं बदली, वह है मन को सुकून देने वाली त्रिकुट पर्वत की चोटियां, जहाँ माँ वैष्णो देवी का स्थान है, जो पहले भी था और अब भी है। नानी की असमंजसता का दुलारी की बेटी रिद्धि निवारण करते हुए कहती है कि **“शहर तो वही है नानी। तीन हज़ार साल पहले जिसे राजा जंवूलोचन ने बसाया था। डुग्गरों का शहर।”30** महिला कॉलेज में इतिहास पढ़ाने वाली और वक्तों को खोदने का शौक पालने वाली रिद्धि नाना से इस विषय में बहुत बातें करतीं।

लल्ली जम्मू के बदलाव को देख कोई शिकायत तो नहीं करती, पर जम्मू का पुराना अतीत खोजती है। तभी लल्ली की पुरानी यादें ताजा हो जाती हैं। बटों की घुमावदार

गलियों से गुज़रते, हलवाइयों के दूध से भरे कड़ाहे खौलते और दबारों-बल्लों की सोंधी महक नथुनों में घुसकर मुँह में पानी लाती। पहले के शिव मंदिर और रघुनाथ मंदिर के मेले आदि सभी लुप्त हो गए। केशवनाथ करवटें बदलते रहते। दूसरी तरफ केशवनाथ भी निराश थे कि आजकल क्या-क्या देखना पड़ रहा है। वे जानते थे सभी को अपने कर्म का फल भुगतना पड़ता है। परंतु अल्पसंख्यकों के पूरे वर्ग ने ऐसा क्या कर्म किया था कि उन्होंने मुट्ठीभर धरती भी खो दी। केशवनाथ कात्या से रोज़ फोन पर वादी और वितस्ता के हाल जानते रहते तथा अखबारों में व्यस्त रहते। और प्रेम भी नई - नई बाते बताता रहता। उसने यह खबर सुनाई कि मुक्ति मुहम्मद की बेटी डॉक्टर रूबय्या को दिन-दहाड़े अगवा किया, पर रूबय्या को छुड़ा लिया गया और उसके छूटने पर मिलिटेंट ने खुशियाँ मनाई।19 जनवरी,1990 को जगमोहन ने एक बार फिर से गवर्नर का पद सँभाला, पर फारूख साहब ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया। जगमोहन के आते ही हालात अधिक भड़क गए। उसके बाद कई घटनाएँ एक साथ घटीं। केशवनाथ अखबारों के सभी समाचार पढ़ चिंतित हो जाते।

13 फरवरी को दूरदर्शन के डायरेक्टर और केशवनाथ के प्रिय विधार्थी लसकौल की हत्या कर दी गई। इस खबर को सुन केशवनाथ विचलित हो गए। सन् 1990 ई. के वर्ष में ट्रकों, बसों, मैटाडोरों में दहशत से खौफ खाए पंडित, सहमे-सिकुड़े बच्चे-वीबियों हाथ आए बक्सों के साथ, सिर झुकाए, दुबके बैठे थे। वर्षों से कमाई विरासत, अपना घर, नाम, यादें सभी कुछ एकदम पीछे रह गया था। वे दोषी थे, क्योंकि जिहादियों के **"घर छोड़ कहीं भी दफा हो जाओ"31** इस हुकुम के बाद भी वही रहने का घोर अपराध किया था। कुछ पंडितों शकीर को जिहादियों ने आरी से बीचोबीच काटकर उनकी लाशें पेड़ पर टाँग दी थीं। वह लोगों में मन में एक भय की भावना पैदा करना चाहते थे कि अगर हुकुम देने के बाद भी वे वादी में रहे तो उनकी भी यहीं परिस्थिति होगी। इन निष्कासितों को जम्मू शहर में आश्रय मिला। वहा के मंदिर, धर्मशालाएँ, सराय आदि शरणार्थियों से भरने लगीं। कई शरणार्थी सेवा-समितियाँ युद्ध स्तर पर विस्थापितों की सेवा में लग गईं। जिन लोगों के पास सफर

की गुंजाइश थी, वह अपनी जान बचाने के लिए चंडीगढ़, देहरादून, दिल्ली इत्यादि राज्यों में गए। लेकिन हालात सभी जगह बेहतर नहीं थे। केशवनाथ, प्रेम, विजया, रिद्धी, लल्ली इत्यादि कश्मीर और उसकी समस्याओं पर बातचीत करते रहते। तभी एक दिन सुबह श्रीनगर से नीलम ने खबर दी कि कात्या और कार्तिकेय को मिलिटेंटों ने अगवा कर लिया। यह डरावनी खबर सुन सभी के चेहरे पीले पड़ गए। कात्या के अगवा होने की खबर प्रेम भोभा जी (केशवनाथ) को बताने गया तो वे इस संसार को छोड़कर जा चुके थे। कात्या को अगवा कर एक कोठी में रखा गया था। उसे कल दो स्त्रियों ने दूरदर्शिता का परिचय देते हुए नकली आँसू बहाकर उसे साथ ले जाने के लिए राजी किया था। नीलम और कार्तिकेय के मना करने के बावजूद भी उसने यह कदम उठाया था। और कात्या के जोर देने पर कार्तिकेय भी स्वयं उसके साथ आता है। तब उन्हें बीच रास्ते में अगवा कर एक गुप्त स्थान पर लाया जाता है। अगवा करने का कारण था कि जिस गुप्त स्थान पर इन्हें ले जाया गया वहा मिलिटेंटों के जख्मी आदमी थे , जिनके इलाज के लिए उन्हें यहाँ लाया गया था। अपने इस गलती पर कात्या पछतावा करती है। दस दिनों बाद कात्या और कार्तिकेय को आतंकियों ने रिहा कर दिया और वे दोनों बी.एस्.एफ्. की मदद से वह घर पहुंचे।

सन् 1999 ई. का साल भी पूरा हो गया। जो अच्छे-बुरे बदलावों, सांप्रदायिक उन्मादों, आज़ादी की छटपटाहटों, गढ़ो - मठों के टूटने, सफलता - असफलताओं, कड़वे - मीठे प्रसंगों का एक और दशक बीत गया। स्कूल के हेडमास्टर पद से पांच साल रिटायर हो गए निरंजन तकिये की टेक लगा अपनी पोतियों को कहानियाँ सुनाते। कबाइली हमलों से अपनी जान बचाकर जब निरंजन ताता साहेब के घर पहुँचा, तब भी कात्या, प्रेम, नंदन, राज़ा आदि को सच्ची-झूठी नई-पुरानी कहानियाँ सुनाकर बड़ों-बच्चों से घिरा रहता था। निरंजन कहता कि **“कहानी वक़्त कटी का जरिया ही नहीं होती, जिंदगी को समझने का नज़रिया भी देती है।”31**

नाथ जी की बेटी नीलम डॉक्टर कात्यायिनी के साथ शिहुल विला में रहती है और उसकी शादी न होने के कारण अस्पताल में मरीज़ों को अपना पूरा समय देती है। कात्या कंप्यूटर में ई-मेल चेक करती है, तब उसे खुशखबरी मिलती है कि वह और कार्तिकेय दादा-दादी बननेवाले हैं। वहीं दूसरे न्यू जर्सी से भेजे नंदन के मैसेज से पता चला कि लल्ली की तबीयत ठीक नहीं है। तभी अचानक दरवाजे पर कोई आता है। देखती है तो गुलाम रसूल एक इमरजेंसी केस के सूचनार्थ आया था। कात्या उसे डॉक्टर किरण और डॉक्टर शमीम को ख़बर करने की हिदायत देते हुए, ऑपरेशन की तैयारी करने को कहती है। यह कहकर कात्यायनी इमरजेंसी वार्ड की तरफ चली जाती है और काफी मुश्किलो के बाद ऑपरेशन सफल होता है।

रात के बारह बज रहे होते हैं, बारह बजते ही सभी लोग नया साल, नई सफलता के लिए एक-दूसरे को मुबारकबाद देते हैं। तभी कॉरिडोर से रोने की नन्ही आवाजें आती हैं जो अधिक तेज होती जाती हैं। **'ओ-गॉड पिद्दी-सी जान और इतनी ज़बर चीख'32** कहकर नीलम हँसती है तथा कात्या सुनकर मुस्कराती है। वहां उपस्थित सभी इस भयमुक्त आवाज़ को सुनते हैं। इस मुक्त आवाज की कोख से नई सदी का जन्म हो रहा है। कुर्सी से पीठ टिका कात्या को आँखें बंद करते ही रोशनी के शहतीर बनकर झीलों, झरनों और बर्फ ढ़के पर्वतों को फलांगती हुई आवाजे दूर तक फैलती है। हजारों-लाखों की तादाद् में लोग बाँहें फैलाए उस आवाज़ की दिशा में मुड़ने लगते हैं। कात्या को ऐसा एहसास होता कि लाठी के सहारे एक नब्बे साल की वृद्धा उसकी ओर बढ़ रही है। जिससे वह चौक जाती हैं। वह उस वृद्धा को पहचान तो नहीं पाती पर उसे ऐसे लगता कि वह शायद उसकी माँ लल्ली है। शांति, अमन, चैन,भाईचारा, पारिवारिकता, सामाजिकता, राष्ट्रीयता इत्यादि तथा एक दिन वादी में सबकुछ ठीक हो जाएगा, इसकी उम्मीद कात्या हो है।

लेखिका ने सतीसर इस कथा को अधिक सरल शब्दों में व्यक्त किया है। स्वर्ग कश्मीर के बारे आम लोगों के दृष्टिकोण में बदलाव लाने और कश्मीर की आंतरिक

समस्याओं से परिचित कराने के लिए यह एक श्रेष्ठतम उपन्यास है। निष्कासित किए गए लोगों के दर्द इस उपन्यास में लेखिका ने बखुबी बया किया गया है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्याय में चंद्रकांता के 'कथा सतीसर' उपन्यास की समीक्षा से स्पष्ट होता है कि आज भी कई व्यक्ती है जो कात्या की तरह उम्मीद लगाए बैठे हैं। भले ही वह लेखिका के जैसे अपनी जन्मभूमि कश्मीर से अलग हो गए हो, परंतु आज भी वह आस लगाए हैं कि सभी एकसाथ मिल जुलकर रहेंगे। समय के साथ किस तरह कश्मीर में परिवर्तन आए और आज कश्मीर रक्त स्थान बनने के कारणों को इस उपन्यास में लेखिका ने प्रस्तुत किया है।

संदर्भ

1.चंद्रकांता, ऐलान गली जिन्दा है, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं 1984, पृष्ठ-संख्या -53

2. वहीं, पृष्ठ- संख्या- 76

3. वहीं,पृष्ठ- संख्या-132

4.वहीं,पृष्ठ- संख्या-133

5.वहीं,पृष्ठ- संख्या-217

6.वहीं, पृष्ठ- संख्या-220

7.वहीं,पृष्ठ- संख्या-220

8.चंद्रकांता, कथा सतीसर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं 2001,पृष्ठ- संख्या-13

9.वहीं,पृष्ठ- संख्या-15

10.वहीं,पृष्ठ- संख्या-15

11.वहीं,पृष्ठ- संख्या-19

12.वहीं, पृष्ठ- संख्या-22

13.वहीं, पृष्ठ- संख्या-25

14.वहीं, पृष्ठ- संख्या-25

15.वहीं, पृष्ठ- संख्या-32

16.वहीं, पृष्ठ- संख्या-50

17.वहीं, पृष्ठ- संख्या-58

18.वहीं, पृष्ठ- संख्या-68

19.वहीं, पृष्ठ- संख्या-87

20.वहीं, पृष्ठ- संख्या-98

21.वहीं, पृष्ठ- संख्या-100

22.वहीं, पृष्ठ- संख्या-102

23.वहीं, पृष्ठ- संख्या-122-123

24.वहीं, पृष्ठ- संख्या-146

25.वहीं, पृष्ठ- संख्या-147

26.वहीं, पृष्ठ- संख्या-149

27.वहीं, पृष्ठ- संख्या-175

28.वहीं, पृष्ठ- संख्या-155

29.वहीं, पृष्ठ- संख्या-177

30.वहीं, पृष्ठ- संख्या-233

31.वहीं, पृष्ठ- संख्या-412

32.वहीं, पृष्ठ- संख्या-497

33.वहीं, पृष्ठ- संख्या-511

34.वहीं, पृष्ठ- संख्या-72

चतुर्थ अध्याय

चंद्रकांता के उपन्यासों में कश्मीर: विश्लेषण

चंद्रकांता के उपन्यासों में कश्मीर: विश्लेषण

व्यक्तियों के समूह से एक समाज का निर्माण होता है। कोई भी व्यक्ति समाज से दूर रहकर नहीं जी सकता। समाज में छोटी-बड़ी घटनाओं का असर समाज में रह रहे हर व्यक्ति पर प्रत्यक्ष - अप्रत्यक्ष रूप से होता है। इसलिए कहा जाता है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होता है'। समाज में अनेक घटनाएं घटती रहती है, और उन्हीं घटनाओं को साहित्य के माध्यम से सभी के सामने लाने का प्रयास एक साहित्यकार करता है। उसी तरह चंद्रकांता जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से कई सामाजिक समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया है।

कश्मीरियों का निष्कासन

1990 के आसपास कश्मीरी निष्कासन का प्रारंभ हुआ। सदियों से कश्मीर में रह रहे जनता को वहां से सब छोड़कर जाना पड़ा। कश्मीर से निष्कासित किए गए हिंदू परिवारों की भयावह त्रासदी का चित्रण कथा सतीसर उपन्यास में हुआ है।

उदा - **"यों निष्कासन की शुरूआत तो पहले ही हो चुकी थी, पर इसी वर्ष बनिहाल के घुमावदार पहाड़ी रास्ते ट्रकों-बसों के उदास कारवाँ से अट गए थे । इन ट्रकों-वसों-मेटाडोरों में दहशत भरे पंडित, सहमे सिकुड़े बच्चों-बीवियों, जवान बेटियों और जल्दी में हाथ आए वक्सों, वुगचों समेत सिर झुकाए दुबके बैठे थे । उम्रों के घरोदे, विरासतें, नाम और साथ चली हवाएँ, पीछे छूट रही थीं।"14**

'कथा सतीसर' उपन्यास में लेखिका ने कश्मीरियों के निष्कासन की त्रासदी को प्रतीकात्मक रूप से दर्शाया है। इसमें पाकिस्तान का तो हाथ था ही साथ में कई देशी राजनेताओं ने भी उनका साथ दिया। उदा - **"मुना है हमलावर आफरी और मसूद जाति के खूंखार कवाइली हैं। मन में ज़रा भी दया-मया नहीं । चुन-चुनकर हिन्दुओं और सिखों को कत्ल कर दिया। दीनानाथ आँखों देखी मुना रहे थे । सब**

पाकिस्तान की कारस्तानी है। जैमा पढ़ा-लिखाकर भेजा है वैसा ही तो करेंगें । साथ में कुछ देशी विभीषण भी जुड़ गए।"20

आतंकवाद

आज आतंकवाद देश तथा पूरी दुनिया की एक सबसे बड़ी समस्या बन गई है। कहा जाता है कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता। आतंक फैलाते वक्त लोगों की परवाह नहीं की जाती है। समाज में पूरा हंडकप मचाकर रख दिया जाता है। लोगों को मार दिया जाता है। आज आतंकवाद की मुट्ठी में पूरी दुनिया आ चुकी है। सही समय पर इनको रोका नहीं गया तो ये आतंकी पूरी दुनिया पर काबू पा सकते हैं।

'कथा सतीसर' उपन्यास में चंद्रकांता जी ने आतंकवाद की समस्या को उजागर किया है। उदा - **"जो मज़हबी जुनून उभारने की साजिशें हो रही हैं, उसमें अँगरेज़ों की नीयतें तो थी ही थीं, कई बाहरी ताकतें भी शामिल हो गई थीं। नतीजन बहकावों में आकर दंगे हो गए ।...उम्रों की मुहब्बतों पर ख़ाक पड़ गई। भाई-भाई एक-दूसरे से नज़रें चुराने लगे।"15**

हिंदू-मुसलमानों में दरार

कश्मीर में हिंदू - मुस्लिम दोनों में आपसी प्रेम तथा एक दूसरे के प्रति आदर, सम्मान था। परंतु अंग्रेजों ने अपने शासनकाल में हिंदू - मुस्लिम रिश्ते में फूट डाली कि इनके आपसी व्यवहार में वैमनस्य बढ़ता चला गया। 15 अगस्त 1947 को आजादी मिलने के साथ ही भारत -पाकिस्तान बंटवारा हो गया। इस बंटवारे में लोग इधर से उधर भागने लगे। हत्याएं, लूट, आगजनी इत्यादि भयानक घटनाएं घटी।

उदा - **“अमृतसर-लाहौर से लोगों से पटी रेलगाड़ियाँ दिल्ली आ रही हैं और दिल्ली से कटी-पिटी लाशें जवाब में पार्सल जा रही हैं... ठट्ठ के टूटठ लोग पोटली-बुगचे उठाए रातोरात घर-बार छोड़कर भाग निकले हैं। हे राम ! ये कैसी आज़ादी मिली।”16**

25-26 अक्टूबर 1947 को कश्मीर की जनता के लिए सबसे भयानक रात थी। क्योंकि यह आदेश दिया गया था कि दूसरे दिन तक कबाइली शहर में पहुंचेंगे। सभी लोग चिंता में अपनी सुरक्षा के लिए चाकू - छुरियां, बल्लम, तलवार आदि हथियार लेकर तैयार थे। उस समय की भयानक परिस्थिति बया हुई है।

उदा- **“आधी रात को अचानक अप्रत्याशित भँवर में फँस गया था शहर । दाएँ-बाएँ इंच भर हिलने की भी गुंजाइश नहीं। पहाड़ों की गोद में सहमी-दुबकी वादी महाकाल के भय से अंधी खोह में साँस रोके बैठी थी।”17**

भ्रष्ट राजनेता

देश को अपने इशारों पर चलानेवाले राजनेता गद्दी पर बैठते ही भ्रष्ट नीति का प्रयोग करते हैं। अपने फायदे के लिए जनता का दुरुपयोग करते हैं। राजनीति के कारण लोगों के जीवन में बदलाव दिखाई देता है।

‘ऐलान गली जिन्दा है’ उपन्यास में कबाइली हमले का जिक्र है। अगर राजनेता अपने प्रदेश को संभालने में सक्षम होता तो यह सब होता ही नहीं। इस हमले से कई लोगों के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। उदा - **“भई, सही ढंग से सोचो तो ऐसी बात अब उठनी नहीं चाहिए। क्योंकि हमने कबाइली हमले के वक्त ही भारत के साथ ‘एक्सेशन’ किया था।” दयाराम मास्टरजी वादी का इतिहास खोलकर दुहराते। “छब्बीस अक्तूबर उन्नीस सौ सैंतालीस का दिन था वो।”**

“वह वक्त ही बड़ा खराब था, नहीं तो महाराजा बहादुर, जिसने हमेशा अपनी प्रजा की सुख-सुविधा का ध्यान रखा, प्रदेश छोड़कर रातों-रात भाग जाते ?”18

मुश्किल समय में लोगों की मदद करने के बजाय अगर राजनेता ही इससे पलायन करे तो जनता किससे उम्मीद करेगी।

राजनेता एक बार गद्दी पर बैठते ही जनता का सुख - दुःख भूल जाते हैं। तथा स्वार्थी बनकर सिर्फ अपने फायदे के बारे में ही विचार करते हैं। नेतागण भाषणबाजी में लगे रहते हैं और एक दूसरे पर केवल आरोप लगाने का काम करते हैं। इन नेताओं के भाषणों को सुनकर 'कथा सतीसर' उपन्यास का पात्र नंदन अपने पिता से कहता है कि **-"अपने प्रदेश को देखता हूँ तो महाराजा हरीसिंह से लेकर शेख साहब तक गद्दी के लिए होड़ ही नज़र आती है। इसी सत्ता के मोह ने दोस्तों को दुश्मन बनाया। एक ने दूसरे पर आरोप लगाए। अपने को सही सिद्ध करने के लिए दूसरे को कटघरे में खड़ा कर दिया। सभी तिकड़में सत्ता के लिए ही तो है।"19**

कश्मीर राज्य की स्थापना

'कथा सतीसर' उपन्यास में जब कश्मीर प्रदेश में लोक-राज्य स्थापित हुआ तब वहां की कश्मीरी जनता बहुत खुश हुई। उनसे बड़े-बड़े वादे किए गए। केंद्र सरकार से सहायता भी दी गई, लेकिन भ्रष्ट नेताओं ने और बिचौलियों ने उसे जनता तक पहुंचने नहीं दिया। उपन्यास में इस दर्द को बया किया है नंदन नाम के एक पात्र के जरिए - **"केंद्र ने जितना पैसा प्रदेश में उँड़ेला, उससे तो खुशहाली और समृद्धि चरम पर होनी थी, लेकिन अपने शहर में आज भी खुली गंधाती नालियाँ मल-मूत्र विष्ठा से भरी पॉश एरिया में भी मिलती हैं। लोगों ने नए बँगले बनाए, प्राइवेट ड्रेनेज भी, पर म्युनिसपैलिटी शहर का ड्रेनेज सिस्टम आज तक सुधार नहीं सकी।"21**

शिक्षा क्षेत्र पर नकारात्मक प्रभाव

राजनेताओं ने शिक्षा के क्षेत्र में अपनी दखलअंदाजी दी। इसी कारण कश्मीर समाज में शिक्षा के क्षेत्र पर अधिक नकारात्मक प्रभाव दिखाई देता है। इस यथार्थ को 'कथा सतीसर' उपन्यास के पात्र शिव और उनके ताता के संवादों से स्पष्ट होता है। जैसे **-"अब हमारे बच्चों को देश-विदेश में नौकरियाँ ढूँढ़नी होंगी शिव ! मादिक साहव ने भी 70/30 प्रतिशत में मुसलमान-हिन्दू को वाँट दिया है। अव योग्यता नहीं, कोटे के मुताविक नौकरियाँ या यूनिवर्सिटी में सीटें मिलेंगी। विजनेस वगैरह में भी हमारे लड़कों को जाना होगा । वक्त की माँग है।"22**

एक दूसरे के धर्म के प्रति दूजाभाव

धर्म के नाम पर भी अनेक समस्याएं उत्पन्न होती है। अपने अपने धर्म को श्रेष्ठ मानकर दूसरे धर्म के व्यक्ति के प्रति घृणा का भाव रखते हैं। धर्म, जाती, वर्ग आदि को उच्च मानकर इंसानियत के धर्म को आज इंसान भूलते जा रहे हैं।

'ऐलान गली जिन्दा है' उपन्यास में रत्नी के पति की जब टाइफॉड से मृत्यु हो गई थी तब मुहल्ले का एक भी व्यक्ति डर के कारण उसके पति की लाश उठाने तक नहीं आता।

उदा - **"पर यह स्त्री, जो तब तक घूंघट में ढकी- छिपी छुई-मुई-सी, कभी-कभार नजर आती थी, अचानक साक्षात चण्डी बनकर मुहल्ले के सीने पर बैठ गयी । मुहल्लेवाले दोषी थे,पड़ोसियों का धर्म उन्होंने नहीं निभाया था पर मौत के डर के आगे उस बार धर्म कमजोर पड़ गया था।"23**

उसी रत्नी के बारे में अरुंधती के विचार भी कुछ अलग ही है। उसका कहना है कि रत्नी रात गए मर्दो को अपने घर बुलाती है। ऐसी चरित्रहीन औरतों को उपवास आदि करने से धर्म का अनाधार होता है ऐसा अरुंधती का मानना था।

उदा - **"तभी तो क्या," अरुन्धती इस प्रसंग में रस न ले पाती, उसका स्वभाव ही अपने काम-से-काम रखने का है। फिर धर्म की हानि होते देख वह चण्डी बन जाती है, "ऐसी-ऐसी कुलच्छनियाँ उपवास रखेंगी तो भला कैसे किसी का श्रद्धा-विश्वास रहेगा धर्म-कर्म में ?"24** धर्म का अनाधार होता है ऐसा अरुंधती का मानना था।

परिवार का विघटन

सामाजिक समस्याएं कई सारी है। समाज में कई सारे परिवार होते हैं - सयुंक्त परिवार या एकल परिवार। परिवार में हर व्यक्ति एक दूसरे को अपना सुख दुख बाटता है और मुश्किल प्रसंग में एक दूसरे का साथ देता है। पहले ज्यादातर संयुक्त परिवार दिखाई देते थे। 'ऐलान' गली जिन्दा है उपन्यास में भी अधिकतर संयुक्त परिवारों का चित्रण है, जो कठिन समय में एक दूसरे के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होते दिखाई देते हैं।

लेकिन वक्त के साथ बदलाव दिखाई देते हैं। 'ऐलान गली जिन्दा है' उपन्यास के अरुंधती और संसारचंद अपने तीनों बेटों के साथ एक ही छत के नीचे रहनेवाले अब अलग दिखाई देते है। उदा- **"संसारचन्द के घर में भी क्या कम दिक है ? एक घर के तीन घर हो गये हैं। जवा अपनी पत्नी को लेकर अलग बस रहा है, मखना अपनी पत्नी और दो बच्चों को लेकर ! अरुन्धती का चौका-चूल्हा भी अलग हो गया है। बुढ़ापे में भी खट रही है। कभी-कभी मन की भड़ास निकालती हीमाल से कहती है, "बहन, भगवान का शुक्र है, मैंने तीन ही बेटे जने, वह कहा है न, सात पुत्रों की माँ कुत्तों का भोजन बन गयी थी । दुनिया की रीत ही है ऐसी, मैं बच्चों को क्या दोष दूँ ?"1**

बेटे तो अपनी अलग गृहस्थी बसाना चाहते हैं परंतु अपने बूढ़े माता - पिता को भूल जाते हैं। उनके विचारों को कोई महत्व नहीं दिया जाता है। माता - पिता बचपन से उसके बड़े होने तक अपने बच्चों की पसंद- नापसंद पूछते हैं। लेकिन वही बच्चे अपने

पैरो पर खड़े होते ही माता - पिता की पसंद भूल जाते हैं। जैसे 'ऐलान गली जिन्दा है' उपन्यास में चित्रित किया है। - "यों दोनों बेटों ने माता - पिता को समझाते हुए कहा था कि - **"यों दोनों बेटों ने माता-पिता को समझाते हुए कहा था कि वे छह-छह महीने दोनों बेटों के पास बारी-बारी से खाया करें। अलग पकाने की जरूरत नही। आखिर दोनों का बराबर फर्ज है। जब अवतारा ब्याह करेगा फिर चार-चार महीना कर देंगे।"2**

'ऐलान गली जिन्दा है' उपन्यास में रहनेवालो में अरुंधती एक अंधविश्वासी औरत थी। यह इस बात से साबित होती है - **"पर अरुन्धती सुच्ची औरत है। इसीलिए तन की पवित्रता के बचाव के लिए वह नदी-नालों की शरण अन्तिम सत्य की तरह स्वीकार करती है। कोई सचमुच पवित्र होगा तो सीताजी की तरह अग्नि की लपटों से भी बेदाग न निकल पायेगा?"3**

रूढ़ि-परंपराओं और अंधविश्वासों का खंडन

'ऐलान गली जिन्दा है' उपन्यास के अर्जुननाथ जैसे व्यक्ति भी ऐलान गली में रहते हैं जो रोटी का चौथाई भाग कुत्ते को खिलाकर स्वर्ग में जाने का अंधविश्वास पालते है।

उदा - **"अविश्वास की बात है भी । अर्जुननाथ का दयालुपन तो किसी ने आज तक देखा नहीं। हाँ, दीन-दुखियों की सेवा के नाम पर वे गली के खजियल कुत्ते को सुबह अपनी रोटी में से एक-चौथाई भाग तोड़कर खिलाते अवश्य है, इसमें सेवा भी हो जाती है और अर्जुननाथ के परम्परागत विश्वास के अनुसार परलोक भी सुधर जाता है। तभी न वे महीपसिंह, अमरनाथ, यहाँ तक कि मास्टरजी को भी कभी-कभार, इस-उस बात के बहाने, उस अभिमानी राजा की बात याद दिलाते हैं, जो परलोक सुधारने के लिए बहुत दान- पुष्य करते अहंकार का शिकार हो गया । मृत्यु के बाद, आशा के विपरीत स्वर्ग के बदले नरक के द्वारा पर पहुँचाया गया तो धर्मराज को**

अपने दान- पुष्यों का हवाला देते पूछा, 'महाराज ! मैंने जीवन में इतना दान-पुष्य किया, दिल खोलकर जरूरतमन्दों में अपनी तिजोरियाँ लुटाई, क्या कुछ भी मेरे काम न आया ?"4

रूढ़ी -परंपरा के नाम पर भी अंधविश्वास जैसी चीजें होती हैं इसका भी उदाहरण 'ऐलान गली जिन्दा है' उपन्यास में देखने मिलता है।

उदा - **"उनके घर में बहू का 'शिशुर' लगा था। पूरा मुहल्ला आमन्त्रित था। बेचारी लाजवन्ती नहीं आ सकी थी। उसकी सास को मरे अभी तीन महीना भी नहीं हुआ था, सो पचास जनियों के बीच दावत खाने कैसे आ जाती!"5** और

उदा - **"अब खड़े-खड़े पानी पीने से धरती का बोझ कैसे बढ़ता है? सोमवार को नया कपड़ा पहनने से क्या बुरा घटता है? छींक मारने, बिल्ली या औरत के रास्ता काटने से कौन-सी क़यामत आ सकती है ? यह तो अरुन्धती जैसी अखण्ड विश्वास रखनेवाली धर्मभीरु महिला भी नहीं जानती, सो बेटे-बहुओं को क्या खाक समझायेंगी? यों प्याज, लहसुन, लाल गाजर, टमाटर, अण्डे का सेवन वर्जित माननेवाले कट्टरपन्थी ब्राह्मण काल्पनिक-पौराणिक उक्तियों से अपनी बात को पुष्ट करते भी हैं लेकिन उन तर्कहीन उक्तियों से बच्चे बाब सहमत नहीं होते।"6** आज भी कई अरुंधतिया समाज में दिखाई देती हैं, जो संस्कार के नाम पर अंधविश्वास जैसे चीजों पर विश्वास करती है।

स्वास्थ्य समस्या

जीवन जीने के लिए स्वास्थ्य का ठीक - ठाक होना बहुत महत्वपूर्ण होता है। 'ऐलान गली जिन्दा है' उपन्यास में स्वास्थ्य समस्या भी नजर आती हैं। उदा - **"वे दिन याद करके गलीवालों की रूह कांप उठती है। संसारचंद कहते हैं कि पूरे मुहल्ले में**

टाइफॉड का जबरदस्त प्रकोप छा गया था। बीमारी का नाम सुनते ही लोग आंख-कान बंद कर घरों में दुबक जाते थे।"7

बच्चों के प्रति माता-पिता की मानसिकता

'ऐलान गली जिन्दा है' उपन्यास में चंद्रकांता जी ने माता -पिता की मानसिकता पर प्रकाश डाला है।अपने विचार बच्चों पर थोपने के भयानक परिणामों को स्पष्ट किया है। दयाराम मास्टर जी की पढ़ी - लिखी लड़की भरी जवानी में मुरझा गई थी और इसका कारण था कि वह एक कम पढ़े - लिखे लड़के से प्रेम करती थी। परंतु मां - पिता उसके प्रेम का अस्वीकार कर अन्य लड़के के साथ उसका विवाह करवा दिया। उदा - **"मास्टरजी हठ में न पड़ते तो शायद बेटी सुखी होती। क्या करे तकदीर के लेखे का कोई? बेटी एक कम पड़े लड़के के इश्क में पड़ गयी। मास्टरजी को गवारा होता? सोचा, किसी लायक लड़के से शादी करेंगे तो सबकुछ भूल-भालकर गुहन्थी में रच-बस जायेगी, जैसा अवसर लड़कियों के साथ होता है। मास्टरजी ने पहले ही अच्छे खानदान में बात पक्की भी की थी। जबान दी थी। पर लड़की लाख कोशिश करने पर भी इश्क के मर्ज से उबर न पायी।"8**

उदा - **"शाम तक बड़ी बेचैनी से मास्टरजी ने वक्त गुजारा, बार-बार कमरे की चहलकदमी करते रहे, बार-बार पहलू बदलते रहे। बार-बार सोचते रहे कि उनकी औलाद का दिमाग इतना कुन्द क्यों हो गया कि दूसरी बार वह इन्टर में रह गया ? 'हेरिडिटी' और 'एनविरानमेन्ट' पर हर कोण से सोचते उन्होंने बेटे की संगत को ही इस दुर्घटना के लिए उत्तरदायी ठहराया । शाम होते ही बेटे को कमरे में पकड़कर, खरी-खोटी बातों से खूब धुनाई की।"9**

लेखिका ने इन प्रसंगों से यह बताने का प्रयास किया है कि माता - पिता को अपनी बच्चों के इच्छा - आकांक्षाओं को नजर अंदाज नहीं करना चाहिए। बच्चे बड़े होने पर

उनपर हाथ उठाने और उनकी गलती पर उन्हें कोसने से से अच्छा है कि प्यार से समझाया जाए।

अनमेल विवाह

अनमेल विवाह समस्या भी 'ऐलान गली जिन्दा है' उपन्यास में दिखाई देती है।

उदा - **"लहूलुहान बेचारे द्वारिकानाथ भी थे । दस साल का रण्डापा भोगने के बाद जो उन्होंने सोलह वर्षीय कुँवारी शान्ता से विवाह किया, वह क्या शरीर-सुख भोगने के लिए किया था?"10**

बेटों, बहुओं के विरोध के बावजूद भी द्वारकानाथ ने सोलह वर्षीय एक लड़की से विवाह किया और उस लड़की ने उस विवाह को अच्छी तरह से निभाया भी।

'ऐलान गली जिन्दा है' उपन्यास में अधेड़ उम्र के अर्जुननाथ अर्जिन्विस कम उम्र की लड़की से विवाह करते हैं। कुछ समय बाद जब वह लड़की भाग जाती है तब रत्नी बताती है कि अर्जुननाथ जी उसे बहला- फुसलाकर लाए थे कि वह अपने बेटे से उसका विवाह करेंगे। पर जब वह उनके साथ संबंध बनाने को कहते हैं तो वह भाग जाती है।

उदा - **"रत्नी की गोद में सिर रखकर सुबकने लगी। और रत्नी के हर प्रश्न का एक ही उत्तर देती रही, "येss बुड्ढा है, ये बुड्ढा है मुझे धोखा दिया । उधर बोला, अपने लड़के के लिए चाहिए, इधर बोलता मेरे साथ सो जाओ। कैसे सोयेगा बुड्ढे के साथ ?"11**

दहेज प्रथा

आज समाज में सबसे बड़ी समस्या दहेज है। समाज तरक्की तो कर रहा है परंतु दहेज प्रथा पुराने जमाने से विराजमान है। दहेज़ प्रथा के बारे में कथा सतीसर

उपन्यास में दिया गया है। जिसके कारण माता - पिता को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

उदा - **"हमारे माता-पिता घर के खिड़की-दरवाजे भी निकालकर हमारे ससुरालवालों को भेज दें, तो भी उन्हें लगेगा कि देने में कंजूसी कर गए। काश राज़ा ! हमारे यहाँ भी बनियों की तरह दहेज प्रथा होती। कम-से-कम कोई निश्चित रकम तो तय हो पाती! यहाँ तो, दहेज प्रथा नहीं है, वेअंत उम्मीदें हैं।"12**

कथा सतीसर उपन्यास में शिक्षा नीति के में भ्रष्टाचार को उजागर किया गया है। शिक्षा नीति से किसको लाभ मिलता है इस ओर कश्मीर के राजनेता ध्यान नहीं देते और इसी कारण दूसरे शहरों में युवाओं को शर्मिंदगी महसूस करनी पड़ती है।

उदा - **"जगह-जगह जलील हो रहे हैं हमारे बच्चे ! प्रश्न पूछे जाते हैं, उधर किसी भारतीय को वसने की इजाजत नहीं हैं, तुम क्यों इधर वसना चाहते हो ? किस-किस का उत्तर दें हमारे लड़के ? अपने कर्णसिंह साहव को यह चीजें ध्यान में ही नहीं आती। उन्हें सिर्फ राज्य प्रशासन में दो चार वटों के होने से ही स्थिति का समाधान नज़र आता है, जबकि सब जानते हैं, अपने प्रदेश में शासन मुखिया के ही हाथ में है ! लाख लोकतंत्र के दावे होते रहें ।"13**

छुआछूत की समस्या

'ऐलान गली जिन्दा है' उपन्यास में अनवर मियां के जरिए छुआछूत जैसी घटनाओं भी उजागर किया गया है। 21वी सदी में रहकर भी कई लोगों की मानसिकता में आज भी बदलाव नहीं आया। आज भी छुआछूत जैसे प्रकरण दिखाई देते हैं।

उदा - **"वैसे मानते वे भी हैं अनवर मियाँ को। घर पर भायें तो उन्हें साग्रह चाय पिलाते हैं। पर उनका प्याला अलग से आले में रखा जाता है। खासू में वह चाय नहीं**

पी सकते । समावार से ऊँची धार बनाकर चाय प्याले में उँडेली जाती है। कहीं समावार प्याले से छू जाये तो अरुन्धती को पूरा समावार राख-मिट्टी से माँज-माँजकर फिर से चमकाना न पड़े ? अनवर मियाँ देखकर मुस्कराते हैं, बुरा नहीं मानते।"25

उसी तरह 'कथा सतीसर' उपन्यास में कात्या की सहेली तुलसी से कात्या को धर्म के नाम पर मिलने से रोका जाता है। जब वह इसका कारण पूछती है तब ताता उसे समझाते हैं कि - **"यूँ तो भगवान् ने सभी मनुष्य बराबर बनाए हैं, पर संस्कारों में हम बाहमण हो गए मुन्नी। कोई 600 साल पहले सुल्तान सिकंदर के शासन में कई ब्राहमणों को जबरन धर्म-परिवर्तन कराया गया। कुछ लोग मुसलमान बन गए, कुछ ने धर्म-परिवर्तन के साथ कुछ शर्तें रखीं, जो थी कि मुसलमान द्वारा पकाया खाना वे तभी खाएँगे, जब खाना रोज़ नई हांडी में पके और वे खुद हांडी से निकालकर भात खाएँगे। उनकी यह शर्त मान ली गई। सो वे मुसलमानों का पकाया भात अपने हाथों हांडी से निकालकर खाते और बाद में प्रायश्चित्त करते। ये अपने को हिंदू समझते थे, पर कट्टर बाहमणों ने इन्हें आधा मुसलमान मानकर हिंदू-धर्म में शामिल करने से इंकार कर दिया और इन्होंने पूरा मुसलमान बनने से इंकार कर दिया। सो आगे चलकर इनकी संतानें 'लेजि बटअ' (हांडी भट्ट) कहलाई।"26**

धर्म के नाम पर हिंसा

धर्म के नाम पर इंसान दूसरे इंसान का कत्ल करने में हिचकिचाता भी नहीं। उनके लिए इंसानियत के धर्म से भी ऊपर अपना हिंदू - मुस्लिम धर्म है। यही 'ऐलान गली जिन्दा है' उपन्यास से स्पष्ट होता है।

उदा - **"तहकीकात से मालूम पड़ा कि अगर दायीं तरफवाली कतार ढहायी जाये तो शिवजी का मन्दिर बीच में आ जाता है, अगर बायींवाली कतार ढहायी जाये तो मस्जिद को हटाना पड़ेगा । दोनों बातें गलीवाले, शरीर में प्राण रहते होने नहीं दे**

सकते थे । हिन्दू-मुस्लिम झगड़े-फिसाद की सम्भावना में कत्लेआम की पूरी गुंजाइश थी। आखिर दीन-धर्म की बात तो सर्वोपरि थी। उसकी रक्षा करने में प्राण जायें तो जायें, आखिर तो रहनेवाली चीज धर्म ही है न ? प्राणों का क्या ? एक दिन फूंक तो सरकनी ही है!"27

पाकिस्तान कश्मीर को इस्लाम बहुसंख्या धर्म के आधार पर अपने हिस्से में शामिल करना चाहता था। कश्मीर को इस्लाम धर्मी राज्य बनाने के लिए पाकिस्तान लगातार कबाइली भेजता रहा। उनके मन में हिंदुओं के लिए तिरस्कार भरा हुआ है। वह हिंदू और सिखों को मारते थे। पाकिस्तान के मकसद के बारे में 'कथा सतीसर' उपन्यास का पात्र प्रेम स्पष्ट करता है - **"तोड़फोड़ करनेवाले सीधे-सादे लोग नहीं हैं, यह सब जानते हैं। ये कटूट्टरपंथी हैं, जो हिंदू और हिंदुस्तान से नफरत करते हैं, अल-फतहवाले हों, जमात-ए-इस्लामी गुटवाले हों या कोई और फिरकापरस्त, उनका मकसद वादी से 'काफिरों' को हटाकर यहाँ इस्लामी स्टेट बनाना है। यह बात अब छिपी नहीं रही।"28**

आर्थिक मजबूरी

समाज में जीवन यापन करने के लिए पैसा एक महत्वपूर्ण चीज़ है। उसके बिना कोई भी इंसान जी नही सकता। अगर पैसे ही नहीं होंगे तो अपना पेट कैसे भरेंगे ? अपनी इच्छाएं कैसे पूरी करेंगे ? आजकल तो रिश्ते से भी ज्यादा पैसों को महत्व दिया जाता है।

जिसके पास पैसा नहीं होता है वह समाज में गरीब व्यक्ति कहलाया जाता है। और वही गरीब व्यक्ति अपनी गरीबी के कारण अपनी इच्छाओं को मारकर अनेक समस्याओं का सामना करते हुए जीने के लिए विवश हो जाता है। उसी प्रकार 'ऐलान गली जिन्दा है' उपन्यास में लक्ष्मणजू अपनी गरीबी के कारण अपनी बेटी शांता का एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति के साथ विवाह करने पर मजबूर हो जाते है।उदा -

"दीनानाथ ने कहा, "द्वारिका ने धर्म का काम किया। बेचारे लक्ष्मणजू निहायत फटेहाल, बेटी को कैसे ब्याहते?"29

उसी प्रकार 'कथा सतीसर' उपन्यास की कात्या की सहेली तुलसी का जब एक बूढ़े के साथ रिश्ता तय कर दिया जाता है, तब कात्या उसे इस शादी के लिए मना करने को कहती हैं। लेकिन तुलसी कार्य को कहती हैं कि वह बिना दहेज के उससे शादी कर रहा है, जबकि दूसरा कोई ऐसा नहीं करेगा। वह आगे कहती हैं इसका कारण उसकी गरीबी हैं। इसलिए उसके घरवालों को ऐसा करना पड़ रहा है।

बेरोजगारी की समस्या

आर्थिक परिस्थिति का एक और कारण है बेरोजगारी। आर्थिक रूप से सक्षम न होने के कारण कई बच्चे पढ़ पाते हैं तो कई नहीं। मध्यवर्गीय परिवार तो कर्जा लेकर या अन्य तरीके से बच्चों की पढ़ाई के लिए पैसा इकट्ठा कर उन्हें बहुत परिश्रम से पढ़ाते हैं। उन्हें रोजगार नहीं मिल पाता। और रोजगार मिलता भी है तो उन्हें अपना घर-परिवार सब छोड़कर जाना पड़ता है। जैसे 'ऐलान गली जिन्दा है' उपन्यास में अवतारे को अपनी गली छोड़कर बंबई जैसे महानगर में जाना पड़ा।

उदा - **"पढ़ाई पूरी करने के बाद अवतारा घर जरूर आया था। पर परिणाम निकलने के तुरन्त बाद नौकरी की तलाश में भटकता रहा। संसारचन्द बेटे को प्रति माह सत्तर-अस्सी रुपये भेजते लगभग कंगाल ही हो गये थे, सो पास होते ही उन्होंने बेटे को सलाह दी कि जब तक कोई अच्छी-सी नौकरी न मिले, कोई अस्थायी अध्यापकी, क्लर्की आदि, जो भी मिले, कर ले। एक तो काम कोई भी छोटा नहीं होता, दूसरे माता-पिता को भी कुछ सहारा हो जायेगा, क्योंकि उसे पढ़ाने में उनकी जेबें बिल्कुल खाली हो गयी हैं।"30**

उदा - **"डिग्रियाँ प्राप्त करने के बाद बेरोजगारी, अपनी जड़ों से उखड़कर देश-प्रदेशों में भटकना और हजारों अनचाहे प्रश्नों के उत्तर देना। इनके बीच गुजरते अपने बौनेपन के अहसास को जिया है।"31**

आर्थिक स्थिति के कारण अनेक व्यक्तियों को अपने पिताजी या परंपरा से चले आ रहे काम को संभालना पड़ता है, या फिर अर्थांजन के लिए कोई भी काम करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। इसी परिस्थिति का सामना करना पड़ता है 'कथा सतीसर' उपन्यास का पात्र रहमान जू को।

उदा - **"रहमान जू का अव्वा उन कमनसीनों में था जिसके लिए कुछ भी आसानी से मयस्सर नहीं होता, उसका अब्वा लार में खेती करता था कि एक माल ओलो-सैलाव से पूरी फसल उजाड़ दी। भात के लाले पड़ गए। वह टब्बर को लेकर मजूरी करने शहर चला आया।"32**

संदर्भ

1.चंद्रकांता, ऐलान गली जिन्दा है, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1984,पृष्ठ-संख्या- 55

2.चंद्रकांता, कथा सतीसर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं 2001,पृष्ठ-संख्या-151

3.वहीं,पृष्ठ-संख्या-207

4.वहीं,पृष्ठ-संख्या-454

5.वहीं,पृष्ठ-संख्या-485

6.चंद्रकांता, ऐलान गली जिन्दा है, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं 1984,पृष्ठ-संख्या-157-158

7.वहीं,पृष्ठ-संख्या-158

8.वहीं,पृष्ठ-संख्या-36

9.वही, पृष्ठ-संख्या-94

10.वहीं,पृष्ठ-संख्या-115

11.वहीं,पृष्ठ-संख्या-149-150

12.वहीं,पृष्ठ-संख्या-39

13.वहीं,पृष्ठ-संख्या-63

14.वहीं,पृष्ठ-संख्या-71

15.वहीं,पृष्ठ-संख्या-159

16.वहीं,पृष्ठ-संख्या-120

17.चंद्रकांता, कथा सतीसर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं 2001 पृष्ठ-संख्या-147

18.वहीं,पृष्ठ-संख्या-377

19.वहीं,पृष्ठ-संख्या-515

20.वहीं,पृष्ठ-संख्या-57

21.वहीं,पृष्ठ-संख्या-195

22.वहीं,पृष्ठ-संख्या-202

23.चंद्रकांता, ऐलान गली जिन्दा है, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं 1984,पृष्ठ-संख्या-40

24.वहीं,पृष्ठ-संख्या-51

25.वहीं,पृष्ठ-संख्या- 64-65

26.चंद्रकांता, कथा सतीसर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं 2001,पृष्ठ-संख्या-122-123

27.चंद्रकांता, ऐलान गली जिन्दा है, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं 1984,पृष्ठ-संख्या-133

28.चंद्रकांता, कथा सतीसर,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं 2001,पृष्ठ-संख्या-483

29.चंद्रकांता, ऐलान गली जिन्दा है,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं 1984,पृष्ठ-संख्या-160

30.वहीं,पृष्ठ-संख्या-144

31.वहीं,पृष्ठ-संख्या-196

32.चंद्रकांता, कथा सतीसर,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं 2001,पृष्ठ-संख्या-260

उपसंहार

उपसंहार

चंद्रकांता जी का जन्म धरती का स्वर्ग कहे जानेवाले कश्मीर में हुआ। उन्होंने अपना बचपन कश्मीर की सुंदर वादियों में बिताया। कश्मीर उनकी जन्मभूमि होने के कारण उनका विशेष लगाव है। कश्मीर के प्रति उनका यह लगाव एवं अपनी जन्मभूमि से कटे जाने का दर्द उनके उपन्यासों में दृष्टिगोचर होता है। चंद्रकांता जी के पति विशिन के काम के सिनसिले में चंद्रकांता जी को कई जगहों पर जाने का अवसर मिला। परंतु वहां लोगों की कश्मीर के प्रति विचारों को सुनकर चंद्रकांता जी ने उन्हीं आम लोगों को कश्मीर की सच्चाइयों से अवगत कराने के लिए उन्होंने 1986 में 'ऐलान गली जिन्दा है' और 'कथा सतीसर' उपन्यास लिखा है।

'ऐलान गली जिन्दा है' उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने प्रस्तुत किया है कि स्वर्ग कहे जाने वाले कश्मीर में अज्ञान, अभाव, आतंकवाद आदि व्याप्त है। स्वर्ग के पास नरक भी होता है इसका ऐलान गली एक सशक्त उदाहरण है। ऐलान गली में रहनेवाले लोग एक दूसरे से अपनेपन से व्यवहार करते हैं। धर्म अलग- अलग होते हुए भी किस तरह इस गली के लोग एक दूसरे के सुख- दुःख, त्योहारों आदि में शामिल होते है, इस विषय में यह गली विशिष्ट है। अपना जीवन जीने के लिए मनुष्य को अनेक परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। बदलते समय के साथ अपनी इच्छा न होते हुए भी अपने आपको बदलना पड़ता है, नहीं तो समाज स्वीकार नहीं करता। गली के अनेक पात्र के माध्यम से इसे अभिव्यक्त किया गया है।

कश्मीर को स्वर्ग तो हम कहते हैं परन्तु उसी स्वर्ग की असलियत नहीं जानना चाहते। कश्मीर में दरिद्रता, अज्ञान, अभाव , आंतकवाद आदि व्याप्त है, इसी सच्चाई से अवगत कराया है। अरुंधती, अर्जुननाथ जैसे अंधविश्वासी लोग भी हैं, जो हर अच्छे- बुरे कार्य में देवी- देवताओं के नाम पर अजीब व्यवहार करते हैं। अनमेल विवाह, बेरोजगारी, गरीबी जैसी अनेक समस्याएं आज भी प्रासंगिक हैं। बेरोजगारी की समस्या तो इतनी अधिक बड़ गई है कि आत्महत्या जैसे अनेक प्रकरण बड़ गए

हैं। युवा पीढ़ी शिक्षित होते हुए भी रोज़गार के लिए उन्हें अपना घर- परिवार छोड़कर महानगरों में भटकना पड़ता है।

चंद्रकांता का 'कथा सतीसर' उपन्यास कश्मीर के निष्कासित जनता के दर्द की अभिव्यक्ति है। लेखिका ने खुद इस दर्द को भोगा है और उसी का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। लल्ली, केशव आदि के माध्यम से अपने ही जन्मभूमि से बिना कोई गलती के निकाले जाने का दर्द क्या होता है और बाहर जाने के बाद सभी सुख सुविधाएं मिलने पर भी वे अपने घर जाने को तड़पन को व्यक्त किया है।

स्वर्ग कश्मीर को भारत के अन्य राज्यों से अलग नियम, और धारा 370 के अंतर्गत कश्मीर राज्य को विशेष श्रेणी का दर्जा दिया गया। और 5 अगस्त, 2019 को इस विशेष दर्जे को हटाने से सभी स्कीम्स जो कश्मीर प्रदेश में लागू नहीं होती थी, आज वह लागू हो गई है। राजनीति के कारण भी कश्मीरी जनता के जीवन में अनेक बदलाव आए। राजनेता गद्दी पर बैठते ही अपने फायदे के लिए जनता का दुरपयोग करते हैं। कभी तो हालत बदलेंगे इस उम्मीद पर जी रही जनता के हिस्से में निराशा ही आती हैं।

स्वत्रंता प्राप्ति के साथ हमने खुशहाल भारत का सपना देखा था परंतु उसके विपरीत हुआ। आगजनी, लूटमार, स्त्रियों का बलात्कार आदि चीज़े हो गई। पाकिस्तान ने सिर्फ धर्म के आधार पर कश्मीर को अपना बनाने के लिए कश्मीरी पंडितों को निष्कासित किया और वे ऐसा न करने पर उनकी हत्याएं कर दी गई। सुनने में जितना भयानक लगता है, उससे कई गुना अधिक भयानक उनके लिए होगा जिन्होंने इसे खुद महसूस किया हो। चंद्रकांता ने अपने उपन्यासों में कहावतों, मुहावरों, बिंबो आदि का प्रयोग किया है।

कश्मीर का नाम लेते ही सभी के सामने स्वर्ग कश्मीर का चित्रण प्रस्तुत होता है परंतु कश्मीर की वास्तविकता क्या है? और पृथ्वी के स्वर्ग कश्मीर में कौन-कौन सी समस्याएं हैं? उनके पीछे ज़िम्मेदार कौन है? ऐसे अनेक प्रश्नों का जवाब लेखिका

ने अपने उपन्यासों में दिया है और लोगों को कश्मीर की परिस्थिति से परिचित कराने का प्रयास किया है। अंतः कह सकते है कि चंद्रकांता समकालीन हिंदी महिला उपन्यासकारों में एक विशिष्ट स्थान रखती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

1.चंद्रकांता, ऐलान गली जिन्दा है, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं 1984

2.चंद्रकांता, कथा सतीसर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं2001

सहायक ग्रंथ

1.पाण्डेय कुमार अशोक, कश्मीरनामा,राजपाल एण्ड संज, सं. 2018

2. पी. एन.के बमजाई, कल्चरल एंड पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ कश्मीर, खंड 2, एम.डी. पब्लिकेशन, दिल्ली, सं1994

3. हुसैन मुजफ्फर,कश्मीर काल आणि आज चंद्रकला प्रकाशन, प्र.सं 1990

4. चव्हाण डॉ.जगदीश, चंद्रकांता का कथा साहित्य, विद्या प्रकाशन प्रथम संस्करण 2012 ई,

5.मुले डॉ.रेखा, कथाकार चन्द्रकान्ता, विकास प्रकाशन, कानपुर,प्र.सं 2005 ई

6.शर्मा डॉ. प्रभा, चंद्रकांता के उपन्यास वस्तु, शैली और शिल्प, निर्मल पब्लिकेशन्स् दिल्ली,सं 2017

7.चंद्रकांता, अर्थांतर, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं1981

8.चंद्रकांता, बाकी सब खैरियत है, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्र.सं 1983

9.चंद्रकांता, अंतिम साक्ष्य, समय प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं 1990

10.चंद्रकांता, यहां वितस्ता बहती है, वाणी प्रकाशक, प्र.सं1992

11.चंद्रकांता, अपने अपने कोणार्क, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं 1995

12. नवाज निदा, सिसकियां लेता स्वर्ग,अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र. सं 2015

13. मधुरेश, हिंदी कहानी का विकास, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज,2018

14.मुद्गल चित्रा , आवां, सामयिक प्रकाशन, संस्करण 2010

15.खेतान प्रभा, पीली आंधी, लोकभारती प्रकाशन,द्वितीय संस्करण 2002

16.खेतान प्रभा, छिन्नमस्ता, राजकमल प्रकाशन, प्र.सं1993

17. बऱ्हाटे , डॉ. जयश्री, उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में युग बोध, विद्या प्रकाशन, प्र.सं 2013

18.बाविस्कर डॉ. राजेंद्र, चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में नारी, रोली प्रकाशन, प्र.सं 2013

19.वेरेकर डॉ. शोभा, साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों का शिल्प विकास, पीयूष प्रकाशन, प्र.सं2001

20.पुष्पा मैत्रेयी, अल्मा कबूतरी, राजकमल प्रकाशन, प्र.सं 2000 21.प्रियंवदा उषा, अन्तर्वशी, वाणी प्रकाशन, प्र.सं 2004, द्वितीय संस्करण 2008

22.पुष्पा मैत्रेयी, झूला नट, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, प्र.सं1999

आलेख

1.चारी पी. आर और रिजवी असकरी हसन, मेकिंग बॉर्डर्स इरेलेवंत इन कश्मीर, यू.एस इंस्टीट्यूट ऑफ पीस (2008)

2. सिंह प्रदीप, नया इतिहास रचती मोदी और शाह की जोडी, दैनिक जागरण

3. भारतीय जनता पार्टी, केंद्रीय पुस्तकालय, 24 अगस्त 2019, दैनिक जागरण प्रकाशित

4. ललवानी पी. समीर और गैनर गिलियन, इंडियाज कश्मीर कोनंड्रम: बिफोर एंड आफ्टर द एब्रोगेशन ऑफ आर्टिकल 370, यू.एस इंस्टीट्यूट ऑफ पीस(2020)

वेबसाइट

1.https://Kukufm.Sng.link/Apksi/K6ae/Cbah

2.https://www.tvqhindi.com

3.https://m.bharatdiscovery.org

4.https://www.history.com

5.https://hi.quora.com

6.https://Shibenraina.blogspot.com

7.https://www.britannica.com

8.https://leverageedu.com

9.www.jetir.org

10.https://hindimedia.in/brief-history-of-kashmir

11.https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/an-old-kashmir-jammu-dilemma

पत्रिका

1.सिंह महीप, संचेतना पत्रिका, फरवरी 1998